पालिकोससंगहो

(अभिधानप्पदीपिका व एकक्खरकोस)

(प्रथम भाग)

सम्पादक

डॉ० भागचन्द्र जैन भास्कर

एम ए, साहित्याचार्य, Ph D (Ceylon)

अध्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग,

नागपुर विश्वविद्यालय

नागपुर

प्रकाशक

आलोक प्रकाशन

गांधी चौक, सदर, नागपुर

प्रकाशक
आलोक प्रकाशन
गाँधी चौक, सदर
नागपुर

प्रथम संस्करण
फरवरी, १९७४

मूल्य : ३० रुपया।

मुद्रक
शरद कुमार 'साधक'
मानव मंदिर मुद्रणालय,
के. ६६/४० नरहरपुरा,
वाराणसी

PALIKOSASANGAHO

A Collection of Pali Lexicographies)

Abhidhānappadīpikā and Ekakkharakosa)

PART-ONE

Editor

Dr BHAGCHANDRA JAIN BHASKER

M A , Acharya, Ph D (Ceylon

Head of the Department of Pali & Prakrit

Nagpur University

NAGPUR

ALOK PRAKASHAN

Gandhi Chowk Sadar

NAGPUR (India)

ALOK PRAKASHAN
Nagpur (India)

Pali Kosasangaho

Author—Dr Bhagchandra Jain

Price Rs 30 00

First Edition
March 1974

Manava Mandir Mudranalay
ARANASI

प्रस्तावना

शब्दकोश-परम्परा

साहित्य निर्माण के उपरान्त ही सम्बद्ध भाषा के कोश की रचना होती है। वैदिक साहित्य के परिज्ञान के लिए **निघण्टु** का सृजन किया गया। उससे वैदिक संहिताओं को समझने में कुछ सहायता मिली। उत्तरकाल मे निघण्टु की ही व्याख्या के रूप में यास्क ने **'निरुक्त'** लिखा। निघण्टु और निरुक्त की परम्परा ने उत्तरवर्ती आचार्यों को कोश के निर्माण मे पथ-दर्शन किया।

इसके बाद संस्कृत साहित्य में अनेक विद्वानों ने लौकिक कोशों की रचना की जिनसे नाम, अव्यय, लिंग आदि का ज्ञान कराया गया। भोगीन्द्र, कात्यायन, साहसाङ्क, वाचस्पति, व्याडि, विश्वरूप, मङ्गल, शुभाङ्क, वोपालित, भागुरि, हलायुध, अमरसिंह, धनञ्जय, हेमचन्द्र, महेश्वर, मेख, केशवस्वामी, मदिनीकर आदि विद्वान् संस्कृत कोशकारों में प्रमुख है।

प्राकृत कोश ग्रन्थों की रचना लगभग ग्यारहवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुई। उनमे धनपाल का **पाइय लच्छी नाममाला** आदिग्रन्थ कहा जा सकता है। हेमचन्द्र का **देशी नाममाला** अथवा **देशी शब्दसंग्रह** भी प्राकृत अथवा देश्य शब्दो का सुन्दर संग्रह है। प्राकृत भाषा मे निबद्ध कुछ छोटे-मोटे और भी कोश उपलब्ध होते हैं। ये सभी कोश संस्कृत कोशों की परम्परा मे अनुस्यूत हैं।

पालि कोशों का निर्माण भी संस्कृत कोश ग्रन्थों पर आधारित रहा है। **अभिधानप्पदीपिका** प्रथम पालि कोश है जिसके आधार पर उत्तरकाल मे और भी छोटे मोटे पालि कोशो का निर्माण हो सका।

१ अभिधानप्पदीपिका

१. अभिधानप्पदीपिका और उसके रचयिता मोग्गलान-थेर

अभिधानप्पदीपिका की रचना सिंहलवासी मोग्गलान थेर ने पराक्रमबाहु अथवा पराक्रमभुज प्रथम (११५३-११८६ ई०) के राज्यकाल में की। मोग्गलान थेर महाकस्सप थेर के साक्षात् शिष्य थे जो पोलन्नरुआ के वनवासी सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य थे। वे सरोगामसमूही महाजेतवन नामक बिहार मे अपनी साधना करते थे। पालि वैयाकरण मोग्गलान थेर से पृथक करने के लिए मोग्गलान थेर के नाम के पूर्व 'नव' शब्द जोड़ दिया गया है।

अभिधानप्पदीपिका का सर्वप्रथम उल्लेख सिंहल साहित्यकार गुरुलुगोमी ने अपनी पुस्तक **धर्म प्रदीपिकाव** में किया है। उनका समय पराक्रमबाहु द्वितीय (१३वी शती) है।[1] अत अभिधानप्पदीपिका के रचयिता मोग्गलान थेर का उपरितम काल १३वीं शती माना जा सकता है। मोग्गलान थेर ने स्वय ही अपने विषय में प्रशस्ति में इस प्रकार कहा है—

महाजेतवनाख्याम्हि विहारे साधुसम्मते।
सरोगामसमूहम्हि वसता सन्तवुत्तिना॥
सद्धम्मट्ठितिकामेन मोग्गल्लानेन धीमता।
थेरेन रचिता एसा अभिधानप्पदीपिका॥[2]

२ पालि कोशपरम्पराकाउद्भव और विकास

अभिधानप्पदीपिका पर कुछ टीकायें भी उपलब्ध हैं। सिंहली में लिखी **'निघण्डुसन्ने'** नामक टीका अभिधानप्पदीपिका की समकालीन है। एक और **'सम्वन्नन'** नामक टीका बर्मी भाषा मे मिलती है जिसे किसी बर्मी अधिकारी ने कित्तिसिंहसूर (१५वी शती) के शासनकाल मे रची थी। उसी का अनुवाद वर्मी भिक्षु ञानवर ने १८वीं शती मे किया।

अभिधानप्पदीपिका को पालिकोश के क्षेत्र मे प्रथम ग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त हुआ है। उसके पूर्व यदि हम पालि कोश के उद्भव की ओर विचार करे तो हमारी दृष्टि स्वभावत पालि त्रिपिटक की ओर चली जाती है। उसमें लगभग प्रत्येक पृष्ठ मे एसे स्थल उपलब्ध हो जाते है जहाँ प्राय समान अर्थ में अनेक शब्दो का प्रयोग कर दिया जाता है। चूँकि वहाँ उपदेश शैली मे वस्तु को प्रस्तुत किया गया है अत जिस विन्दु पर जोर देना आवश्यक हो जाता है वहीं इस शैली का प्रयोग हुआ है। शोधकर्ताओं के लिए यह बहुत अच्छा विषय है।

त्रिपिटक पालि कोश की भूमिका है। 'निघण्डु ति नाम निघण्डु रुक्खादीन वेवचनप्पकासक सत्थ' (मज्झिमनिकय, अट्ठकथा, भाग ३, पृ० ३६२) यह कथन पालि कोश परम्परा का दिग्दर्शक है। अगुत्तर निकाय विशेष रूप से इस पृष्ठभूमि मे दृष्टव्य है। उसमे दुक, तिक, चतुक आदि रूप से विषयों का विभाजन किया गया है। कहीं-कहीं तो ऐसा लगता है जैसे वह सही अर्थ में कोश का रूप हो। उदाहरणार्थ -

सिङ्गी सुवण्ण अथवापि कञ्चन,
य जातरूप हटक ति वुच्चति।

---

1. Godakumbura, C E Sinhalese literature, Colombo, 1955 P. 49–58.

२ अभिधानप्पदीपिका पृ० १७६

इसी प्रकार सयुत्तनिकाय के असखोत सयुत्त में प्रस्तुत किये गये निर्वाण के पर्यायार्थक शब्द तथा खुद्दकनिकाय के निद्देस के उद्धरण आदि भी दृष्टव्य हैं। अट्ठकथाओं तथा अभिधानप्पदीपिका में प्राय' आम्रेडित प्रयोग के सन्दर्भ में एक गाथा का उल्लेख किया जाता है जिससे पता चलता है कि ' ''यवाची शब्दों का प्रयोग कहाँ होता है

भये कोधे पससाय तुरिते कोतुहलच्छदे।
हासे सोके पसादे च करे आमेडित बुधो ॥[1]

इसी सन्दर्भ में दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, विनयपिटक, नेत्तिपकरण, पेटकोपदेस, सद्दनीति आदि ग्रन्थों का भी अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। यहाँ सर्वत्र पालि कोश परम्परा का रूप अन्वेषणीय है।

३. अभिधानप्पदीपिका और अमरकोश

अभिधानप्पदीपिका का प्रणयन करते समय लेखक के समक्ष सस्कृत कोशों में विशेष रूप से अमरकोश आदर्श के रूप मे निश्चित रूप से रहा होगा। आन्तरिक और बाह्य रूप को देखने पर तो यहाँ तक प्रतीत होता है कि अभिधानप्पदीपिका अमरकोश का सक्षिप्त रूप है। इन दोनों ग्रन्थों की अनुक्रमणिकाओं को देखने से भी यह स्पष्ट हो जाता है। अमरकोश की विषयानुक्रमणिका इस प्रकार है—

	प्रथम काण्ड (२७८॥ श्लोक सख्या)	
१	स्वर्गवर्ग	७१
२	व्योमवर्ग	१॥
३	दिग्वर्ग	३५
४	कालवर्ग	३१
५	धीवर्ग	१७
६	शब्दादिवर्ग	२५॥
७	नाटयवर्ग	३८
८	पातालभोगिवग	११
९	नरकवर्ग	३॥
१०	वारिवर्ग	४३
	द्वितीय काण्ड (७३३॥ श्लोक सख्या)	
१	भूमिवर्ग	१८
२	पुरवर्ग	२०
३	शैलवर्ग	८
४	वनौषधिवर्ग	१६६॥
५	सिहादिवर्ग	४३
६	मनुष्यवर्ग	१३९॥
७	ब्रह्मवर्ग	५७॥
८	क्षत्रियवर्ग	११९॥
९	वैश्यवर्ग	१११
१०	शूद्रवर्ग	४६॥
	तृतीय काण्ड (४८२ श्लोक सख्या)	
१	विशेष्यनिघ्नवर्ग	११२॥
२	सकीर्णवर्ग	४२॥
३	नानार्थवर्ग	२५७
४	अव्ययवर्ग	२३
५	लिङ्गादिसग्रहवर्ग	४६
	कुल श्लोक सख्या	१४९४

१ दीघनिकाय, अट्ठकथा, भाग १, पृ० २२८, अभिधानप्पदीपिका, १०६-६

अभिधानप्पदीपिका की विषयानुक्रमणिका इस प्रकार है—

उक्त दोनो ग्रन्थो की अनुक्रमणिकाओं को दखने से यह बात स्पष्ट है कि चूँकि अमरकोश के रचयिता अमरसिंह अभिधानप्पदीपिका के रचयिता मोग्गलान थेर से पूर्ववर्ती हैं अत' अभिधानप्पदीपिका ही अमरकोश से प्रभावित है। दोनों ग्रन्थ तीन काडों में विभाजित हैं। अमरकोश के प्रथम काडवर्ती पातालभोगिवर्ग को छोड़कर शेष वर्गों की सामग्री अभिधानप्पदीपिका के प्रथम काड में समाहित हो गयी है। द्वितीय और तृतीय काडों के वर्गों का विभाजन भी प्राय. समान ही है। बस, अन्तर यही है कि अभिधानप्पदीपिका मे अपेक्षा कृत सामग्री बहुत कम है।

२. एकक्खर कोस

प्रस्तुत **पालिकोशसंगहो** मे पालि भाषा मे लिखित दूसरा कोश ग्रन्थ **एकक्खरकोश** भी सम्मिलित किया गया है। उसके रचयिता हैं **बर्मी भिक्षु** सद्धम्मकित्ति महाथेर जिन्होंने १४६५ ई० में सस्कृत भाषा मे लिखित **एकाक्षर कोश** को पालि भाषा मे परिवर्तित कर दिया था। उन्होंने इसे स्वय स्वीकार किया है – इति सद्धम्मकित्ति नाम महाथेरेन सक्कतभासातो परिवत्तेत्वा विरचित एकक्खरकोस नाम सद्दप्पकरण परिसमत्त।

पालि भाषा मे इन दो कोशो के अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण कोश उपलब्ध नहीं हैं।

४. विषय-सामग्री

अभिधानप्पदीपिका यद्यपि अमरकोश के समान विषय-सामग्री की दृष्टि से बहुत अधिक समृद्ध नहीं है, फिर भी उसमे कवि ने सक्षेप मे दार्शनिक

और सास्कृतिक वस्तु-तथ्यों को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया है। यहाँ हम उसे संक्षेप मे ही वर्गीकृत कर रहे हैं।

धर्म-दर्शन

भारतीय दर्शनों को स्थूल रूप से दो भागो मे विभाजित किया जाता है, वैदिक दर्शन और श्रमण दर्शन। श्रमण दर्शनों मे विशेषत जैन और बौद्ध दर्शनो का साङ्गोपाङ्ग विवेचन मिलता है। भौतिक दर्शन के रूप मे चार्वाक को ले लिया जाता है। मोग्गलान थेर ने अभिधानप्पदीपिका मे केवल एक स्थान पर चार्वाक को लोकायत के रूप मे उल्लिखित किया है और जैनों को दिगम्बर, अचेलक और निगण्ठ नाम दिये हैं (४४०)[1]। साख्य के प्रधान और प्रकृति तत्त्वों का भी एक स्थान पर उल्लेख मिलता है (६२)। इनके अतिरिक्त अन्य शाखाओं के विषय मे कुछ भी नही मिलता।

१. वैदिक धर्म

वैदिक दर्शन के विषय मे भी यहाँ अधिक नहीं लिखा गया। ब्रह्मा, विष्णु महादेव, कार्तिकेय, इन्द्र आदि देवताओ के नाम दिये गये है। (१५–६४)। वेदत्रयी मे ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद रखे जाते हैं (१०७) और वेद का मन्त्र और श्रुति भी कहा जाता है (१०८) वेद-प्रणेता ऋषियों मे अष्टक, वामक, वामदेव, अङ्गिरस, भृगु, यमतग्नि, वसिष्ठ, भारद्वाज, काश्यप और विश्वामित्र प्रमुख थे (१०६)। वेदाङ्ग ६ थे—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त और छन्द (११०)। वैदिक साधना मे पाच महायज्ञ होते थे—अश्वमेध, पुरुषमेध, निरग्गल, सम्यग्पाश और वाजपेय (४१३) अमरकोष मे ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ को पच महायज्ञो मे लिया गया है (२-७-१४)। वेद का प्रमुख छन्द गायत्री है। (४१७)। अग्नि मे हवन किये जाने वाले को चरु, होम द्रव्य को सुजा और हविष्य को परमान्न और पायस कहा जाता था (४१८)। यज्ञीय अग्निया तीन होती हैं—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि (४१६)। मृत व्यक्ति के उद्देश्य से दिया गया दान और्ध्व दैहिक कहा जाता है (४२३)।

२. बौद्ध-दर्शन

अभिधानप्पदीपिका मे बौद्ध दर्शन के विषय मे पर्याप्त जानकारी मिलती है। बुद्ध के यहाँ कुल ३६ नाम दिये गये है—बुद्ध, दसबल, सत्था, सब्बञ्ञु,

---

१. यहाँ ब्रेकेट मे अभिधानप्पदीपिका की पालि गाथाओं-श्लोकों की सख्या का उल्लेख किया गया है।

दिपदुत्तम, मुनिन्द, भगवा, नाथ, चक्खुमा, अङ्गीरस, मुनि, लोकनाथ, अनधिवर, महेसी, विनायक, समन्तचक्खु, सुगत, भूरिपञ्ञ, मारजि, नरसीह, नरवर, धम्मराजा, महामुनि, देवदेव, लोकगुरु, धम्मस्सामि, तथागत, सयभू, सम्मासबुद्धो, वरपञ्ञो, नायक, जिन, सक्क, सिद्धत्थ, सुद्धोदनि, गोतम, सक्यसीह सक्यमुनि और आदिच्चबधु। अमरसिंह ने इनके अतिरिक्त समन्तभद्र अद्वयवादी श्रीघन और मायादेवीसुत नाम भी दिये है (११९३-१५)। बुद्ध के जीवन-क्षेत्र मे मार घटना को बहुत महत्त्व दिया गया है। वस्तुत उसका स्थान केवल बुद्ध के जीवन मे ही नही बल्कि सर्वसाधारण व्यक्ति को दैनन्दिनी मे जो स्वाभाविक घटनाये हुआ करती है उनका ही आलेखन किया गया है। मार का स्वभाव उसके अन्तक, वसवत्ती, पापिमा, पजापति, पमत्तबन्धु, कण्ह और नमुचि नामो म व्यक्त होता है। मार के कारण ही तण्हा रति और राग की उत्पत्ति होती है इसलिए इन्हे मारदुहिता कहा गया है (४३-४४)।

भगवान् बुद्ध के निवास-भवन को गन्धकुटी कहते थे (२११)। उसके सामने ही एक चबूतरा रहता था जिस पर बुद्ध चङ्क्रमण किया करते थ (२१)। उनका सघ चार पारिसदो (भागों) मे विभाजित था—भिक्खु, भिक्खुनी, उपासक और उपासिका। भिक्षुओं के लिए तपस्वी, श्रमण, प्रव्रजित, तपोधन, मुनि, तापस, इसी और वाचयम भी कहा गया है। भिक्खु, सामणेर, सिक्खमाना, भिक्खुनी और सामणेरी को सहधम्मी कहा गया है। भिक्षुओं मे सारिपुत्र, मोद्गलायन और आनन्द थेर प्रमुख थे। सारिपुत्र को पतिस्स और धम्मसेनापति, मोद्गलायन (मोग्गल्लान) का कोलित और आनन्द को धम्मभण्डागारिक भी कहा जाता था। उपासिकाओं मे मिगारमाता, विसाखा और उपासकों मे अनाथपिण्डिक का ही नाम अभि० म उल्लिखित है (४२८७)। यह स्वाभाविक है क्योंकि उक्त दोनों व्यक्तियों ने बौद्ध-सघ के लिए अपनी बहुत अधिक सेवाएँ समर्पित की हैं।

बुद्ध के उपदेश जिस भाषा मे निबद्ध है उसे पालि कहा गया है। पालि शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ म प्राचीन नही है। सिहली परम्परा इस सन्दर्भ मे मूलत मागधी शब्द का ही प्रयोग करती है। भाषा के अर्थ म पालि शब्द का प्रयोग लगभग तरहवीं-चौदहवी शती में मिलता है। अभि० म पालि का अर्थ 'सेतुस्मि तन्ति म तासु नारिय पाल कथ्यते' कहा गया है (६६६)। यहाँ उसका प्रयोग तीन अर्थों में सूचित है—सेतु, तन्ति और मन्न। सेतु का अर्थ परम्परा हो सकता है। सम्भव है सेतु अर्थ करने मे मोग्गलान थेर के समक्ष अशोक के भाब्रू शिलालेख मे प्रयुक्त 'पलियाय' शब्द का अर्थ रहा हो। भिक्षु जगदीश काश्यप का मत इसी अर्थ पर आधारित

होना चाहिए (पालि महाव्याकरण, भूमिका भाग)। पालि का दूसरा अर्थ तन्ति अथवा पंक्ति दिया गया है। यह पंक्ति बुद्धवचन की परम्परा का प्रतीक है। विधुशेखर भट्टाचार्य का मत इसी पंक्ति से सम्बद्ध रहा है। पालि का तीसरा अर्थ मन्त (मन्त्र) दिया गया है जिसे हम मन्त्रणा, विचारणा अर्थात् पाठ कर सकते हैं। भिक्षु सिद्धार्थ का अभिमत इसी अर्थ पर आधारित है।

पिटक शब्द का अर्थ अभि० में 'पिटक भाजने वुत्ता तथेव परियत्तियं' (६६०) किया गया है। बुद्धघोष ने भी अट्ठसालिनी की निदान कथा में "पिटकं पिटकत्थविदू परियत्तिभाजनत्थतो आहु" कहा है। पिटक का अर्थ यहाँ भाजन और परियत्ति (परम्परा) किया गया है। यह परम्परा बुद्धवचनों की ही है। अर्थात् बुद्धवचनों को एक परम्परा (पीढ़ी) से दूसरी परम्परा (पीढ़ी) तक पहुँचाने वाला साधन अथवा भाजन **पिटक** कहलाता है। मोग्गलान थेर ने दीघादि निकाय के अर्थ में **आगम** शब्द का भी प्रयोग किया है (६५१)।

बौद्धधर्म का अनात्मवाद अथवा निरात्मवाद सिद्धान्त बहुत अधिक प्रचलित है। अभि० में आत्मा के अर्थ मे जीव पुरिस, अत्त, पाण, सरीरि, भूत, सत्त, देही, पुग्गल, पाणि, पजा, जन्तु, जन, लोक और तथागत शब्दों का प्रयोग किया है (६२६३)। इसी 'तथागत' को बुद्ध ने 'अव्याकृत' कहा था (दीघनिकाय, ९-३-१६)। इस कथन से यह स्पष्ट है कि बुद्ध ने आत्मा के प्रश्न को मूलतः अव्याकृत कोटि में रखा था। उसी का उत्तरकालीन विकास अनात्मवाद के रूप में सामने आया। 'अत्त' शब्द का प्रयोग, चित्त अर्थ मे भी हुआ है (८६१)। तथागत का अर्थ जिन और सत्त भी दिया गया है (१०६६)।

बौद्ध सिद्धान्त अथवा पारिभाषिक शब्दों मे और जो भी प्रमुख शब्द अभि० में मिलते है वे इस प्रकार हैं — निर्वाण (६-९ ८६५), अर्हत्, (१०) देवता (११-१२), देवयोनि (११), असुर-असुरविशेष (१४), पाप, पुण्य, इहलौकिक पारलौकिक, दुःख, सुख, मंगल (८४ ८६), कारण-प्रत्यय (६१), पदट्ठान (६२), पद्धायतन (६४), अवलम्बन (६४) स्तोत्र (११८), चित्तविज्ञान (१५२), ज्ञानेन्द्रिय, प्रज्ञा (१५२-३), मध्यस्थता (१५६), मनक्कार, करुणा, विरति, क्षान्ति, मैत्री, सिद्धान्त, इच्छा-जटा (१५६-६३) क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, औद्धत्य आदि (१६४), शैक्ष्य, अर्हत् (४३६), अष्टमहानरक (६५७), वासनासंस्कार (७७२), पमा (निश्चय ज्ञान) (७६३), अज्झासय (७३६), उपोसथ (७८०), भूत (७८८), गुण (७८७), जाति, गति, आणदस्सन (७६२), सच्च, आयतन (८००-८०१), कुसल (८०३), बोधि (८०५), धातु (८१७), पद (८१६), अरिट्ठ (८२२), भव

(८२९), नेक्खम्म (८३१), सखार (८३२), सहगत (८३३), चक्खु (८३५), चित्त (८३८), खन्ध (८५१), आरम्भ (८५२), अनुसय (८५३), आहार (८५६), पच्चय (८५७), विहार (८५७), समाधि (८५८), योग (८५८), क्रिया (८७७), सुत्त (८७८), तन्ति (८९२), अपवर्ग (९१०), सग्ग (९११), वायाम (९१४), विमान (९१७), सेय्य (९१८), मग्ग (९२१), आसव (९३६), सन्धि (९४१), अपदान (९४३), पटियत्ति (९४४), छन्द (९४५), ओघ (९४६), सरण (९४७), आगम (९५१), सन्निधि (९५७), वुत्ति (९६५), आसव (९६८), उपधि (९६८), पञ्ञत्ति (९७१), हेतु (९७२), अमत (९७५), निरोध (९८९), पिटक (९९०), सासन (९९२), पालि (९९६), अरिय (१००२), अधिट्ठान (१०३२ , विज्जा (१०३४), बुद्ध (१०४३), गण (१०५०), तण्हा (१०६७), मोक्ख (११३२), आरम्बण (११३२) ।

यहाँ निर्वाण के लिए ४६ पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं जिनमे कतिपय उसकी व्याख्या के रूप मे है—मोक्ख, निरोध, निब्बाण, दीप, तण्हक्खय, पर, ताण, लेण, अरूप, सन्त, सच्च, अनालय, असखत, सिव, अमत, सुदुद्दस, परायण, सरण, अनीतिक, अनासव, धुव, अनिदस्सना, कता, अपलोकित, निपुण, अनन्त, अक्खर, दुक्खक्खय, अब्यापज्झ, विवट्ट, खेम, केवल, अपवग्ग, विराग, पणीत, अच्चुत, पद, योगक्खेम, पार, मुत्ति, सन्ति, विसुद्धि, विमुत्ति, असखताधातु सुद्धि और निब्बुति (६-९) । अर्हत् को खीणासव, असेख और वीतराग भी कहा गया है (१०) ।

इस प्रकार अभि० मे दार्शनिक विचारधारा का अभिलेखन हुआ पर उस रूप मे नहीं जिस रूप मे अमरकोश मे हुआ है । इतना अवश्य है कि यहाँ बौद्ध दर्शन के विषय मे अपेक्षाकृत अधिक सामग्री उपलब्ध होती है ।

सामाजिक दर्शन

अभि० म दार्शनिक दर्शन की तरह सामाजिक दर्शन पर भी विषय-सामग्री मिलती है । उसम कला और साहित्य, इतिहास और राजनीति तथा भौगोलिक एव सामाजिक स्थिति का सक्षिप्त परन्तु मूल्यवान विवरण मिलता है ।

१. कला और साहित्य

कला और साहित्य जीवन के अभिन्न अग है । मोग्गलान थेर के समय तक प्राचीन नाट्यकला अपने चरम विकास पर पहुँच रही थी । नृत्य, नर्तक,

रंगमञ्च, अभिनय, अङ्गसञ्चालन आदि का पर्याप्त ज्ञान समाज को हो चुका था (१००-१०१)। विस्सट्ठ, मञ्जु, विञ्ञय्य, सवनीय, विसारिन, बिन्दु, गम्भीर और निम्न इन अष्टाङ्ग स्वरों का भेद ज्ञात था। पशु-पक्षियों की आवाज को सात भागों में विभाजित किया गया है—उसभ (गाय-बैल की आवाज), धेवत (घोड़े की आवाज), छज्ज (मयूर की आवाज), गधार अज की आवाज), मज्झिम (क्रौञ्च की आवाज), पञ्चम (गधे की आवाज) और निसाद (हाथी की आवाज) (१३०-१३६)। नाट्यकला के क्षेत्र में वीणा, मृदङ्ग आदि वाद्यों का उपयोग होता था (१३७-१४४)। भय, क्रोध, प्रशंसा, शीघ्रता, कौतूहल, हास, शोक और प्रसन्नता की अभिव्यक्ति में शब्दों को दो-तीन बार (आम्रेडित) बोला जाता था (१०६-७)।

मोग्गलान थर रसों मे शृगार, करुण, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, शान्त, बीभत्स और रौद्र इन नव रसों की परम्परा के पक्षधर थे (१०२)। काव्यशास्त्र, आख्यायिका, प्रबन्ध, इतिहास, निघण्टु, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र मे श्रीलका मे भी साहित्य-सृजन प्रारम्भ हो चुका था (११२-११५)।

२. इतिहास और राजनीति

पुरावृत्त का आलेखन इतिहास कहलाता है (१११)। विशुद्ध इतिहास की दृष्टि से अभि० मे कोई सामग्री नही मिलती। पर मापों और मुद्राओं के विषय मे कुछ अवश्य मिल जाता है। छत्तीस परमाणुओं का एक अणु, छत्तीस अणुओं की एक तज्जारी, छत्तीस तज्जारियों का एक रथरेणु, छत्तीस रथरेणुओं का एक लिक्षा, सात लिक्षा का एक यूका, सात धान्यमापों का एक अगुल, फैली कनिष्ठा अगुलि और अगूठे के बीच के प्रमाण विशेष का नाम वितस्ति (वेतिया), दो वितस्तियो का एक रतन (हाथ), सात हाथ की एक यष्टि (लाठी), बीस यष्टियों का एक ऋषभ, अस्सी ऋषभों का एक गव्यूति, चार गव्यूतियों का एक योजन और पाँच सौ धनुष का एक कोश होता है (१९४-९७)।

प्रमाण के सन्दर्भ मे बताया है कि चार व्रीहियों का एक गुञ्जा, दो गुञ्जाओं का एक माषक, दो माषकों का एक अक्ष, पाँच अक्षों का एक धरण, आठ धरणों का एक सुवर्ण, पाँच धरणों का एक निष्क, निष्क के चतुर्थ भाग को एक पाद, दश धरणों का एक पल, सौ पल की एक तुला और बीस तुला का एक भार होता है (४७९-८४)।

अमरकोष के अनुसार उक्त प्रमाणों मे कुछ भिन्नता दिखाई देती है। वहाँ पाँच गुञ्जाओं का आद्यमाषक, सोलह मासकों का एक अक्ष, चार अक्षों

का एक पल, एक पल को कुरुविस्त या सुवर्ण, सौ पल की एक तुला, बीस तुला का एक भार होता है और दश भार को आचित कहते हैं (२-६-८५-८७)।

अभि० मे कार्षापण को कहापण और करिसापण नाम दिये गये हैं। तदनुसार चार कुडव का एक प्रस्थ, चार प्रस्थ का एक आढक, चार आढक का एक द्रोण, चार द्रोण की एक माणिका, चार माणिका की एक खादी, बीस खादी का एक वाह, दस अम्मण का एक कुम्भ और ग्यारह द्रोण का एक अम्मण होता है। (४८१-४८६)। स्वर्ण चार प्रकार का होता है—चामीकर, सातकुम्भ, जम्बूनद और सिंगी (४८८ । रत्न सात प्रकार के है—स्वर्ण, रजत, मुक्ता, मणि, वैडूर्य, वज्र और प्रवाल (४६०)।

भूपतियों मे चक्रवर्ती और मण्डलेश्वर होते थे। उनके प्रधान मंत्री, राजमन्त्री, अमात्य, सेनापति, न्यायाधीश, दूत, गणक, लेखक, द्वारपाल, अङ्गरक्षक, कञ्चुकी, सेवक आदि कर्मचारी होते थे (३३६-४२)। राज्य की नीति भेद, दण्ड, साम और दाम पर निर्भर रहती थी (३४८)। प्रभाव, उत्साह और मन्त्रणा ये तीन राजशक्तियाँ थीं (३५१)। स्वामी, अमात्य, सखा, कोष, दुर्ग, विजित और बल ये राज्य के सात अङ्ग थे (३५०)। खग्ग, छत्त, मुण्हसि, पादुका और वालवजिनी ये पाँच राजचिह्न है (३५८)। राजा की चतुरङ्गिणी सेना (गज, अश्व, रथ और पदाति) रहती थी (३५६) गजकुल दश प्रकार के बताये गये हैं—कालावक, गंगेय्य, पण्डर, तम्वा, सिंगल गन्ध, मगल, हेम, पोसथ और छद्दन्त (३६१)। अस्त्रों मे मुद्गर, छुरिका, शर, धनुष, शेल, वासी, कुठार, टक, कणाय, भिन्दिपाल, चक्र, कुन्त, गदा और शक्ति के नाम दिये गये हैं (३८७-३६४)।

३. सामाजिक स्थिति

जैन-बौद्ध साहित्य मे ब्राह्मण वर्ण के पूर्व क्षत्रिय वर्ण को रखा जाता है। क्योंकि उनके तीर्थङ्कर और बुद्ध भी क्षत्रिय थ। यहाँ भी इसीलिए चतुर्वर्ण मे प्रथमत क्षत्रिय वर्ण को लिया गया है जिसमे प्राय राजाओ का विविध वर्णन है। क्षत्रियों के पाँच प्रकार है—राजन्य, क्षत्रिय, क्षत्र, मूर्धाभिषिक्त और बाहुज (३३५)। उसके बाद ब्राह्मण वर्ग को लिया गया है जिसमे आध्यात्मिक साधना से सम्बद्ध विषय समाहित हैं (४०८-४४४)। वैश्यवर्ग मे पशुपालन, कृषिकर्म और व्यापार को रखा गया है (४४५-५०२)। शूद्रवर्ण मे मिश्रवर्ण को भी अन्तर्भूत किया गया है। शूद्र पुरुष और क्षत्रिय स्त्री से उत्पन्न होन वाला मिश्रवर्णी मागध, शूद्रा पत्नी और क्षत्रिय पति से उत्पन्न होने वाला उग्र तथा ब्राह्मण पत्नी और क्षत्रिय पति से उत्पन्न होने वाला सूत

कहलाता था (५०३–४)। अमरकोष मे यह विवेचन कुछ भिन्नता लिये हुये है (२१०२–४)।

शिल्पी पांच प्रकार के होते हैं—तक्षक, तन्तुवाय, रजक, नहापित और चर्मकार। तन्तुवाय, मालाकार, कुम्भकार, सूचिक, चर्मकार, कल्पका, चित्रकार, पुष्पवर्जक, नलकार, चुन्दकार, कर्मार, रजक, जलाहारक, वीणावादक, धानुष्क, वंशीवादक, हस्तवाद्यवादक, पिष्ठविक्रेता, मद्यविक्रेता, इन्द्रजालिक, शौकरिक, मृगयाकारी, वागुरिक, भारवाही, भृत्य, दास, क्रीतदास, नीच, चाण्डाल, किरात, म्लेच्छजाति, मृगव्याध, आदि को शूद्रवर्ग में समाहित किया गया है (५०३–५१८)। अमरकोष मे भी लगभग यही मिलता है (२१०५–४६)।

आभरण के प्रसग मे किरीट, मुकुटस्थ प्रधानमणि, उष्णीष, कुण्डल, कर्णाभरण कटालङ्कार, मुक्तामाला, वलय, करभूषण, किङ्किणी, अङ्गुलीयक, मुद्रिका, मेखला, केयूर, नूपुर और मुखफुल्ल का नाम मिलता है। वस्त्रों मे परिधान, उत्तरीय, कञ्चुक, वस्त्रान्त, शिरस्त्राण, चीवर, कार्पासवस्त्र, वल्कलवस्त्र, कौशेयवस्त्र और ऊर्णायुवस्त्र का नाम आया है। वस्त्रोत्पत्तिस्थान मे फल, त्वक, क्रिमि और लोम का उल्लेख है। गन्ध द्रव्यों में चन्दन, काळानुसारी, अगरु, कालागरु, कस्तूरी कुट, लवङ्ग, कुङ्कुम यक्षधूप, कक्कोलफल, जातिफल, कर्पूर, लाक्षा, तार्पिण तैल, अञ्जन, वासचूर्ण, विलेपन और माला का नाम मिलता है। रोगों मे यक्ष्मा, नासा, श्लेष्म, व्रण, विस्फोट, पूय, रक्तातिसार, अपस्मार, पादस्फोट, कोशवृद्धि, श्लीपद, कडु, विकच्छ, शोफ, अर्श, वमन दाह, अतिसार, मेधा, जर, क्वास, श्वास, भगन्दर, कुष्ठ और मल का उल्लेख है (३८२-३३०)।

४. भूगोल

अभिधानप्पदीपिका मे चार महाद्वीप गिनाये गये है—पूर्व विदेह, अपरगोयान, जम्बूद्वीप और उत्तरकुरु (१८३)। जैनागमों मे मनुष्य क्षेत्र के अन्तगत कुल तीन द्वीपो का वर्णन मिलता है—जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और पुष्कराद्ध द्वीप[1]। महाभारत मे तेरह द्वीपों का उल्लेख है[2] और विष्णुपुराण में सात द्वीपों का नाम आता है—जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, कुशद्वीप, क्रौञ्चद्वीप, शाकद्वीप और पुस्करद्वीप।

अभिधानप्पदीपिका में २१ देशों के भी नाम मिलत हैं—कुरु, शाक्य, कोशल, मगध, शिवि, कलिङ्ग, अवन्ति, पचाल, वज्जि, गधार, चेतय, वग, विदेह, कम्बोज, मद्र, भग्ग, अङ्ग, सीहल, कश्मीर, काशी और पाण्डव

१. तत्त्वार्थसूत्र, तृतीय अध्याय
२ महाभारत, ७५.१६

(१८४-८६)। अंगुत्तर निकाय मे सोलह जनपदों के उल्लेख हैं—अग, मगध, काशी, कोशल, वज्ज, मल्ल, चेति, वत्स, कुरु, पचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ती, गन्धार और कम्बोज। बृहत्कल्पसूत्र भाष्य (१.३२६३ वृत्ति) में मगध, अग, बग, कलिंग, काशी, कोशल, कुरु, कुशार्त, पाचाल, जगल, सौराष्ट्र, विदेह, वत्स, शाण्डिल्य, मलय, मत्स्य, वरणा, दशार्ण, चेदि, सिन्धु सौवीर, शूरसेन, भगि, वट्टा (वर्त), कुणाल लाढ और केकय-अर्ध इन साढ़े पच्चीस आर्य देशों का उल्लेख मिलता है। इन उल्लेखों से यह पता चलता है कि समय और परिस्थितियों के अनुसार देशो की सख्या में हीनाधिकता होती रही है। यही कारण है कि अभिधानप्पदीपिका मे देशों के नाम और उनकी सख्या कुछ भिन्न ही है।

प्राचीन नगरों में वाराणसी, श्रावस्ती, वेशाली, मिथिला, आळवी, कौशाम्बी, उज्जयिनी, तक्षशिला, चपा, शाकल, शुसुमारगिरि, राजगृह, कपिलवस्तु, साकेत, इन्द्रप्रस्थ, अवकष्ट, पाटलिपुत्र, ज्योत्युत्तर सकस्स और कुसीनारा का निर्देश है (१९९-२०१)।

अभिधानप्पदीपिका मे उपलब्ध विषय-सामग्री को हमने यहाँ सक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत किया है। अमरकोश में यही सामग्री विस्तार से मिलती है। इसलिए उसकी तुलना करने की आवश्यकता हमने नहीं समझी। जहाँ कुछ वैभिन्य दिखाई दिया वहाँ अवश्य सकेत कर दिया है। अभिधानचिन्तामणि कोश आदि ग्रन्थों मे भी हीनाधिक रूप से यही सामग्री प्राप्त होती है।

९ प्रस्तुत संस्करण

अभिधानप्पदीपिका का नागरी सस्करण मुनि जिनविजय जी के सम्पादकत्व मे १९२३ ई० मे गुजरात पुरातत्व मन्दिर, अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ था। बहुत समय से यह ग्रन्थ अनुपलब्ध था। विद्यार्थियों एव शोधकों के लिए उसकी महती आवश्यकता थी। अत हमने इस ग्रन्थ को पुनः सम्पादित करने का निश्चय किया। इस बीच श्री प० स्वामी द्वारकादास जी शास्त्री से परिचय हुआ। उनके सहज स्नेह-सहयोग से सिंहली और बर्मी सस्करणो से भी पाठान्तर ले लिये गये। इस प्रकार प्रस्तुत सस्करण तीन सस्करणो पर आधारित है—

१ ना०—नागरी सस्करण, सम्पादक मुनि जिनविजय, गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर, अहमदाबाद, १९२३

२ सी०—सीलोन सस्करण, सम्पादक—सुभूति, कोलम्बो, द्वितीय सस्करण, १८८३

३ म०—बर्मी सस्करण—स० पी० जी० मुङबने, पिटक प्रेस, रगून, १९५६।

तुलना की दृष्टि से यत्र-तत्र अमरकोश को उपस्थित किया गया है पर बहुत अधिक नहीं। तथ्य तो यह है कि हर पंक्ति पर उसकी छाया है। अतः पाठक उसे स्वयं देख सकते हैं।

६. प्रस्तुत संकरण का नाम

प्रस्तुत संस्करण का नाम हमने **'पालिकोससंगहो'** रखा है। इसमें पालि भाषा में उपलब्ध दो महत्त्वपूर्ण कोश - अभिधानप्पदीपिका एव एकक्खर कोस को सकलित किया गया है। पालिकोश सग्रह का यह प्रथम भाग है। द्वितीय भाग में इसकी शब्दसूची को अग्रेजी और हिन्दी में देने की हमारी योजना है। उसमें कुछ और आवश्यक शब्द जोड़कर आधुनिक दृष्टि से एक पृथक् 'पालिकोश' तैयार हो सकेगा। छात्रों को उसकी भी अत्यन्त आवश्यकता है। आशा है, शीघ्र ही उसे तैयार कर हम पा तक ला सकेंगे। उपयोगिता की दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में परिशिष्ट के रूप में **विभत्त्यत्थप्पकरणं** भी सम्मिलित कर लिया गया है।

७. कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत सस्करण को तैयार करने में हमें श्री पण्डित द्वारकादास जी शास्त्री, प्राध्यापक, पालि-बौद्ध दर्शन विभाग, वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय का अमित सहयोग मिला। उनके सहयोग के बिना यह सस्करण इस रूप में इतना शीघ्र नहीं निकल सकता था। पण्डित जी की इस स्नेह-कृपा के लिए हम आभारी हैं।

यहाँ हम आ० बन्धुवर डॉ० अजयमित्र शास्त्री का नाम विस्मृत नहीं कर सकते जिनकी प्रेरणा हमारे शोध-कार्य में सदैव सम्बल बनी रहती है। इसी प्रकार हम अपनी पूज्या मा श्रीमती तुलसा देवी जैन के प्रति भी किन शब्दों में आभार व्यक्त करें जिन्होंने प्रारम्भ से ही विशुद्ध शैक्षणिक वातावरण दिया और सभी प्रकार की सुविधाएँ दी। मेरी पत्नी श्रीमती पुष्पलता जैन, एम० ए० भी धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने पुस्तक को इस रूप मे लाने के लिये अनेक प्रकार से सहयोग दिया।

अन्त में श्री शरदकुमार 'साधक' सम्पादक, 'चौराहा' हिन्दी साप्ताहिक को भी धन्यवाद देना कैसे भूलूँ जिन्होंने पुस्तक का मुद्रण ही नहीं किया बल्कि और भी अनेक प्रकार से सहयोग दिया।

न्यू एक्सटेन्शन एरिया
सदर, नागपुर
२८-७-१९७३

—भागचन्द्र जैन

INTRODUCTION

1. ABHIDHĀNAPPADĪPIKĀ

1. The Date of Author

Abhidhānappadīpikā by Moggalāna Thera of Ceylon is the first and most important work on the Pāli lexicography. The author was the main disciple of Mahākassapa Thera during the reign of Parākramabāhu (Parākramabhuja) I (1153-1186 A. D.) He belonged to the forest-dwelling sect Sarasi gamasamūha or Vilgammūla and resided in the Mahājetavana-vihāra of the Polennarua[1] He is distinguished in the Gandha vaṁsa from the Moggalāna, a Pāli Grammarian by adding the word "Nava" before his nāma (Nava Moggalāna There)[2] Gurulugomi the earliest writer of Compendiums on the Buddhist Doctrine and the life-story of the Buddha, has referred to the Abhidhānappadīpikā in his work entitled "Dharma-pradīpikāva" (the Lamp of the Doctrine), a Parikathā to the Pāli Mahābodhivaṁsa On the basis of the external and internal evidence the upper limit for the date of the Dharma-pradipikāva bas been fixed in the reign of king Parākramabāhu II of Dambadeniya (13th Century A D) by Dr. C E Godakumbura[3].

2 Method and Style

Abhidhānappadīpikā is composed on the model of the Amarakośa of Amarasinha, most probably a Jain lexicographer It is nothing but a brief summary of the Amarakośa with some additional material based on Buddhist literature and culture This can be proved, if we go through the contents of both the Amarakośa and the Abhidhānappadīpikā It is but natural as Amarasinha is predecessor to Moggālana Thera Both lexicographies are divided into three Kāṇḍas. Except the Patalabhogi Varga of the first Kāṇḍa of the Amarakośa all the Vargas have been included in the first Kānda of the, Abhidhānappadīpikā There is no basic difference between the two works as regards the second and third Kandas.

---

1 See the Prasasti of the Abhidhānappadīpikā.

2. P. 62

3 Sinhalese Literature, Colombo, 1955, p. 49-58.

As regards the title of the Abhidhānappadīpikā, it is definitely borrowed from the Pāli Tipiṭaka and Buddhist Sanskrit Literature as the word "Abhidhāna" has occured there with great importance in connection of devotion to the Buddha. Ācārya Hemachandra, the author of the Abhidhānacintāmaṇikośa might have borrowed the same word from the Abhidhānappadīpikā.

3. Origin and Development of Pāli Lexicography

Indian lexicography comes forth from the Nighantu which is on the form of explanatory notes on Vedic words. Later on, Yāska wrote 'Nirukta' as the commentary on the Nighantu. This tradition of the Nighantu and the Nirukta inspired later lexicographers like Bhogīndra, Kātyāyana, Sāhasāṅka, Vācaspati, Vyāḍi, Viśvarūpa, Mangala, Śubhānka, Vopalita, Bhāguri, Halāyudha, Amarasinha, Dhanañjaya, Hemachandra, Maheśvara, Maṅkha, Keśavasvāmī Medinīkāra, Dhanapāla, etc

Pāli lexicography is undoubtedly based on Sanskrit lexicography. But if we go through the Pāli Tipitaka, we shall find in practically each and every page such places where several words or phrases in identical meanings have been used with a view to stress the particular point This style can be said to be the source of the origin of the Pāli lexicography. It is a good subject for the researcher in the field of Indological studies.

Some Tikās on the Abhidhānappadīpikā are also available. The old Simhalese translation of the same is known as the Nighandusaññe and belongs to about the same period. Another important Tikā known as "Samvaṇnanā" was composed by a Burmese Officer during the reign of Kittisihasūra (15th Century A D). It was translated by Gnanavar, a Burmese monk, in the 18th Century.

4. Subject Matter.

Abhidhānappadīpikā is a treasure of the Ancient Indian Culture in general and Buddhist culture in particular It is, of course, not so rich as the Amarakośa or the Abhidhānacintāmani. Its subject matter can be divided into two categories viz. Philosophical and Socio-cultural. Under philosophical

aspects the author has dealt with the Vedic and Buddhist philosophy. As regards society and culture, the Thera has referred to art, literature, history, politicis, social status, geography etc The subject matter in detail can be seen in the Hindi introduction.

5 The present Edition

Abhidhānappadīpikā (Nagarī Edition) was editted by Muni Jinavijay and published by the Gujarat Puratattva Mandir was out of print. Looking to the usefulness of the Abhidhānappadīpikā to the students of Indology we took up its publication on the basis of the following three editions :—

1 Na (ना)—Nagari Edition—Ed Muni Jinavijay, Gujarat Puratattva Mandir, Ahmedabad, 1923
2 Si (सी.)—Ceylon Edition, Ed. Subhuti, Colombo, 1883
3 Ma (म.)—Burmese Edition, Rangoon

We have compared the Abhidhānappadīpikā with the Amarkośa in footnotes to a certain extent. As a matter of fact, each and every line of the Abhidhānappadīpikā has a basis in the Amarakoṣa and therefore we could not do so all the while.

2. EKAKKHARAKOSA

6 Another Pāli lexicographical work entitled "EKAKKHARAKOSA" of Saddhammakitti, a Burmese Buddhist monk, written in 1465 A D., has been included here. That was totally translated from the Sanskrit Ekakṣarakośa The author himself says at the end of the work —

Iti Saddhammakitti nāma Mahātherena sakkatabhāsato parivattetvā viracitaṁ Ekakkharakosaṁ nāma saddappakaraṇaṃ parisamattaṃ

No other important lexicographical work has ever been found in Pāli.

7 Name of the work

Both, the Abhidhānappadīpikā and the Ekakkharakosa have been included in the present work which has been given the title PĀLIKOSASANGAHO. This is the first part of the work The second part will contain its word Index with some

more useful words to the students of English and Hindī. I hope, it will also be published in near future.

8 Acknowledgment

I do not have sufficient words to express my gratitude to Shri Pt. Svami Dvarkadasaji Shastri, Lecturer, Department of Pali and Buddhism, Vārāṇaseya Sanskrit University, Varanasi who has given me generous co-operation by going through the entire manuscript without which the present edition of the Abhidhānappadīpikā could not have been completed so early in the present shape. I am also gratful to Dr. Ajaya Mitra Shastri, Professor, Department of Ancient Indian History and Culture and Archaeology, Nagpur University, Nagpur who has been a source of insipiration to me in my research work

I shall be failing in my duty if I forget my beloved mother Smt. Tulasadevi Jain and wife Smt. Pushpalata Jain M. A. who have provided all the favourable atmosphere and facilities for completing the work

Shri Sharad Kumar Sadhak, the editor of the Chaurāhā, also deserves my thanks not only for printing the book but also extending his valuable co-operation in various ways.

New Extension Area,
Sadar,
Nagpur, India.
Dt. 28. 7. 1973

Bhagchandra Jain

विषय-सूची

अभिधम्म दीपिका

एकक्खर कोस

परिशिष्ट

●

❀ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ❀

अभिधानप्पदीपिका

मङ्गलगाथा

तथागतो यो करुणाकरो करो-
पयातमोस्सज्ज सुखप्पदं पदं ।
अका परत्थं कलिसम्भवे भवे,
नमामि तं केवलदुक्करं करं ॥ १ ॥

अपूजयुं यं मुनिकुञ्जरा जरा-
रुजादिमुत्ता यहिमुत्तरे तरे ।
ठिता तिवट्टम्बुनिधिं[1] नरानरा,
तरिंसु तं धम्ममघप्पहं पहं ॥ २ ॥

इमासं तिस्सन्नंपि मङ्गलगाथानं फुटो अत्थो एवं वेदितब्बो—

तथागतो ति । तत्थ **करुणाकरो** महाकरुणाय उप्पत्तिट्ठानभूतो, **यो तथागतो** भगवा, **करोपयातं** अत्तनो हत्थगतं, **सुखप्पदं** सुखस्स पतिट्ठानभूतं, सुखकारणं वा, सुखदायकं वा, **पदं** निब्बाणं, **ओस्सज्ज** चजित्वा, **कलिसम्भवे** दुक्खकारणभूते, **भवे** संसारे, **केवलदुक्करं** सुकरेनासम्मिस्सं अच्चन्तदुक्करं पञ्चविध-परिच्चागादिकं, **करं** करोन्तो, **परत्थं** परेसं अत्थं येव **अका** कतवा, **तमे**दिसं तथागतं अहं **नमामि** ॥१॥

अपूजयुं ति । यं च धम्मं **जरारुजादिमुत्ता** जरारोगादीहि विमुत्ता, **मुनिकुञ्जरा** मुनिसेट्ठा भगवन्तो, **अपूजयुं** पूजितवन्तो , तथा **उत्तरे** उत्तमे संसारमहोघपक्खित्तानं ततो उत्तरणसमत्थे, **यहिं तरे** यस्मिं धम्मप्लवे ठिता सम्मा पटिपज्जनवसेन आरूळ्हा, **नरानरा** मनुस्सा च देवा च, **तिवट्टम्बुनिधिं** किलेस-कम्म-विपाक-वट्टसङ्खातेहि तिवट्टेहि आकुलितं संसारमहम्बुरासिं, **अतरिंसु** तिण्णा, **तं अघप्पहं** किलेसप्पहानकरं संसारदुक्खप्पहानकरं वा, **धम्मं पि अहं** (नमामि) ॥ २ ॥

---

1. तिवट्ठ०—ना० ।

गतं मुनिन्दोरससूनुतं नुतं,
सुपुञ्ञखेत्तं [1]भुवने सुतं[1] सुतं।
गणम्पि पाणीकतसंवरं वरं,
सदा गुणोघेन निरन्तरन्तरं ॥ ३ ॥

अभिधेय्यपयोजनानि

नामलिङ्गेसु कोसल्लमत्थनिच्छयकारणं ।
यतो महब्बलं बुद्धवचने पाटवत्थिनं ॥ ४ ॥
नामलिङ्गान्यतो बुद्धभासितस्सारहान्यहं[2] ।
दस्सयन्तो पकासिस्सं अभिधानप्पदीपिकं ॥ ५ ॥

लिङ्गञाणोपायपरिभासा

भीय्यो[3] रूपन्तरा साहचरियेन च कत्थचि ।
क्वचाहच्चविधानेन ञेय्यं थी-पुं-नपुंसकं ॥ ६ ॥
अभिन्नलिङ्गिनं[4] येव द्वन्दो च लिङ्गवाचका ।
गाथापादन्तमज्झट्ठा पुब्बं यन्त्यपरे परं ॥ ७ ॥
पुमित्थियं पदं द्वीसु सब्बलिङ्गे च तीस्विति ।
अभिधानन्तरारम्भे[5] ञेय्यं त्वन्तमथादि च ॥ ८ ॥
भीय्यो पयोगमागम्म सोगते आगमे क्वचि ।
निघण्टुयुत्तिं चानीय नामलिङ्गं कथीयति ॥ ९ ॥

गतं ति । **मुनिन्दोरससूनुतं** भगवतो उरोसम्भवदेसनाय अरियभावप्पत्तताय मुनिन्दस्स ओरसपुत्तभाव **गतं** पत्त, **नुतं** थुत **सुपुञ्ञखेत्तं** पुञ्ञबीजविरूहणट्ठान सुखेत्तभूत, **भुवने** लोके, **सुतं** विस्सुत, **सुतं** सुतधर वा, **असुतं** किलेससवनाभावेन असुत, पाणीकतो सुखेन अनायासेन वा गहितो पातिमोक्खसवरो येन त **पाणीकतसवरं**, **वरं** सीलादीहि गुणेहि सदेवकेहि लोकेहि पत्थनिय, 'देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो' ति हि वुत्त, **सदा** सब्बस्मि काले **गुणोघेन** सीलादि-गुणसमूहेन, **निरन्तरन्तरं** अविच्छिन्न-मानस परिपुण्णचित्त वा, **गणम्पि** अट्ठन्न अरियपुग्गलान समूहम्पि (अह नमामि) ॥

१–१ भवने०—म०, भुवनेसु त—सी० । २. ०रहानह—सी०, ना० ।
३. भीयो—सी०, ना०, व० । एवमुपरि पि । ४. ०लिङ्गान—म० ।
५. आभि०—म० ।

पठमो सग्गकण्डो

१. बुद्धवग्गो

बुद्ध ३२

बुद्धो दसबलो सत्था सब्बञ्ञू दिपदुत्तमो ।
मुनिन्दो भगवा नाथो चक्खुमाऽङ्गिरसो[1] मुनि ॥ १ ॥
लोकनाथोऽनधिवरो महेसी च विनायको ।
समन्तचक्खु सुगतो भूरिपञ्ञो च मारजी[2] ॥ २ ॥
नरसीहो नरवरो धम्मराजा महामुनि ।
देवदेवो लोकगरु[3] धम्मस्सामि[4] तथागतो ॥ ३ ॥
सयम्भू सम्मासम्बुद्धो वरपञ्ञो च नायको ।
जिनो;

गौतमबुद्ध ७

सक्को च सिद्धत्थो सुद्धोदनि च गोतमो ॥ ४ ॥
सक्यसीहो तथा सक्यमुनि चादिच्चबन्धु च ॥ ५ ॥

निर्वाण ४६

मोक्खो निरोधो निब्बानं[5] दीपो तण्हक्खयो परं ।
ताणं लेणमरूपं[6] च सन्तं सच्चमनालयं ॥ ६ ॥
असङ्खतं सिवममतं सुदुद्दसं
परायणं सरणमनीतिकं[7] तथा ।

---

1. ०माङ्गीरसो—सी०, म० ।
2. मारजि—सी०, ना० ।
3. लोकगुरु—ना० ।
4. धम्मस्सामी—इति पि पाठो ।
5. निब्बाण—व०, ना० ।
6. लेण अरूप—सी०, ना०; लेन०—व० ।
7. सरण अनीतिकं—सी०, ना० ।

अनासवं [1]धुवमनिदस्सना कता-
ऽपलोकितं निपुणमनन्तमक्खरं ॥ ७ ॥
दुक्खक्खयोऽव्यापज्झं च विवट्टं खेम - केवलं ।
अपवग्गो विरागो च पणीतं अच्चुतं पदं ॥ ८ ॥
योगक्खेमो पारमपि[2] मुत्ति-सन्ति-विसुद्धियो ।
विमुत्त्यसङ्खता[3] धातु[3] सुद्धि-निब्बुतियो सियु ॥ ९ ॥

अर्हत् ४ — खीणासवो त्वसेक्खो[4] च वीतरागो तथाऽरहा ।

देवलोक ५ — देवलोको दिवो नाको तिदिवो तिदसालयो ॥ १० ॥

देवता १४ — तिदसा त्वमरा देवा विबुधा च सुधासिनो ।
सुरा मरू[5]-दिवोका चामतपा सग्गवासिनो ॥ ११ ॥
निज्जरा ऽनिमिसा दिब्बा अपुमे देवतानि च ॥ १२ ॥

देवयोनि ८ — सिद्धो भूतो च गन्धब्बो गुय्हको यक्ख-रक्खसा ।
कुम्भण्डो च पिसाचादि निद्दिट्ठा देवयोनियो ॥ १३ ॥

असुर ४ — पुब्बदेवा सुररिपू[6] असुरा दानवा पुमे ।

असुरविशेष ३ — तब्बिसेसा पहारादो सम्बरो बलि आदयो ॥ १४ ॥

ब्रह्मा ८ — पितामहो पिता ब्रह्मा लोकेसो कमलासनो ।
तथा हिरञ्ञगब्भो च सुरजेट्ठो पजापति ॥ १५ ॥

---

1. धुव अनिदस्सना—सी०, ना० ।
2. पार पि—ना० ।
3-3. विमुत्त्यासङ्खतधातु—म० ।
4. त्वसेखो—सी०, ना० ।
5. मरु—सी०, ना०, व० ।
6. सुररिपु—म०, सी०, ना० व० ।

विण्हु ५ वासुदेवो हरि[1] कण्हो केसवो[2] चक्कपाण्यथ ।

सिव ६ महिस्सरो सिवो सूली इस्सरो पसुपत्यपि ॥ १६ ॥
हरो,

कार्तिकेय ३ वुत्तो कुमारो तु खन्धो सत्तिधरो भवे ॥१७॥

इन्द्र २० सक्को पुरिन्ददो[3] देवराजा वजिरपाणि च ।
सुजम्पति सहस्सक्खो महिन्दो वजिरावुधो ॥ १८ ॥
वासवो च दससतनयनो तिदिवाधिभू ।
सुरनाथो च वजिरहत्थो च भूतपत्यपि ॥ १९ ॥
मघवा केसियो इन्दो वत्रभू पाकसासनो ।
विडोजा,

इन्द्राणी १ ऽथ सुजातास्स भरिया,

ऽथ पुरं भवे ॥ २० ॥

इन्द्रनगरी ३ मसक्कसारो वस्सोकसारा चेवामरावती ।

इन्द्रप्रसाद १ वेजयन्तो तु पासादो,

इन्द्रसभा १ सुधम्मा तु सभा मता ॥ २१ ॥

इन्द्ररथ १ वेजयन्तो रथो तस्स वुत्तो,

इन्द्रसारथि १ मातलि सारथी ।

ऐरावत १ एरावणो गजो,

इन्द्रासन १ पण्डुकम्बलो तु सिलासनं ॥ २२ ॥

---

1. छन्दोरक्खाय हरीति दीघपाठो व उचितो, तथापि असन्देहाय रस्सो कतो ।
2. केसओ–ना० ।
3. पुरिन्दरो–ना० ।

इन्द्रपुत्र १ सुवीरोच्चादयो पुत्ता,

इन्द्रपुष्करिणी नन्दा पोक्खरणी भवे।

नन्दनवन ४ नन्दनं मिस्सकं चित्रलता फारुसकं वना ॥ २३ ॥

इन्द्रवज्र ३ असनी[1] द्वीसु कुलिसं वजिरं पुन्नपुसके।

अप्सरा ४ अच्छरायो त्थिय वुत्ता रम्भा चालम्बुसादयो ॥ २४ ॥

देवित्थियो,

गन्धर्वविशेष १ ऽथ गन्धब्बा पञ्चसिखो ति आदयो।

देवप्रसाद २ विमानो नित्थिय ऽयम्हं,

अमृत ३ पीयूसममतं[2] सुधा ॥ २५ ॥

सुमेरु पर्वत ५ सिनेरु मेरु तिदिवाधारो नेरु सुमेरु च।

कुलपर्वत ७ युगन्धरो ईसधरो करवीको सुदस्सनो ॥ २६ ॥

नेमिन्धरो विनतको अस्सकण्णो कुलाचला।

आकाशगङ्गा ३ मन्दाकिनी अथाकासगङ्गा सुरनदीप्यथ ॥ २७ ॥

पारिजात ३ कोविळारो तथा पारिच्छत्तको पारिजातको ॥

कल्पवृक्ष २ कप्परुक्खो तु सन्तानादयो देवद्दुमा सियु ॥ २८ ॥

२. दिसावग्गो

दिक्चतुष्टय पाची पतीच्युदीचीत्थी पुब्ब-पच्छिम-उत्तरा।

दिसाऽथ दक्खिणाऽपाची,

अनुदिक् २ विदिसाऽनुदिसा भवे ॥ २९ ॥

---

1. असनि– इति पि पाठो। 2. पीयूस अमत–सी०, ना०।

दिग्गज ८ — एरावणो पुण्डरीको वामनो कुमुदोऽञ्जनो।
पुप्फदन्तो सब्बभुम्मो[1] सुप्पतीको दिसागजा* ॥ ३० ॥

गन्धर्वराज २ — धतरट्ठो च गन्धब्बाधिपो कुम्भण्डसामि तु।

पन्नगेश्वर २ — विरूळ्हको विरूपक्खो तु नागाधिपतीरितो[2] ॥ ३१ ॥

कुबेर ४ — यक्खाधिपो वेस्सवणो कुवेरो नरवाहनो।

कुबेरपुरी २ — अलकाऽलकमन्दाऽस्स पुरी,

कुबेरायुध १ — पहरणं गदा ॥ ३२ ॥

दिक्पाल — चतुद्दिसानमधिपा पुब्बादीनं कमा इमे।

अग्नि १८ — जातवेदो सिखी जोति पावको दहनोऽनलो ॥ ३३ ॥
हुतावहोऽच्चिमा[3] धूमकेत्वग्गि गिनि भानुमा।
तेजो धूमसिखो वायुसखो च कण्हवत्तनी ॥ ३४ ॥
वेस्सानरो हुतासो,

अग्निज्वाला ३ — ऽथ सिखा जालाऽच्चि वा पुमे।

अग्निकण २ — विप्फुलिङ्गं फुलिङ्गं च,

भस्म ३ — भस्मं तु सेट्ठि छारिका ॥ ३५ ॥

उष्णभस्म १ — कुक्कुळो[4] तुण्हभस्मस्मि[5],

अङ्गार (कोयला) २ — अङ्गारोऽलातमुम्मुकं।

इन्धन ५ — समिधा इधुमं चेधो उपादानं तथेन्धनं ॥ ३६ ॥

---

1. सब्बभुम्भो—ना०। 2. ० पतीरीतो—ना०।
3. हुतावहा०—ना०। 4. कुक्कुलो—ना०।
5. तुण्हभस्मस्मिं—ना०। * तु०—अ० को (१.३.३-४)

प्रकाश ५ अथोभासो पकासो चाऽऽलोकोज्जोताऽऽतपा समा।

वायु १० मालुतो पवनो वायु वातोऽनिल समीरणो ॥ ३७ ॥

गन्धवाहो तथा वायो समीरो च सदागति।

वायुभेद ६ वायुभेदा इमे उद्धङ्गमो चाऽधोगमो तथा ॥ ३८ ॥

कुच्छिट्ठो च[1] कोट्ठासयो अस्सासऽङ्गानुसारिनो।

प्रश्वास २ अथो अपान पस्सासो,

श्वास २ अस्सासो आनमुच्चते ॥ ३९ ॥

वेग ३ वेगो जवो रयो[2],

शीघ्र ९ खिप्पं तु सीघं तुरितं लहु।

आसु तुण्णमर[3] चाविलम्बितं तुवटं पि च ॥ ४० ॥

निरन्तर ७ सततं निच्चमविरताऽनारतसन्ततमनवरत च धुवं।

अतिशय ७ [4]भुसमतिसयो च दळ्ह तिब्बे कन्ताऽतिमत्तबाळ्हानि ॥४१॥

खिप्पादि पण्डके दब्बे दब्बगा तेसु ये तिसु।

काम ४ अविग्गहो तु कामो च मनोभू मदनो भवे ॥ ४२ ॥

मार ८ अन्तका वसवत्ती च पापिमा च पजापति।

पमत्तबन्धु कण्हो च मारो नमुचि,

मारदुहिता ३ तस्स तु ॥ ४३ ॥

तण्हा रती रगा धीतु,

मारहस्ती १ हत्थी तु गिरिमेखलो।

---

1. सी०, ना० पोत्थकेसु नत्थि। 2. 'तु' इति अधिको व० पोत्थके।
3. तुन्न अर–ना०। 4. भूस अति०– सी०, ना०।

यमराज ३ — यमराजा च वेसायी यमो;

यमायुध १ — ऽस्स नयनावुधं ॥ ४४ ॥

वेपचित्ति असुर २ — वेपचित्ति पुलोमो च;

किन्नर २ — किम्पुरिसो[1] तु किन्नरो।

आकाश १५ — अन्तलिक्खं [2]खमादिच्चपथोऽब्भं गगनाम्बरं ॥ ४५ ॥
वेहासो[3] चानिलपथो आकासो नित्थिय नभं।
देवो वेहायसो[3] तारापथो सुरपथो अघं ॥ ४६ ॥

मेघ ११ — मेघो वलाहको देवो पज्जुन्नोऽम्बुधरो घनो।
धाराधरो च जीमूतो वारिवाहो तथाम्बुदो ॥ ४७ ॥
अब्भ,

वर्षा ३ — तीस्वथ वस्सं च वस्सनं वुट्ठि नारिय।

विद्युत् ५ — [4]सतेरिताऽक्खणा विज्जु विज्जुता चाऽचिरप्पभा ॥ ४८ ॥

मेघगर्जन ३ — मेघनादे तु थनितं गज्जितं रसितादि च।

इन्द्रधनु २ — इन्दावुधं इन्दधनु,

वृष्टिकण १ — वातखित्तम्बु सीकरो ॥ ४९ ॥

जलधारा ३ — आसारो धारा सम्पातो*,

उपलवृष्टि २ — करका तु घनोपलं।

---

1. किंपुरिसो–म०, व०। 3. वेहासयो–ना०, व०।
2. ख आदिच्च०–सी०, ना०। 4. सतेरता०–सी०, ना०, व०।

※. इदम्पन अमरकोसतो विरुद्धं, तत्थ हि 'धारासम्पात आसारः' (१.३.११) इति नामद्वयस्सेव पाठो दिस्सति।

दुर्दिन १ दुद्दिनं मेघच्छन्नाहे;

आच्छादन ६ पिधानं त्वपधारणं ॥ ५० ॥

तिरोधानऽन्तराधानपिधानच्छादनानि च ।

चन्द्रमा १४ इन्दु चन्दो च नक्खत्तराजा सोमो निसाकरो ॥ ५१ ॥

ओसधीसो हिमरंसि ससङ्को चन्दिमा ससी[1] ।

सीतरंसि निसानाथो उडुराजा च मा पुमे ॥ ५२ ॥

चन्द्रकला १ कला सोळसमो भागो

मण्डल २ बिम्बं तु मण्डलं भवे ।

अंश ५ अड्ढो त्वड्ढो उपड्ढो च वा खण्डं सकलं पुमे ॥ ५३ ॥

समानांश १ अद्धं वुत्त समे भागे,

निर्मलता २ पसादो तु पसन्नता ।

चन्द्रज्योत्स्ना ३ कोमुदी चन्दिका जुण्हा,

चन्द्रकान्ति ४ कन्ति सोभा जुतिच्छवि ॥ ५४ ॥

चिह्न ७ कलङ्को लञ्छनं लक्खं[2] [2]अङ्कोऽभिञ्ञाणलक्खणं ।

चिह्नं[3] चापि[3],

परमशोभा १ सोभा तु परमा सुसमा* ऽथ च ॥ ५५ ॥

शीतल ३ सीत गुणे[4] गुणीलिङ्गा सीत[5]-सिसिर-सीतला[5] ।

तुषार ५ हिमं तुहिनमुस्सावो नीहारो महिकाप्यथ ॥ ५६ ॥

---

1. ससि–सी० ना० ।
2-2 लक्खमङ्को–सी० ।
3-3. चिण्ह चापि तु–ना० ।
4. गुणो–ना० ।
5-5. सीत सिसिर सीतल–ना० ।
* तु०—'सुषमा परमा शोभा'—अ० को० (१. ३. १७)

तारका ६ — नक्खत्तं जोति भं तारा अपुमे तारकोडु च ॥ ५७ ॥

नक्षत्र २७ — अस्सयुजो भरणित्थी कत्तिका[1] रोहिणी चेव ।
मिगसिर-मद्दा[2] च[3] पुनब्बसु फुस्सो चासिलेसा पि ॥ ५८ ॥
मघा च फग्गुनी द्वे च हत्थो चित्ता च साति पि ।
विसाखानुराधा जेट्ठा मूलाऽऽसाळ्हा दुवे तथा ॥ ५९ ॥
सवणो च धनिट्ठा च सतभिसजो पुब्बोत्तर-भद्दपदा ।
रेवत्यपीति कमतो सत्ताधिकवीस नक्खत्ता* ॥ ६० ॥

राहु २ — सोब्भानु कथितो राहु,

नवग्रह — सूरादी तु नवग्गहा ।

राशि १ — रासि मेसादिको,

पूर्वोत्तरभाद्रपद २ — भद्दपदा पोट्ठपदा समा ॥ ६१ ॥

सूर्य १९ — आदिच्चो सूरियो[4] सूरो सतरंसि दिवाकरो ।
वेरोचनो दिनकरो उण्हरंसि पभङ्करो ॥ ६२ ॥
अंसुमाली दिनपति तपनो रवि भानुमा ।
रंसिमाऽऽभाकरो भानु अक्को सहस्सरंसि च ॥ ६३ ॥

सूर्यकिरण १४ — रंसि चाऽऽभा पभा दित्ति रुचि भा जुति दीधिति ।
मरीचि द्वीसु भान्वंसु मयूखो किरणो करो ॥ ६४ ॥

---

1. स कत्तिका—सी०, ना० । 2. मगसिर०—सी०, मग्गसिर०—ना० ।
3. म० पोत्थके नत्थि । 4. सुरियो—ना० ।

* एत्थ नक्खत्तगणनायं 'अभिजित'नक्खत्तस्स नाम न गणितमाचरियेन; तस्सुत्तरासाढ-सवणनक्खत्तेस्वेवान्तोगधत्ता ।

रश्मिमण्डल २ — परिधी[1] परिवेसो,

मृगतृष्णा २ — ऽथ मरीचि मिगतण्हिका ।

अरुणोदय १ — सूरस्सोदयतो पुब्बुट्ठितरंसि सियाऽरुणो ॥ ६५ ॥

३. कालवग्गो

काल ४ — कालोऽद्धा समयो वेला,

तब्बिसेसा खणादयो ।

क्षण १ — खणो दसच्छरा कालो,

लय १ — खणा दस लयो भवे ॥ ६६ ॥

क्षणलय १ — लया दस खणलयो[2],

मुहूर्त १ — मुहुत्तो ते सिया दस ।

क्षणमुहूर्त १ — दस क्खणमुहुत्तो ते,

दिवस ३ — दिवसो तु अहं दिनं ॥ ६७ ॥

प्रभात ४ — पभातं च विभातं च पच्चूसो कल्लमप्यथ[3] ।

प्रदोष २ — अभिदोसो पदोसोऽथ,

सायङ्काल २ — सायो सञ्झा दिनच्चये ॥ ६८ ॥

रात्रि ५ — निसा च रजनी रत्ति तियामा संवरी भवे ।

शुक्लपक्षरात्रि १ — जुण्हा तु चन्दिकायुत्ता,

कृष्णपक्षरात्रि १ — तमुस्सन्ना तिमीसिका ॥ ६९ ॥

---

1. परिधि–इतिपि पाठो । 2. 'क्खणलयो'–इति सब्बत्थ ।
3. कल्ल अप्यथ–ना० ।

अर्धरात्रि ३ — निसीथो मज्झिमा रत्ति अड्ढरत्तो महानिसा ।

अन्धकार ४ — अन्धकारो तमो नित्थि तिमिसं तिमिरं मत ॥ ७० ॥

घोर अन्धकार — चतुरङ्गं तम एव काळपक्खचतुद्दसी ।

वनसण्डो घनो मेघपटल चड्ढरत्ति च* ॥ ७१ ॥

प्रगाढअन्धकार १ — अन्धन्तमं घनतमे,

पहारो यामसञ्ञितो ।

प्रतिपदादि तिथि १ — पाटिपदो तु दुतियाततियादि तिथी द्विसु ॥ ७२ ॥

पूर्णिमा तिथि ४ — पण्णरसी[1] पञ्चदसी पुण्णमासी तु पुण्णमा ।

अमावस्या ३ — अमावसी प्यमावासी थिय पण्णरसी परा ॥ ७३ ॥

अहोरात्र १ — घटिका सट्ठयहोरत्तो,

पक्ष १ — पक्खो ते दस पञ्च च[2] ।

पक्षद्वय १ — ते तु पुब्बापरा[3] सुक्ककाळा

मास १ — मासो तु ते दुवे ॥ ७४ ॥

१२ मास — चित्तो वेसाख[4] जेट्ठो चासाळ्हो द्वीसु च सावणो ।

पोट्ठपादास्सयुजा[5] च मासा द्वादस कत्तिको ॥ ७५ ॥

मागसिरो तथा फुस्सो कमेन माघफग्गुना ।

पश्चिम पूर्व कार्तिकमास — कत्तिकास्सयुजा मासा पच्छिम-पुब्बकत्तिका ॥ ७६ ॥

---

1 पन्नरसी–सी०, पण्णरसी–ना० ।   2–2. पञ्चस–ना० ।

3. पुब्बापरा–सी०; ना० ।   4. वेसाखो–म० ।

5. •स्सयुजा•–ना०, व०, एवमुपरि पि ।

* चतूहि कारणेहि गहनान्धकारो होति –१. काळपक्खचतुद्दसी वा होतु, २. वनसण्डो वा, ३. मेघपटलं वा, ४. अड्ढरत्ति वा होतू ति फुटो अत्थो ।

श्रावण मास १ सावणो[1] निक्खमणीयो,

चैत्रमास १ चित्तमासो तु रम्मको ॥ ७७ ॥

ऋतुत्रय चतुरो चतुरो मासा कत्तिककाळपक्खतो।

कमा हेमन्त-गिम्हान-वस्साना उतुयो द्विसु ॥ ७८ ॥

षडृतु हेमन्तो सिसिरमुतु[2] छ वा वसन्तो च गिम्ह-वस्साना।

सरदो ति कमा[3] मासा द्वे द्वे वुत्तानुसारेन ॥ ७९ ॥

ग्रीष्मर्तु ३ उण्हो निदाघो गिम्होऽथ[4],

वर्षर्तु ३ वस्सो वस्सान-पावुसा।

दक्षिणायन १ उतूहि तीहि वस्सानादिकेहि दक्खिणायनं ॥ ८० ॥

उत्तरायण १ उत्तरायणमञ्ञेहि[5] तीहि,

वर्ष १ वस्सोऽयनद्वय[6] ।

संवत्सर ५ वस्ससंवच्छरा नित्थी[7] सरदो हायनो समा ॥ ८१ ॥

कल्पक्षय ४ कप्पक्खयो तु संवट्टो युगन्त-पलया अपि।

४. अलक्खीवग्गो

अलक्ष्मी २ अलक्खी[8] काळकण्णीत्थी[9]

लक्ष्मी २ अथ लक्खी सिरीत्थिय ॥ ८२ ॥

---

1 सावनो—सी०। 2 सिसिर उतु—ना०।
3 कपा—ना०। 4. गिम्हेथ—ना०।
5. उत्तरायनमञ्ञेहि—म०, व०, उत्तरायण अञ्ञेहि—ना०।
6. थनद्वय—ना०। 7. नित्थि—ना०।
8. अल्लक्खी—ना०। 9. कालकण्णीत्थि—ना०, ब०।

दानवमाता १ — दनु दानवमाताथ;

देवमाता — देवमाता पनाऽदिति ॥ ८३ ॥

पाप १२ — पापं च किब्बिसं वेराऽघं दुच्चरितदुक्कतं।
अपुञ्ञाकुसलं कण्हं कलुसं[1] दुरिताऽऽगु च+ ॥ ८४ ॥

पुण्य ६ — कुसलं सुकतं सुक्कं पुञ्ञं धम्ममनित्थिय।
सुचरित[2]—

ऐहलौकिक ३ — मथो दिट्ठधम्मिकं चेहलोकिकं ॥ ८५ ॥
सन्दिट्ठिक[3]—

पारलौकिक २ — मथो पारलोकिकं सम्परायिकं।

वर्तमानकाल २ — तक्कालं तु तदात्तं,

भविष्यत्काल — चोत्तरकालो तु आयति* ॥ ८६ ॥

सन्तोष १३ — हासो ऽत्तमनता* पीति वित्ति तुट्ठि च नारियं।
आनन्दो पमुदाऽऽमोदा सन्तोसो नन्दि सम्मदो ॥ ८७ ॥
पामोज्जं च पमोदोऽथो,

सुख ३ — सुखं सातं च फास्वथ।

मङ्गल ७ — भद्दं सेय्यो सुभं खेमं कल्याणं मङ्गलं सिवं‡ ॥ ८८ ॥

---

1. कुलस–ना०। 2. सुचरित च–सी०, ना०।
3. सन्दिण्ठिको–सी०, ना०। 4. त्तमन्ता–ना०।

+ तु०—अ० को० (१. ४. २२.)

❀ तु० 'तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः'—अ० को० (२. ८. २९)

† तु०—अ० को० (१.४.२५-२६)

‡ तु०—'श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्'—अ० को० (१.४.२५)

दुःख ६	दुक्खं च कसिरं किच्छं नीघो च ब्यसनं[1] अघं।
	दब्बे तु पाप-पुञ्ञानि तीस्वाकिच्छ सुखादि च ॥ ८९ ॥
दैव ५	भाग्यं नियति भागो च भागधेय्यं विधीरितो[2]।
उत्पत्ति ५	अथो उप्पत्ति निब्बत्ति जाति जननमुब्भवो[3] ॥ ९० ॥
कारण १२	निमित्तं कारणं ठानं पदं बीजं निबन्धनं।
	निदानं पभवो हेतु सम्भवो हेतु पच्चयो ॥ ९१ ॥
आसन्न कारण १	कारण य समासन्न पदट्ठानं ति त मत।
आत्मा ३	जीवो तु पुरिसोऽत्ता,
प्रकृति २	ऽथ पधानं पकतीत्थिय ॥ ९२ ॥
प्राणी १३	पाणो सरीरी भूतं वा सत्तो देही च पुग्गलो।
	जीवो पाणी[4] पजा जन्तु जनो लोको तथागतो ॥ ९३ ॥
षडायतन	रूपं सद्दो गन्ध-रसा फस्सो धम्मो च गोचरो।
आलम्बन ५	आलम्बो विसयो तेजा[5]ऽऽरम्मणाऽऽलम्बनानि च ॥ ९४ ॥
शुक्लवर्ण ७	सुक्को गोरो सितोदाता धवलो सेतपण्डरा[6]।
रक्तवर्ण ६	सोणो तु लोहितो रत्तो तम्ब-मञ्जेट्ठ-रोहिता ॥ ९५ ॥
कृष्णवर्ण ७	नीलो कण्होऽसितो काळो मेचको सामसामला।
पाण्डुवर्ण १	सितपीते तु पण्डुत्तो
ईषत्पाण्डु १	ईस पण्डु तु धूसरो ॥ ९६ ॥

1. ब्यसन–सी०, ना०।
2. विधिरितो–ना०।
3. जनन उब्भवो–ना०।
4. पाणि–ना०।
5. तेछा–म०, व०।
6. सेतपण्डरो–सी०, ना०।

ईषद्रक्त १ अरुणो[1] किञ्चि रत्तोऽथ;

श्वेतरक्त १ पाटलो[1] सेतलोहितो ।

पीतवर्ण २ अथो पीतो[1] हलिद्दाभो[2][1],

हरितवर्ण ३ पलासो[1] हरितो[2] हरि[3] ॥ ९७ ॥

नीलपीतवर्ण ४ कळारो[1] कपिलो[2] नीलपीतेऽथ रोचनप्पभे ।

पिङ्गो[3] पिसङ्गो[4],

नानावर्णमिश्रित ३ ऽप्यथ वा कळारादी तु पिङ्गले ॥ ९८ ॥

कम्मासो[1] सबलो[2][2] चित्तो[3],

कृष्णपीत १ सावो[1] तु कण्हपीतके ।

वाच्चलिङ्गा गुणीनेते* गुणे सुक्कादयो पुमेβ ॥ ९९ ॥

९. नच्चवग्गो

नृत्य ५ नच्चं[1] नट्टं[2] च नटनं[3] नत्तनं[4] लासनं[5] भवे ।

नाट्य १ नच्च तु वादित गीतमिति[3] नाट्यमिद[1][4] तयं† ॥ १०० ॥

नृत्यस्थान १ नच्चट्ठान सिया रङ्गो[1],

अभिनय २ ऽभिनयो[1] सुच्चसूचनं[2][5] ।

अङ्गचालन २ अङ्गहारो[1]ऽङ्गविक्खेपो[2]‡,

नर्तक ३ नट्टको[1] नटको[2] नटो[3] ॥ १०१ ॥

---

1. हळिद्दाभो–सी०, ना० । 2. सबळो–सी० । 3 गीत इति–ना० ।
4. नाट्य इद–ना० । 5 सूच्चसूचन–सी०, ना० ।

* तु०–'वाच्यलिङ्गत्वमागुणात्'—अ. को० (१.५.१०)

β तु०–'गुणे शुक्लादय. पुंसि'—अ० को० (१.५.१७)

† तु०–'तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्'—अ० को० (१.७.१०)

‡ तु०–'अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः'—अ० को० (१.७.१६)

शृङ्गारादिरस ९ सिङ्गारो करुणो वीराऽब्भुत-हस्स-भयानका।
सन्तो बीभच्छ-रुद्दानि नव नाट्यरसा इमेβ ॥ १०२ ॥

शृङ्गार १ पोसस्स नारिय, पोसे इत्थिया सङ्कमम्पति।
या पिहा, एस सिङ्गारो रतिकीळादिकारणो ॥ १०३ ॥

द्विविध शृङ्गार उत्तमप्पकतिप्पायो इत्थी-पुरिसहेतुको।
सो सम्भोगो वियोगो ति सिङ्गारो दुविधो मतो ॥ १०४ ॥

६. गिरावग्गो

वाणी १२ भासितं लपितं भासा वोहारो वचनं वचो।
उत्ति वाचा गिरा वाणी भारती कथिता वची† ॥ १०५ ॥

वाक्य १ एकाख्यातो पदचयो सिया वाक्यं सकारको*।
आम्रेडित १ आमेण्डितं तु विञ्ञेय्य द्वित्तिक्खत्तुमुदीरणं‡ ॥ १०६ ॥

आम्रेडितप्रयोगस्थान भये कोधे पमसाय तुरिते कोतूहळच्छरे।
हासे सोके पमादे च करे आमेण्डित बुधो ॥ १०७ ॥

वेदत्रयगणन इरु नारि यजुस्साममिति वेदा तयो सियु।

β अमरकोसे पन सन्तरस वज्जित्वा अट्ठेव रस परिगणिता, यथा —
'शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्याभयानका।
बीभत्सरौद्रौ च रसा.'—इति अ० को० (१.७.१७)

† तु०—'व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वच '—अ० को० (१ ६ १), अथ वा—'भारती भाषा गीर्वाग्वाणी'—अ० को० (१.६.१.)।

* तु०—'तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता'—अ० को० (१.६ २)

‡ तु० 'आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तम्'—अ० को० (१ ६ १२)

वेदत्रयी १ — एते एव तयी नारी‡,

वेद ३ — वेदो मन्तो सुति त्थिय ॥ १०८ ॥

वेदप्रणेता मुनि १० — अट्ठको वामको वामदेवो चाङ्गीरसो भगु ।
यमदग्गि[1] च वासिट्ठो[2] भारद्वाजो च कस्सपो ।
वेस्सामित्तो ति मन्तान कत्तारो इसयो इमे ॥ १०९ ॥

वेदाङ्ग ६ — कप्पो ब्याकरणं जोतिसत्थं सिक्खा निरुत्ति च ।
छन्दोविचिति चेतानि वेदङ्गानि वदन्ति छ ॥ ११० ॥

इतिहास १ — इतिहासो पुरावुत्तप्पबन्धो भारतादिको ।

ओषधिशास्त्र १ — नामप्पकासक सत्थ रुक्खादीन निघण्डु सो ॥ १११ ॥

चार्वाकशास्त्र १ — वितण्डसत्थ विञ्ञेय्यं य त लोकायतं इति ।

काव्यशास्त्र १ — केटुभं तु क्रियाकप्पविकप्पो कविन हितो ॥ ११२ ॥

कथा २ — आख्यायिकोपलद्धत्था पबन्धकप्पना कथा ।

अर्थशास्त्र १ — दण्डनीत्यत्थसत्थस्मिं,

वार्ता २ — वुत्तन्तो[3] तु पवत्ति च ॥ ११३ ॥

नाम ९ — सञ्ञाऽऽख्याऽऽव्हा समञ्ञा चाऽभिधानं नाममव्हयो[4] ।
नामधेय्याऽधिवचनं,

प्रतिवाक्य २ — पटिवाक्यं तु चोत्तरं ॥ ११४ ॥

---

1 यमतग्गि–सी०, ना० । 2. वासेट्ठो–सी०, ना० ।
3 वुन्तन्तो–ना० । 4. नाम अव्हयो–ना० ।
‡ तु०–स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी’–अ० को० (१-६-३)

प्रश्न ३ पञ्हो तीस्वनुयोगो च पुच्छा,

दृष्टान्त ४ ऽप्यथ निदस्सनं।

उपोग्घातो च दिट्ठन्तो तथोदाहरणं भवे ॥ ११५ ॥

संक्षेप ४ समा संखेप-संहारा समासो सङ्गहोऽप्यथ।

मिथ्याभियोग १ सत धारयसीत्याद्यब्भक्खानं तुच्छभासन ॥ ११६ ॥

अभियोग २ वोहारो तु विवादो,

शपथ २ ऽथ सपनं सपथोऽपि च।

कीर्ति ३ यसो सिलोको कित्तित्थी,

घोषणा १ घोसना तुच्चसद्दन ॥ ११७ ॥

प्रतिध्वनि २ पटिघोसो पटिरवो,

कथनोपक्रम २ ऽथोपञ्ञासो वचीमुख।

श्लाघा ३ कत्थना च सिलाघा च वण्णना,

प्रशंसा ४ ऽथ नुति त्थुति ॥ ११८ ॥

थोमनं च पसंसा,

मयूरवाणी १ ऽथ केका नादो सिखण्डिन।

हस्तिनाद १ गजान कुञ्चनादो,

अश्वशब्द १ ऽथ मता हेसा हयद्धनि ॥ ११९ ॥

पर्याय २ परियायो वेवचनं,

धर्मकथा २ साकच्छा तु च सक्कथा।

निन्दा ७ उपवादो चुपक्कोसा वण्णवादाऽनुवादा च।

जनवादाऽपवादाऽपि परिवादो च तुल्यत्था ॥ १२० ॥

निन्दावाक्य ५ खेपो निन्दा तथा कुच्छा जिगुच्छा गरहा भवे ।

उपालम्भ १ निन्दापुब्बो उपारम्भो परिभासनमुच्चते ॥ १२१ ॥

अनार्यवचन १ अट्ठाऽनरियवोहारवसेन या पवत्तिता ।

अतिवाक्य सिया वाचा सा वीतिक्कमदीपनी ॥ १२२ ॥

वीप्सावचन १ मुहुम्भासाऽनुलापो,

वृथावचन १ ऽथ पलापोऽनत्थिका गिरा ।

प्रथमभाषण १ आदो भासनमालापो[1],

विलाप १ विलापो तु परिद्दवो ॥ १२३ ॥

विरुद्धोक्ति २ विप्पलापो विरोधोत्ति,

सन्देशकथन २ सन्देसोत्ति तु वाचिकं ।

सम्भाषण १ सम्भासन तु सल्लापो विरोधरहित[2] मिथु[2] ॥ १२४ ॥

कठोर वचन १ फरुसं निट्ठुर वाक्य,

युक्तियुक्त वचन १ मनुञ्ञ हदयङ्गमं ।

विरोधिवचन २ सङ्कुलं तु किलिट्ठं च पुब्बापरविरोधिनी ॥ १२५ ॥

निरर्थक वाक्य १ समुदायत्थरहित[3] अबद्धमिति[3] कित्तित ।

मिथ्यावाक्य २ वितथं तु मुसा चा-

ऽथ फरुसादी[4] तिलिङ्गिका ॥ १२६ ॥

---

1. भासन आलापो–ना० । 2–2. विरोधरहितमिति–ना० ।

3–3. ०रहितमबन्धमिति–म०, ०रहितमबद्ध इति–ना०, ०रहितमबद्धमिति–सी० ।

4 फरुसादि–सब्बत्थ ।

सच्चवाक्य ५ सम्माऽव्यय चाऽवितथं सच्चं तच्छं यथातथं ।

तब्बन्ता तीस्व-

मिथ्यावाक्य ४ लीकं[1] त्वसच्चं मिच्छा मुसाव्यय ॥ १२७ ॥

शब्द १६ रवो निनादो निनदो च सद्दो

निग्घोस नादद्धनयो[2] च रावो ।

आराव-संराव-विराव-घोसा-

रवा सुतित्थी सर निस्सनो च ॥ १२८ ॥

अष्टाङ्ग स्वर विस्सट्ठ-मञ्जु-विञ्ञेय्या सवनीया विसारिनो ।

बिन्दु गम्भीर निन्नादित्येवमट्ठङ्गिको[3] सरो ॥ १२९ ॥

तिर्यग्जातिशब्द १ तिरच्छानगतान हि रुत वस्सितमुच्चते ।

अव्यक्तोच्चैर्ध्वनि २ कोलाहलो कलकलो[4],

गान ३ गीतं गानं च गीतिका ॥ १३० ॥

वीणास्वरमण्डल मरा सत्त तयो गामा चेकवीसति मुच्छना ।

ठानानेकूनपञ्ञास इच्चेत सरमण्डलं ॥ १३१ ॥

सप्तस्वरपरिगणन उसभो धेवतो चेव छज्ज-गन्धार-मज्झिमा ।

पञ्चमो च निसादो ति सत्तेते गदिता सरा ॥ १३२ ॥

स्वरनिदर्शन नदन्ति उसभं गावो तुरगा धेवतं तथा ।

छज्जं मयूरा गन्धारं[5] अजा[5] कोञ्चा च मज्झिमं ॥ १३३ ॥

---

1. लिक—ना० । 2. नादद्धनियो—ना० ।
3. त्वेवपट्ठङ्गिको—ना०, त्येवमट्ठिङ्गिको—म० । 4. कलहलो—म० ।
5–5. 'गन्धारमजा'—इति सब्बपोत्थकेसु ।

पञ्चमं परपुट्ठादि निषादं पि च वारणा।

छज्जो च मज्झिमो गामा तयो साधारणो ति च ॥ १३४ ॥

स्थानभेदतःस्वरवर्णन सरेसु तेसु पञ्चेक[1] तिस्सो तिस्सो हि मुच्छना।

सियु तथेव ठानानि सत्त सत्तेव लब्भरे ॥ १३५ ॥

तिस्सो दुवे चतस्सो च चतस्सो कमतो सरे।

तिस्सो दुवे चतस्सो ति द्वावीसति सुती सियु ॥ १३६ ॥

अत्युच्चस्वर १ उच्चतरे रवे तारो,

अव्यक्तमधुरस्वर १ ऽथाव्यत्तमधुरे कलो।

गम्भीरस्वर १ गम्भीरे तु रवे मन्दो

मधुरस्वर तारादी[2] तीस्वयो कले ॥

मधुरसूक्ष्मध्वनि १ काकली सुखुमे वुत्तो,

लय १ क्रियादिसमता लयो ॥ १३७ ॥

वीणा २ वीणा च वल्लकी,

सप्ततन्त्रीविशिष्ट वीणा १ सत्ततन्ती सा परिवादिनी।

वीणा-वक्रकाष्ठ १ पोक्खरो दोणि वीणाय,

वीणावेष्टक १ उपवीणो तु वेठको ॥ १३८ ॥

पञ्चाङ्गिक तूर्य आततं चेव विततं[3] आततविततं[3] घनं।

सुसिरं चेति तूरिय[4] पञ्चङ्गिकमुदीरित ॥ १३९ ॥

आततवाद्यवर्णन आततं नाम चम्मावनद्धेसु भेरियादिसु।

तलेकेकयुत कुम्भथूणदद्दरिकादिकं ॥ १४० ॥

---

1. पञ्चेके–सी०, ना०। 2. तारादि–ना०।
3–3. विततमाततविततं–म०, सी०, ना०। 4. तुरिय–सी०, ना०।

विततवाद्य १	वितत[1] चोभयतल तूरिय मुरजादिक।
आततविततवाद्य १	आततवितत[1] सब्बविनद्ध पणवादिक ॥ १४१ ॥
छिद्रवाद्य १	सुसिर[1] वंस-सङ्खादि,
कांस्यवाद्य	सम्मातालादिक[1] घनं[1]।
वीणादि-चतुर्विध वाद्य ४	आतोज्जं[1] तु च वादित्तं[2] वादितं[3] वज्जमुच्चते[4] ॥ १४२ ॥
दुन्दुभि २	भेरि[2][1] दुन्दुभि[2] वुत्तोऽथ,
मृदङ्ग २	मुदिङ्गो[1] मुरुजो[2]ऽस्स तु।
मृदङ्गविशेष ३	आलिङ्ग[1]यङ्क[2]थोद्धका[3][3] भेदा,
वाद्यविशेष ४	तिणवो[1] तु च देण्डिमो[2] ॥ १४३ ॥
	आळम्बरो[3][4] च पणवो[4],
वीणादिवादनदण्ड १	कोणो[1] वीणादिवादन।
वाद्ययन्त्रविशेष ३	दद्दरी[1] पटहो[2][5] भेरिप्पभेदा मद्दला[3]ऽऽदयो ॥ १४४ ॥
मर्दनजनित गन्ध १	जनप्पिये विमद्दुत्थे गन्धे परिमलो[1] भवे।
दूरप्रसारी गन्ध १	सा त्वामोदो[1] दूरगामी* विस्सन्ता तीस्वितो पर ॥ १४५ ॥
सुगन्ध ४	इट्ठगन्धो[1] च सुरभि[2][6] सुगन्धो[3] च सुगन्धि[4] च।
दुर्गन्ध २	पूतिगन्धि[1] तु दुग्गन्धो[2],
आमगन्ध १	ऽथ विस्सं[1] आमगन्धिय ॥ १४६ ॥

---

1 सम्मतालादिक—सी०, ना०। 2. भेरी—म०। 3. आलिङ्ग क्यो०—सब्बत्थ। 4. आलम्बरो—म०। 5 पटहो—ना०। 6. सुरभी—म०, ना०।

* तु०—'विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे। आमोद. सोऽतिनिर्हारी'— अ० को० (१ ५ १०)

कुंकुमादिगन्ध ४ कुंकुमं चेव यवनपुप्फं च तगरं[1] तथा।
तुरुक्खो ति चतुज्जातिगन्धा एते पकासिता ॥ १४७॥

षड्रसवर्णन कसावो नित्थिय तित्तो मधुरो लवणो इमे।
अम्बिलो कटुको चेति छ रसा तब्बती तिसु ॥ १४८॥

स्पर्शनेन्द्रिय २ सिया फस्सो च फोट्ठब्बो,

इन्द्रिय ३ विसयी त्वक्खमिन्द्रियं।

चक्षु ६ नयनं त्वक्खि नेत्तं च लोचनं चाक्खि चक्खु च ॥ १४९ ॥

कर्ण ५ सोतं सद्दग्गाहो[2] कण्णो सवनं सुति,

नासिका ४ नत्थु तु।
नासा च नासिका घानं,

जिह्वा २ जिव्हा तु रसना भवे ॥ १५० ॥

शरीर १० सरीरं वपु गत्तं चाऽत्तभावो वोन्दि विग्गहो।
देहं वा पुरिसे कायो थिय[3] तनु कळेवरं[4] ॥ १५१ ॥

मन ६ चित्तं चेतो मनो नित्थि विञ्ञाणं हृदयं तथा।
मानसं,

बुद्धि १४ धी तु पञ्ञा च बुद्धि मेधा मतिमुती ॥ १५२ ॥
भूरि[5] मन्ता च पञ्ञाणं ञाणं विज्जा च योनि च।
पटिभानममोहो,

प्रज्ञाभेद २ ऽथ पञ्ञाभेदा विपस्सना ॥ १५३ ॥

---

1. नगर—ना०। 2. सद्दगहो-ना०। 3. थिय—सी०, ना०।
4. कलेवर—ना०। 5. भूरी—सी०, ना०।

सम्मादिट्ठिप्पभुतिका[1],

मीमांसा १ — वीमंसा तु विचारणा।

इष्टानिष्टचिन्तन-प्रज्ञा २ — सम्पजञ्ञं तु नेपक्कं,

सुखदुःखानुभव २ — वेदयितं तु वेदना ॥ १५४ ॥

सङ्कल्प ५ — तक्को वितक्को सङ्कप्पोऽप्पनोहा-

आयु २ — ऽऽयु तु जीवितं।

एकाग्रता ४ — एकग्गता तु समथो अविक्खेपो समाधि च ॥ १५५ ॥

उत्साह १० — उस्साहाऽऽतप्पपग्गाहा वायामो च परक्कमो।
पधानं विरियं चेहा उय्यामो च धितीत्थिय ॥ १५६ ॥

चतुर्विध-वीर्याङ्गवर्णन — चत्तारि विरियङ्गानि तचस्स च नहारुनो।
अवसिस्सनमट्ठिस्स मंसलोहितसुस्सनं ॥ १५७ ॥

उत्साहातिशय १ — उस्सोळ्हि[2] त्वधिमत्तेहा,

स्मृति २ — सति त्वनुस्सति त्थिय।

लज्जा २ — लज्जा हिरि समाना,

पापभय २ — ऽथ ओत्तप्पं पापभीरुता ॥ १५८ ॥

मध्यस्थता ३ — मज्झत्तता तुपेक्खा च अदुक्खमसुखा सिया।

सुखादि-चित्त-तत्परता २ — चित्ताभोगो मनक्कारो*,

अधिमोक्ष — अधिमोक्खो तु निच्छयो ॥ १५९ ॥

---

1. ०प्पभूतिका—ना०, ०पभुतिका—म०। 2. उस्सोळ्ही—म०।
* 'चित्ताभोगो मनस्कार.'—अ० को० (१.५.२)

करुणा ५ — दयाऽनुकम्पा कारुञ्ञं करुणा च अनुद्दया ।

विरति ३ — थियं वेरमणी[1] चेव विरत्यारति चाऽथथ ।। १६० ।।

क्षमा ४ — तितिक्खा खन्ति खमनं खमा,

मैत्री २ — मेत्ता तु मेत्त्यथ ।

सिद्धान्त ५ — दस्सनं दिट्ठि लद्धीत्थी[2] सिद्धन्तो समयो भवे ।। १६१ ।।

इच्छा २५ — तण्हा च तसिणा एजा जालिनी च विसत्तिका ।

छन्दो जटा निकन्त्यासा सिब्बिनी[3] भवनेत्ति च ।। १६२ ।।

अभिज्झा वनथो वानं लोभो रागो च आलयो ।

पिहा मनोरथो इच्छाऽभिलासो काम-दोहळा ।।

आकङ्खा रुचि वुत्ता,

अत्यन्तस्पृहा २ — सा त्वधिका लालसा द्विसु ।। १६३ ।।

वैर ३ — वेरं विरोधो विद्देसो,

क्रोध ६ — दोसो च पटिघं च वा ।

कोधाऽऽघाता कोप-रोसा,

परद्रोह २ — ब्यापादोऽनभिरद्धि च ।। १६४ ।।

चिरवैर १ — बद्धवेरमुपनाहो[4],

शोक २ — सिया सोको तु सोचनं ।

रोदन ५ — रोदितं कन्दितं रुण्णं परिदेवो परिद्दवो ।। १६५ ।।

---

1. वेरमणि—ना० ।
2. लद्धित्थी—सी०; लद्धित्थि—ना० ।
3. सिब्बनी—सी०, ना० ।
4. बद्धवेर उपानाहो—ना० ।

भय ३ — भीतित्थी[1] भयमुत्तासो[2],

महाभय १ — भेरवं तु महब्भयं ॥ १६६ ॥

भयानक ९ — भेरवं भिसनं भीमं दारुणं च भयानकं।
घोरं पटिभयं भेस्मं भयङ्करमिमे[3] तिसु ॥ १६७ ॥

ईर्ष्या २ — इस्सा उसूया[4],

मात्सर्य ३ — मच्छेरं तु मच्छरिय-मच्छरं।

अविद्या ३ — मोहोऽविज्जा तथाऽञ्ञाणं[5]

मान ३ — मानो विधा च उन्नति[6] ॥ १६८ ॥

औद्धत्य २ — उद्धच्चमुद्धट,

पश्चात्ताप ५ — चाथ तापो कुक्कुच्चमेव[7] च।
पच्छातापोऽनुतापो च विप्पटिसारो पकासितो ॥ १६९ ॥

संशय ९ — मनोविलेख[8] सन्देहो संसयो च कथङ्कथा।
द्वेळ्हकं विचिकिच्छा च कङ्खा सङ्का विमत्यपि ॥ १७० ॥

अहङ्कार ३ — गब्बोऽभिमानोऽहङ्कारो,

चिन्तन २ — चिन्ता तु झानमुच्चते[9]।

निश्चय २ — निच्छयो निण्णयो वुत्तो,

प्रतिवाक्य २ — पटिञ्ञा तु पटिस्सवो ॥ १७१ ॥

---

1. भीतिथि–सी०, म०।
2. भय उत्तासो–ना०।
3. भयङ्कर इमे–ना०।
4. उस्सुया–म०।
5. तथा ञाण–म०, ना०।
6. उण्णति–ना०।
7. कुक्कुच्च एव–ना०।
8. मनोविलेखो–इति तूचितो पाठो।
9. झान उच्चते–ना०।

अवज्ञा ६ अवमानं तिरोक्कारो परिभवोऽप्यनादरो ।
पराभवोऽप्यवज्ञा;

उन्माद २ ऽथ उम्मादो चित्तविब्भमो[1] ॥ १७२ ॥

स्नेह ३ पेमं सिनेहो स्नेहो,

मनःपीडा २ ऽथ चित्तपीळाऽऽधिसञ्जिता[2] ।

प्रमाद २ पमादो सतिवोस्सग्गो,

कुतूहल २ कोतूहल-कुतूहलं[3] ॥ १७३ ॥

विलास ६ विलासो ललितं लीला हावो हेला च विब्भमो ।
इच्चादिका सियु [4]नारीसिङ्गारभावजा क्रिया ॥ १७४ ॥

हास्य ३ हसनं हसितं हासो,

मन्दहास्य २ मन्दो सो मिहितं सितं ।

अट्टहास्य २ अट्टहासो महाहासो,

रोमाञ्च २ रोमञ्चो लोमहसनं ॥ १७५ ॥

परिहास ६ परिहासो दवो खिड्डा [5]केळि कीळा च कीळितं ।

निद्रा ५ निद्दा तु सुपिनं सोप्प मिद्धं च पचलायिका ॥ १७६ ॥

शाठ्य ५ थिय निकति कूटं च दम्भो सठ्यं च केतवं ।

स्वभाव ७ सभावो तु निसग्गो च सरूप पकतीत्थिय ॥ १७७ ॥

1. चित्तविम्भमो–ना० ।
2. ० विसञ्जिता–सी, ना० ।
3. कोतूहळ कुतूहळ–म०, सी० ।
4. नारि०–म० ।
5. केलि–ना० ।

सीलं[५] च लक्खणं[६] भावो[७];

उस्सव ३ — उस्सवो[१] तु छणो[२] महो[३] [1] ॥ १७८ ॥

ग्रन्थमाहात्म्य — धारेन्तो जन्तु सस्नेहमभिधानप्पदीपिकं ।

खुद्दकाद्यत्थजातानि सम्पस्सति यथासुखं ॥ १७९ ॥

❀ सग्गकण्डो[2] पठमो निट्ठितो[2] ❀

1. मतो--म० ।

2–2. सग्गकण्डो पठमो–म० ।

दुतियो भूकण्डो

वग्गा भूमि-पुरी-मच्च-चतुब्बण्णवनादिहि।

पातालेन च वुच्चन्ते[1] [1]साङ्गोपाङ्गेहि धक्कमा ॥ १८० ॥

१. भूमिवग्गो

पृथ्वी १९ — वसुन्धरा छमा भूमि [2]पठवी मेदिनी[3] मही।

उब्बी वसुमती गो कु वसुधा धरणी धरा ॥ १८१ ॥

पुथवी[4] जगती भूरी भू च भूतधराऽवनी।

क्षारमृत्तिका १ — खारा तु मत्तिका ऊसो,

क्षारभूमि २ — ऊसवा तूसरो तिसु ॥ १८२ ॥

स्थल २ — थलं थलीत्थि,

जङ्गल १ — भूभागे थद्ध-लूखम्हि जङ्गलो।

पूर्वविदेहादि महाद्वीप ४ — पुब्बविदेहो चाऽपरगोयानं जम्बुदीपो च ॥

उत्तरकुरु चेति सियु चत्तारोमे महादीपा[5] ॥ १८३ ॥

देश २१ — पुम्बहुत्ते कुरू सक्का कोसला मगधा सिवा[6]।

कालिङ्गाऽवन्ति-पञ्चाला वज्जी गन्धार-चेतयो ॥ १८४ ॥

---

1 ०सोङ्गो–ना०, उच्चन्ते०–सी०। 2. पथवी–म०।
3. मेदनी म०। 4 पुथुवी–सी०, ना०।
5. महादिपा–ना०। 6. सिवि–म०।

वङ्गा विदेह-कम्बोजा मद्दा भग्गाऽङ्गसीहळा ।

कस्मीरा कासि-[1]पण्डूवाऽऽदी सियु जनपदन्तरा ॥ १८५ ॥

लोक २ — लोको च भुवनं वुत्त,

देश २ — देसो तु विसयोऽप्यथ ।

म्लेच्छदेश २ — मिलक्खदेसो पच्चन्तो,

मध्यदेश २ — मज्झदेसो तु मज्झिमो ॥ १८६ ॥

जलबहुलदेश २ — अनूपो सलिलप्पायो कच्छं पुम-नपुंसके ।

हरिततृणप्रदेश १ — सद्दलो हरिते देसे तिणेनाभिनवेन हि* ॥ १८७ ॥

नदीजल, मेघजल जीवित देश १-१ — नद्यम्बुजीवनो देसो वुट्ठिनिप्पज्जसस्सको ।

यो नदीमातिको देवमातिको च कमेन सो* ॥ १८८ ॥

शाश्वत देश १ — तीस्वनूपाद्यथो चन्द सूरादो सस्सतीरितो ।

राष्ट्र २ — रट्ठं तु विजितं चा-

सेतु १ — थ पुरिसे सेतु आलिय ॥ १८९ ॥

नगरबहिर्देश १ — उपान्तभू परिसरो,

गोष्ठ ३ — गोट्ठं तु गोकुलं वजो ।

मार्ग ११ — मग्गो पन्थो पथो चाऽद्धा[2] अञ्जसं वटुमं तथा ॥ १९० ॥

पज्जोऽयनं च पदवी वत्तनी पद्धतीत्थिय ।

---

1. पण्डवा–ना० । 'पण्ड्या' इति नूचितो पाठो ।

2. अद्धा–म० ।

* तु०–अ० को० (२.१ ११-१२)

मार्गभेद २	तब्भेदा जङ्घ[1]-सकटमग्गा[2] तेऽथ मताऽद्धनि[1] ॥ १९१ ॥
पगडण्डी १	एकपद्ये[1]कपदिके,
दुर्गमपथ १	कन्तारो[1] तु च दुग्गमे ।
विरुद्धपथ २	पटिमग्गो[1] पटिपथो[2],
दीर्घपथ १	अद्धानं[1] दीघमञ्जस ॥ १९२ ॥
सुपथ २	सुप्पथो[1] तु सुपन्थो[2] च,
उत्पथ २	उप्पथं[1] त्वपथं[2] भवे ॥ १९३ ॥
अणु १	छत्तिस परमाणूनमेक'ऽणु[1] छत्तिस[2] ते ।
तज्जारी १	तज्जारी[1],
रथरेणु १	ताऽपि छत्तिस रथरेणु[1], छत्तिस[3] ते ॥ १९४ ॥
लिक्खा १	लिक्खा[1],
ऊका १	ता सत्त ऊका[1],
धान्यमाष १	ता धञ्ञमासो[1] ति सत्त, ते ।
अङ्गुल १	सत्ताङ्गुलं[1],
विहस्त १	अमूद्विच्छ विदत्थि[1][4];
हस्तपरिमाण १	ता दुवे सियु ॥ १९५ ॥

1. मतद्धनि–सी०, ना० ।
2. च छत्तिस–म० ।
3. च्छत्तिस–सी० ।
4. विदत्थी–सी०, ना० ।

रतनं;

यष्टि १ तानि सत्तेव यट्ठि;

ऋषभ १ ता वीसतूसहं।

गव्यूति १ गावुतमुसभासीति[1],

योजन १ योजनं चतुगावुतं ॥ १९६ ॥

क्रोश १ धनुपञ्चसतं कोसो,

करीष १ करीसं चतुरम्बणं।

आभ्यन्तर १ अब्भन्तरं तु हत्थानमट्ठवीसप्पमाणतो[2] ॥ १९७ ॥

भूमिवग्गो निट्ठितो

●

२. पुरवग्गो

नगर ५ पुरं नगरमित्थी वा ठानीयं पुटभेदनं।

थियं तु राजधानी च,

शिविर १ खन्धावारो भवेऽथ च ॥ १९८ ॥

उपनगर १ साखानगरमञ्ञत्र यन्तं मूलपुरा पुरं।

प्राचीननगर २० बाराणसी च सावत्थि वेसाली मिथिलाऽऽळवी ॥ १९९ ॥

कोसम्बुज्जेनियो[3] तक्कसिला चम्पा च सागलं।

सुंसुमारगिरं[4] राजगहं कपिलवत्थु च ॥ २०० ॥

---

1. गावुत उसभा०—ना०।
2. ० वीसपमाणतो—म०।
3. कोसम्बू०—सी०, ना०।
4. ससुमारगिर—म०।

साकेतं इन्दपत्तं चोक्कट्ठा पाटलिपुत्तकं।
जेतुत्तरं तु सङ्कस्सं कुसिनाराऽऽदयो पुरी ॥ २०१ ॥

रथ्या ४ — रच्छा च विसिखा वुत्ता रथिका वीथि चाप्यथ।

चतुष्पथ १ — व्यूहो रच्छा अनिब्बिद्धा,

एकपथ १ — निब्बिद्धा तु पथद्धि च ॥ २०२ ॥

चतुष्क (चौराहा) २ — चतुक्कं चच्चरे मग्गसन्धि सिङ्घाटकं भवे।

प्राकार २ — पाकारो वरणो चा-

विश्रामगृह २ — ऽथ उद्दापो उपकारिका ॥ २०३ ॥

भित्ति २ — कुड्डं[1] तु भित्ति नारी,

नगरसिंहद्वार २ — थ गोपुर-द्वारकोट्ठको।

प्रस्तरस्तम्भ २ — एसिका इन्दखीलो च,

अट्टालिका २ — अट्टो त्वट्टालको भवे ॥ २०४ ॥

प्रधानद्वार २ — तोरणं तु बहिद्वारं;

परिखा २ — परिखा तु च दीघिका[2]।

गृह २४ — मन्दिरं सदनाऽऽगारं निकायो निलयाऽऽलयो ॥ २०५ ॥
आवासो भवनं वेस्मं निकेतन-निवेसनं[3]।
घरं गहं चाऽऽवसथो सरणं च पतिस्सयो ॥ २०६ ॥

---

1. कुट्ट—म०।
2. दिग्घिका—सी०, ना०।
3. निकेतन०—म०।

१७ १८ १९ २० २१ २२
ओकं साला खयो वासो थिय कुटि वसत्यपि।

२३ २४
गेहं चानित्थि सदुमं,

देवालय २ — चेतियाऽऽयतनानि [१][२] तु ॥२०७॥

राजभवन ३ — पासादो[१] चेव यूपोऽथ[२] मुण्डच्छदो[३][1] च हम्मिय[1]।

हस्तिनख (गृह-विशेष) १ — यूपो तु गजकुम्भम्हि हत्थिनखो[१] पतिट्ठितो ॥२०८॥

गरुडपक्षसमगृह १ — सुपण्णवङ्कसदनमड्डयोगो[१][2] सियाऽथ च।

एकाच्छादनगृह १ — एककुटयुतो माळो[१][3],

प्रासाद १ — पासादो[१] चतुरस्सको ॥२०९॥

सभाभवन १ — सभाय च सभा[१] चाऽथ,

मण्डप — मण्डपं[१] वा जनालयो।

अथो आसनसालाय पटिक्कमनमीरित[१] ॥२१०॥

बुद्धवासभवन १ — जिनस्स वासभवनमित्थी गन्धकुटी[१] ऽयथ।

पाकशाला ३ — थिय रसवती[१] पाकट्ठानं[२] चेव महानसं[३] ॥२११॥

शिल्पशाला २ — आवेसनं[१] सिप्पसाला[२],

मधुशाला १ — सोण्डा[१] तु पानमन्दिरं।

शौचालय १ — वच्चट्ठान वच्चकुटी[१],

मुनिनिवास १ — मुनीन ठानमस्समो[१] ॥२१२॥

क्रयविक्रयस्थान २ — पण्यविक्कयसाला तु आपणो[१] पण्यवीथिका[२]।

1-1 ०सहम्मिय—सी०, मुद्धच्छदो सहम्मिय—ना०।

2. ०मड्डयोगो०—सी०, ना०। 3. मालो—ना०।

भाण्डागार १ उद्दोसितो[1] भण्डसाला;

चंक्रमणगृह १ चङ्कमनं[1] तु चङ्कमो[1] ॥ २१३ ॥

अग्निशाला १ जन्ताघरं[1] त्वग्गिसाला,

पानीयशाला १ पपा[1] पानीयसालिका ।

प्रकोष्ठ २ गब्भा[1] ओवरको[2],

शयनगृह २ वासागारं[1] तु सयनिग्गहं[2] ॥ २१४ ॥

अन्तःपुर ४ इत्थागारं[1] तु ओरोधो[2] सुद्धन्तोऽन्तेपुरं[3] पि[4] च ।

राजगुह्यगृह १ असब्बविसयट्ठान रञ्ञ कच्छन्तरं[1] मत ॥ २१५ ॥

नि श्रेणि ४ सोपानो[1] वाऽऽरोहणं[2] च निस्सेणी[3] साऽधिरोहणी[4] ।

गवाक्ष ५ वातपानं[1] गवक्खो[2] च जालं[3] च सीहपञ्जरं[4][2] ॥ २१६ ॥

आलोकसन्धि[5] वुत्तो-

अर्गला २ ऽथ लङ्गीत्थी[1] पलिघो[2] भवे ।

अर्गलास्तम्भ २ कपिसीसोऽग्गळत्थम्भो[1][2][3],

छादनकुटी १ निब्बं[1] तु छद्दकोटिय ॥ २१७ ॥

तृणच्छदन ३ छदनं[1] पटलं[2] छदं[3],

प्राङ्गण ३ अजिरं[1] चच्चराऽङ्गणं[2][3][4] ।

गृहसम्मुखस्थ चत्वर ५ पघाणो[1] पघणाऽलिन्दा[2][3] पमुखं[4][5] द्वारबन्धनं[5] ॥ २१८ ॥

---

1. चङ्कमण—सी०, ना० ।
2. पञ्जर—ना० ।
3. ग्गळत्थम्भो—ना० ।
4. ० ङ्गन—म० ।
5. पमुख—सी० ना० ।

बहिद्वारप्रकोष्ठ ३ — पिट्ठं[1] सङ्घाटक[1]-द्वारबाहा,

गृहकूट २ — कूटं तु कण्णिका ।

द्वार २ — द्वारं च पटिहारो-

देहली २ — ऽथ उम्मारो देहली[2] त्थिय ॥ २१९ ॥

स्तम्भ ४ — एलको[3] इन्दखीलो ऽथ थम्भो थूणो पुमित्थिय ।

इन्दुपाषाण १ — पाटिका ऽद्धेन्दुपासाणे[4],

इष्टका २ — गिञ्जका तु च इट्ठका ॥ २२० ॥

स्थूणा १ — बलभिच्छादिदारुम्हि वङ्के गोपानसीत्थिय ।

कपोतगृह १ — कपोतपाल्किाय तु विटङ्को नित्थिय भवे ॥ २२१ ॥

कुञ्चिकाछिद्र २ — कुञ्चिकाविवर ताळच्छिग्गलो[5]ऽप्य-

कुञ्चिका ३ — थ कुञ्चिका ।

ताळो[6]ऽवापुरणं चा-

वेदी २ — ऽथ वेदिका वेदि कथ्यते ॥ २२२ ॥

गृहाङ्ग २ — सङ्घाटो पक्खपासो च मन्दिरङ्गा,

तुला १ — तुला अपि ।

सम्मार्जनी ३ — थिय सम्मुञ्जनी चेव समज्जनी च सोधनी ॥ २२३ ॥

1–1 पिट्ठसङ्घाटक—म० ।

2. म० पोत्थके 'देहनी' ति पि पाठो । 'देहिनी'—सी० ।

3. एळको—सी० ।

4. अत्थेन्दुपासाणो—ना० ।

5. तालच्छिग्गलो—सी०, तालच्छीग्गलो—ना० ।

6. तालो—सी०, ना० ।

अवकर (कूड़ा) ३ सङ्कटीरं तु[1] सङ्कारधानं सङ्कारकूटकं।

धूलि ४ अथो कचवरोक्लापो[2] सङ्कारो च कसम्बु पि॥ २२४॥

वास्तुभूमि १ घरादि भूमत वत्थु;

ग्राम २ गामो संवसथोऽथ सो।

नगर १ पाकटो निगमो भोगमच्चादिभ्यो[3],

सीमा ३ ऽधिभूरिता[4] ॥ २२५॥

सीमा च मरियादाऽथ,

गोपालग्राम २ घोसो गोपालगामको॥ २२६॥

पुरवग्गो निट्ठिता

●

३. नरवग्गो

मनुष्य १० मनुस्सो मानुसो मच्चो मानवो[5] मनुजो नरो।

पोसो पुमा च पुरिसो पोरिसो,

पण्डित २४ ऽथ पण्डितो॥ २२७॥

बुधो विद्वा विभावी च सन्तो सप्पञ्ञ-कोविदा[6]।

धीमा सुधी कवी व्यत्तो[7] विचक्खण-विसारदा[8]॥ २२८॥

---

1 च—म०।
2. ऽकलापो—ना०।
3. भोगमच्चादिभ्यो—ना०।
4. ० तुदितो—सी०, ना०।
5. माणवो—सी०।
6. कोविदो—ना०।
7. ब्यत्तो—सी०, ना०।
8. विचक्खणो विसारदो—म०।

१४ १५ १६ १७ १८ १९
मेधावी मतिमा पञ्ञो विञ्ञू च विदुरो विदू।
२० २१ २२ २३ २४
धीरो विपस्सी दोसञ्ञू बुद्धो च दब्बविद्दसु ॥ २२९ ॥

स्त्री १५
१ २ ३ ४ ५ ६ ७
इत्थी सीमन्तिनी नारी थी वधू वनिताऽङ्गना।
८ ९ १० ११ १२ १३
पमदा सुन्दरी कन्ता रमणी दयिताऽबला ॥ २३० ॥
१४ १५
मातुगामो च महिला,

कामिनी स्त्री ३
१ २ ३
ललना भीरु[1] कामिनी।

कुमारी १
१
कुमारिका तु कञ्ञा-

युवती १
१
ऽथ युवती[2] तरुणी[2] भवे ॥ २३१ ॥

पट्टाभिषिक्ता १
१
महेसी साभिसेकञ्ञा,

राज्ञी १
१
भोगिनी राजनारियो।

अभिसारिका १
१
धवत्थिनी[3] तु सकेत याति या साऽभिसारिका ॥ २३२ ॥

वेश्या ६
१ २ ३ ४
गणिका वेसिया वण्णदासी नगरसोभिनी।
५ ६
रूपूपजीविनी वेसी,

कुलटा २
१ २
कुलटा तु च बन्धकी ॥ २३३ ॥

उत्तमस्त्री ४
१ २ ३ ४
वरारोहोत्तमा मत्तकासिनी वरवण्णिनी।

पतिव्रता २
पतिब्बता त्वपि सती,

कुलस्त्री २
१ २
कुलित्थी कुलपालिका ॥ २३४ ॥

विधवा १
१
विधवा पतिसुञ्ञा-

---

1 भीरू—म० ।

2–2 तरुणी युवती—ना० ।

3. धवत्थिनी—ना० ।

स्वयंवरा २ ऽथ पतिंवरा सयंवरा।

प्रसूता ४ विजाता तु पसूता च जातापच्चा पसूतिका ॥ २३५ ॥

दूती २ दूती सञ्चारिका,

दासी ३ दासी तु चेटी कुलधारिका।

शुभाशुभज्ञा २ वारुणीक्खणिका तुल्या,

क्षत्रियाणी २ खत्तियानी तु खत्तिया ॥ २३६ ॥

पत्नी ९ दारो जाया कलत्तं[1] च घरणी भरिया पिया।

पजापती च दुतिया सा पादपरिचारिका ॥ २३७ ॥

सखी ३ सखी त्वाली[2] वयस्सा-

व्यभिचारिणी २ ऽथ जारी[3] चेवाऽतिचारिणी[4]।

स्त्रीरज ३ पुमे उतु रजो पुप्फं

रजस्वला ३ उतुनी तु रजस्सला ॥ २३८ ॥

पुप्फवती,

गर्भवती ३ गरुगब्भाऽऽपन्नसत्ता च गब्भिनी।

गर्भाशय २ गब्भासयो जलाबू पि[5],

गर्भ १ कललं पुन्नपुंसके ॥ २३९ ॥

---

1. कळत्त–सी०।
2. ऽली–ना०।
3. जारि–ना०।
4. ० भिचारिणी–ना०।
5. च–ना०।

पति ७ — धवो तु सामिको भत्ता कन्तो पति वरो पियो ।

उपपति २ — अथोपपति जारो-

पुत्र ७ — ऽथापच्चं[1] पुत्तोऽत्तजो[2] सुतो ॥ २४० ॥

तनुजो तनयो सूनु,

पुत्रादि धीतरित्थिय ।

पुत्री २ — नारिय दुहिता धीता,

स्वपुत्र १ — सञ्जाते त्वोरसो सुतो ॥ २४१ ॥

दम्पती ४ — जायापति जानिपति जयम्पति तुदम्पति[3] ।

नपुंसक ३ — अथ वस्सवरो वुत्तो पण्डको च नपुंसकं ॥ २४२ ॥

स्वजन ३ — बन्धवो बन्धु सजनो,

सगोत्रो ञाति ञातको ।

सगोत्र ५ — सालोहितो सपिण्डो च,

पिता ३ — तातो तु जनको पिता ॥ २४३ ॥

माता ६ — अम्माऽम्बा जननी माता जनेत्ती जनिका भवे ।

उपमाता २ — उपमाता तु धातीत्थी,

पत्निभ्राता १ — सालो जायाय भातिको ॥ २४४ ॥

ननान्दा २ — ननन्दा सामिभगिनी,

मातामही २ — मातामही तु अय्यका ।

---

1 य पच्च–म० । 2. ० त्रजो–सी०, म० ।
3. तु दम्पति–सी०, ना० ।

मातुल १	मातुलो[1] मातुभाता;
मातुलानी १	ऽस्स मातुलानी[1] पजापती[1] ॥ २४५ ॥
श्वश्रू १	जायापतीन जननी सस्सु[1] वुत्ता-
श्वसुर १	थ तप्पिता ।
	ससुरो[1],
भागिनेय १	भागिनेय्यो[1][2] तु पुत्तो भगिनिया[3] भवे ॥ २४६ ॥
पौत्र २	नत्ता[1] वुत्तो पपुत्तो[2]-
पतिभ्राता १	ऽथ सामिभाता[4] तु देवरो[1] ।
जामाता १	धीतुपति तु जामाता[1],
पितामह २	अय्यको[1] तु पितामहो[2] ॥ २४७ ॥
मातृभगिनी १	मातुच्छा[1] मातुभगिनी,
पितृभगिनी १	पितुच्छा[1] भगिनीपितु ।
प्रपितामह २	पपितामहो[1] पय्यको[2] तु,
पुत्रवधू ३	सुण्हा[1] तु सुणिसा[2] हुसा[3] ॥ २४८ ॥
सहोदर ४	सोदरियो[1] सगब्भो[2] च सोदरो[3] सहजोऽ[4]प्यथ ।
मातापिता १	मातापितू ते पितरो[1],
पुत्रपुत्री १	पुत्ता[1] तु पुत्तधीतरो ॥ २४९ ॥

---

1. पजापति—सी० ।
2. भगिनेय्यो—ना० ।
3. भागिनिया—ना० ।
4. स्वामिभाता—ना० ।

श्वश्रूश्वसुर १ ससुरा सस्सुससुरा,

मातृभगिनी १ मातुभगिनि[1] भातरो ।

बाल्य ३ बालत्तं बालता बाल्यं,

यौवन २ योब्बञ्ञं[2] तु च योब्बनं ॥ २५० ॥

श्वेतकेश १ सुक्का तु पलितं केसादयो[3]-

जरा २ ऽथ जरता जरा ।

बालक ६ पुथुको पिल्लको छापो कुमारो बालपोतको ॥ २५१ ॥

शिशु १ [4]अथोत्तानसयोत्तानसेय्यको थनपोऽपि च ॥ २५२ ॥

तरुण ७ तरुणो च वयट्ठो च दहरो च युवा सुसु ।
माणवो दारको चा-

सुकुमार २ थ सुकुमारो[5] सुखेधितो ॥ २५३ ॥

वृद्ध ५ महल्लको च बुद्धो[6] च थेरो जिण्णो च जिण्णको ।

ज्येष्ठ ३ अग्गजो पुब्बजो जेट्ठो,

कनिष्ठ ३ कनिट्ठो[7] कनियो[7] ऽनुजा ॥ २५४॥

अतिवृद्ध २ वलित्तचो तु वलिनो,

तीसूत्तानसयादयो ॥ २५५ ॥

---

1 भगिनी—ना० ।
2 योब्बञ्ज—ना० ।
3. ना० पोत्थके नत्थि ।
4 अथुत्तान०—म० ।
5 सुखुमालो—इति पि पाठो ।
6. बुड्ढो—इति पि पाठो ।
7–7. कनियो कनिट्ठो—म० ।

मस्तक ५ सीसोत्तमङ्गानि सिरो मुद्धा च मत्थको भवे ।
केश ५ केसो तु कुन्तलो बालोत्तमङ्गरुहमुद्धजा ॥ २५६ ॥
संयतकेश ३ धम्मिल्लो सयता[1] केसा काकपक्खो सिखण्डको ।
केशसमूह २ पासो हत्थो केसचये,
जटा १ तापसान तहि जटा ॥ २५७ ॥
वेणी २ थिय वेणी पवेणी च,
शिखा २ अथो चूळा[2] सिखा सिया ।
केशवेश १ सीमन्तो तु मतो नारीकेसमज्झम्हि[3] पद्धति ॥ २५८ ॥
लोम ३ लोमं तनुरुहं रोमं,
अक्षिरोम ३ पम्हं पखुममक्खिजं[4] ।
श्मश्रु १ मस्सु वुत्त पुममुखे
भ्रू ३ भू त्वित्थी भमुको भमु[5] ॥ २५९ ॥
अश्रु ३ वप्पो[6] नेत्तजलास्सुनि,
कनीनिका २ नेत्ततारा कनीनिका ।
मुख ६ वदनं तु मुखं तुण्डं[7] वत्तं लपनमाननं[8] ॥ २६० ॥

---

1. सयत०—ना० ।
2. चूला—ना० ।
3. नारि० सी०, नारीकेसमज्जम्हि—ना० ।
4 पखुम अक्खिज—ना० ।
5. भमू—ना० ।
6. खप्पो—म० ।
7 मुण्ड—ना० ।
8. लपन आनन—ना० ।

दन्त ६	द्विजो लपनजो दन्तो दसनो रदनो रदो।
दंष्ट्रा १	दाठा तु दन्तभेदस्मि,
नयनप्रान्त १	अपाङ्गो त्वक्खिकोटिसु ॥ २६१ ॥
ओष्ठ ४	दन्तावरणमोट्ठो चाऽप्यऽधरो दसनच्छदो।
कपोल २	गण्डो कपोलो,
चिबुक २	हन्वित्थी चुबुकं त्वधरा अधो ॥ २६२ ॥
कण्ठ ५	गलो च कण्ठो गीवा च कन्धरा च सिरोधरा।
कम्बु-ग्रीवा	कम्बुगीवा[1] तु या गीवा सुवण्णा[2] लिङ्गसन्निभा[2] ॥
	अङ्किता तीहि लेखाहि कम्बुगीवाऽथ वा मता ॥ २६३ ॥
स्कन्ध ३	अंसो नित्थि भुजसिरो खन्धो,
स्कन्धसन्धि १	तस्सन्धि जत्तु त।
बाहुमूल २	बाहुमूलं तु कच्छो,
कुक्ष्यधोभाग १	ऽधो त्वस्स पस्सं अनित्थिय ॥ २६४ ॥
बाहु ३	बाहु भुजो द्वीसु बाहा,
हस्त ३	हत्थो तु कर-पाणयो।
मणिबन्ध	मणिबन्धो पकोट्ठन्तो,
हस्तभुजमध्यभाग २	कप्परो तु कफोण्यथ[3] ॥ २६५ ॥

1. कम्बुगीवा—म० ।
2–2. सुवण्णलिङ्ग०—सी०, ना० ।
3. कपोण्यथ—म० ।

करप्रभाग १ मणिबन्धकनिट्ठान पाणिस्स करभोऽन्तर।

अङ्गुलि २ करसाखाङ्गुली,

अङ्गुष्ठादि ५ ता तु पञ्चाऽङ्गुट्ठो च तज्जनी।

मज्झिमाऽनामिका चापि कनिट्ठा ति कमा सियु॥ २६६॥

अङ्गुलिपरिमाण४ पदेसो तालमोकण्ण विदत्थीत्थि कमा तते।

प्रसृत १ तजन्यादियुतेऽङ्गुष्ठे पसतो पाणिकुञ्चितो॥ २६७॥

हस्तपरिमाण ३ रतनं कुक्कु हत्थो

अञ्जलि २ ऽथ पुमे, करपुटोऽञ्जलि।

नख २ करजो तु नखो नित्थी,

मुष्टि २ खटको मुट्ठि च द्विसु॥ २६८॥

व्यामप्रमाण १ व्यामो[1] सह करा बाहू द्वे पस्सद्वयवित्थता।

पौरुषप्रमाण उद्धन्नतभुजे पोसप्पमाणे पोरिसं तिसु॥ २६९॥

हृदय २ उरो च हृदयं चाथ;

स्तन ३ थनो कुच-पयोधरा।

स्तनाग्र १ चूचकं तु थनग्गस्मि,

पृष्ठ २ पिट्ठं तु पिट्ठि[2] नारिय॥ २७०॥

शरीरमध्यमभाग ४ मज्झो नित्थि विलग्गो च मज्झिमं कुच्छि तु द्विसु।

उदर ३ गहणीत्थ्युदरं[3] गब्भो,

कोष्ठ ५ कोट्ठोऽन्तोकुच्छियं भवे॥ २७१॥

---

1 व्यामो—सी०, ना०। 2. पिट्ठी—ना०। 3. ०त्थ्युदर—ना०।

जघन ४	जघनं तु नितम्बो च सोणी च कटि नारिय ॥ २७१ ॥
मूत्रेन्द्रिय ८	अङ्गजातं रहस्सङ्गं वत्थगुय्हं च मेहनं ।
	निमित्तं च वरङ्गं च बीजं च फलमेव[1] च ।
अण्डकोश ३	लिङ्गमण्डं[2] तु कोसो च,
योनि २	योनी त्विथी पुमे भगं ॥ २७३ ॥
शुक्र ३	असुचि सम्भवो सुक्कं,
गुदा २	पायु तु पुरिसे गुदं ।
मल ८	वा पुमे गूथ-करीस*-वच्चानि च मलं छकं ॥ २७४ ॥
	उच्चारो मीळ्हमुक्कारो[3],
मूत्र २	पस्सावो मुत्तमुच्चते[4] ।
गोमूत्र १	पूतिमुत्तं च गोमुत्ते-
अश्वादिमूत्र १	ऽस्सादीन[5] छकनं मले ॥ १७५ ॥
वस्ति १	द्वीस्वधा नाभिया वत्थि[6],
उत्सङ्ग १	उच्छङ्गऽङ्का तुभो पुमे ।
ऊरु २	ऊरु सत्थि पुमे,
जानु २	ऊरुपब्ब तु जाणु जण्णु च ॥ २७६ ॥
गुल्फ २	गोप्फको पादगण्ठी पि,
पार्ष्णि २	पुमे तु पण्हि पासनी ।

1 फल एव—ना० ।
2. लिङ्ग अण्ड—ना० ।
3. मीळ्ह उक्कारो—ना० ।
4 मुत्त उच्चते—ना० ।
5. अस्सादीन—ना० ।
6. वत्थी—म० ।

* सति पि छन्दोभङ्गे सुद्धनामग्गहणं एवाचरियस्स हदयं ।

पादाग्र २ — पादग्गं पपदो,

चरण ३ — पादो तु पदो चरणं च वा ॥ २७७ ॥

अवयव २ — अङ्गं त्ववयवो वुत्तो;

पशुंका २ — फासुलिका तु फासुका ।

अस्थि ३ — पण्डके[1] अट्ठि धात्वत्थी[2],

ग्रीवाधोऽस्थि १ — गलन्तट्ठि तु अक्खको ॥ २७८ ॥

मस्तकास्थि २ — कप्परो तु कपालं वा,

महाशिरा २ — कण्डरा तु महासिरा ।

शिरा ३ — पुमे नहारु च सिरा धमन्य-

रसवाहिनाडी २ — थ रसग्गसा ॥ २७९ ॥

रसहरणी[3],

मांस ३ — थो मंसं आमिसं पिसितं भवे ।

शुष्कमांस २ — तिलिङ्गिक त वल्लूरं[4] उत्तत्त-

रुधिर ४ — मथ लोहितं ॥ २८० ॥

रुधिरं सोणितं रत्तं,

लाला ३ — लाला खेळो एला[5] भवे ।

वात-पित्त १-१ — पुरिसे वायु[6] पित्तं च,

---

1. पण्ढके—सी०, ना० ।
2. धात्वित्थी—सी०, ना० ।
3. रसहरण्ये—म०, रसहरण्य—सी० ना० ।
4. वल्लुर—ना० ।
5. एळा—सी०, ना० ।
6. मायु—म० ।

कफ २　　सेम्हो नित्थी सिलेसुमो ॥ २८१ ॥

वसा २　　वसा विलीनस्नेहो,

मेद २　　ऽथ मेदो चेव वपा भवे।

वेश ३　　आकप्पो वेसो* नेपच्छं,

प्रसाधन ६　　मण्डनं तु पसाधनं ॥ २८२ ॥

विभूसनं चाऽऽभरणं अलङ्कारो पिलन्धनं।

किरीट २　　किरीट-मुकुटा नित्थि,

चूडामणि २　　चूळामणि सिरोमणि ॥ २८३ ॥

उष्णीष २　　सिरोवेठनमुण्हासं[1],

कुण्डल २　　कुण्डलं कण्णवेठनं।

कर्णभूषण ३　　कण्णिका कण्णपूरो च सिया कण्णविभूसनं ॥ २८४ ॥

कण्ठभूषण २　　कण्ठभूसा तु गीवय्यं,

मुक्ताहार २　　हारो मुत्तावली त्थियं।

वलय ४　　नियुरो वलयो नित्थी कटकं परिहारकं ॥ २८५ ॥

स्त्रीकरभूषण २　　कङ्कणं करभूसा,

किङ्किणी २　　ऽथ किङ्किणी खुद्दघण्टिका।

अङ्गुल्याभरण २　　अङ्गुलीयकमङ्गुल्याभरणं[2] सक्खरन्तु त ॥ २८६ ॥

---

* एत्थ रस्सो ओकारो आचरियेन पयुत्तो ति न छन्दोभङ्गदोसासङ्का।

1 सिरोवेठन उण्हीस—ना०।

2 अगुलीयक अगुल्याभरण—ना०।

मुद्दिका २ — मुद्दिकाऽङ्गुलिमुद्दाऽथ;

मेखला २ — रसना मेखला भवे।

केयूर ३ — केयूरमङ्गदं[1] चेव बाहुमूलविभूसनं ॥ २८७ ॥

नूपुर ४ — पादङ्गदं तु मञ्जीरो पादकटक-नूपुरा[2] ॥ २८८ ॥

अलङ्कारभेद ४ — अलङ्कारप्पभेदा तु मुखफुल्लं तथोण्णतं।

उग्गत्थनं गिङ्गमकं इच्चेवमादयो सियु ॥ २८९ ॥

वस्त्र ११ — चेलमच्छादनं[3] वत्थं वासो वसनमंसुकं[4]।

अम्बरं च पटो नित्थि दुस्सं चोलो च साटको ॥ २९० ॥

वस्त्रभेद ८ — खोमं दुकूलं कोसेय्यं पत्तुण्णं कम्बलो च वा।

साणं[5] कोदुम्बरं भङ्गं त्यादि वत्थन्तरं मत ॥ २९१ ॥

परिधान ४ — निवासनाऽन्तरीयान्यन्तरमन्तरवासको[6]।

उत्तरीयवस्त्र ५ — पावारो तुत्तरासङ्गो उपसंब्यानमुत्तरं[7] ॥ २९२ ॥

उत्तरीयं,

नववस्त्र १ — अथो वत्थ अहतं ति मत नव।

छिन्नवस्त्र २ — नन्तकं कप्पटो,

---

1 केयूर अङ्गदं—ना०।

2 नूपूरा—सी०, ना०।

3 चेल आच्छादन—सी०, ना०।

4. वसन असुक—सी०, ना०।

5. सान—सी०, ना०।

6. न्तरीयात्यन्तर अन्तर०—ना०।

7. उपसव्यान—सी०, ना०।

जीर्णवस्त्र २	जिण्णवसनं[1] तु पलच्चरं[2] ॥ २९३ ॥
कञ्चुक २	कञ्चुको[1] वारबाणं[2] वा-[1]
वस्त्रान्तभाग १	ऽथ वत्थावयवे दसा[1] ।
शिरस्त्राण १	तालिपट्टो[1] तु कथितो उत्तमङ्गम्हि कञ्चुको ॥ २९४ ॥
आयाम ३	आयामो[1] दीघता[2]ऽऽरोहो[3],
विशालता २	परिणाहो[1] विसालता[2] ॥ २९५ ॥
चीवर ३	अरहद्धजो[1] च कासाय[2]-कासावानि[3] च चीवरे ।
चीवरमध्यभाग १	मण्डलं[1],
चीवरान्तभाग २	तु तदङ्गानि विवट्ट[1] कुसि[2]-आदयो ॥ २९६ ॥
वस्त्रयोनि ४	फल[1] त्तच[2]-किमि[3]-रोमान्येता[2] वत्थस्स योनियो ।
कार्पास वस्त्र १	फल कप्पासिकं[1] तीसु,
वाल्कल वस्त्र १	खोमादी[1] तु तचुब्भवा ॥ २९७ ॥
कौशेय वस्त्र १	कोसेय्यं[1] किमिज,
और्ण वस्त्र १	रोममय तु कम्बलं[1] भवे ।
यवनिका २	समानत्था जवनिका[1] सा तिरोकरणी[2] प्यथ ॥ २९८ ॥
वितान २	पुन्नपुसकमुल्लोचं[1][3] वितानं[2] द्वयमीरित[4] ।
स्नान १	नहानं[1] च सिनाने[5],

1. वा—सी०, ना० ।
2. रोमात्येता—ना० । छन्दोरक्खाय 'किमी' ति दीघपाठो व उचितो ।
3. पुनपुसक उल्लोच—ना० ।
4. ० मीरीत—ना० ।
5. सिनोने—ना० ।

उद्वर्तन २ — ऽथोब्बट्टनुम्मज्जनं समं ॥ २९९ ॥

तिलक ३ — विसेसको तु तिलको त्थुभो नित्थि च चित्तकं ।

चन्दन ३ — चन्दनो नित्थिय गन्धसारो मळयजोऽप्यथ ॥ ३०० ॥

चन्दनभेद ३ — गोसीसं तेलपण्णीकं[1] पुमे वा हरिचन्दनं ।

रक्तचन्दन ४ — तिलपण्णी[2] तु पत्तङ्गं रञ्जनं[3] रत्तचन्दनं ॥ ३०१ ॥

सुगन्धि काष्ठ २ — काळानुसारी काळीयं,

अगरु ३ — लोहं त्वगरु चाऽगलु ।

कालागरु १ — काळागरु तु काळरिम,

गन्धद्रव्य २ — तुरुक्खो तु च पिण्डको ॥ ३०२ ॥

कस्तूरी २ — कत्थूरिका मिगमदो,

कुष्ठ २ — कुट्ठं तु अजपालकं ।

लवङ्ग २ — लवङ्गं देवकुसुमं,

कुङ्कुम २ — कस्मीरजं तु कुङ्कुमं ॥ ३०३ ॥

यक्षधूप २ — यक्खधूपो सज्जुलसो,

कङ्कोल ३ — तक्कोलं तु च कोलकं ।

जातिफल २ — कोसफ्फलम[4]-

थो जातिकोसं[5] जातिप्फलं[5] भवे ॥ ३०४ ॥

---

1. तेलपण्णिक—ना० ।
2. तिलपण्णि—ना० ।
3. रजन—सी० ।
4. कोसफल—सी०, ना० ।
5–5. कोसजातिफल—सी०, ना० ।

कर्पूर ३ — घनसारो सितब्भो च कप्पूर पुन्नपुंसके।

लाक्षा ४ — अलत्तको यावको च लाखा जतु नपुंसके ॥ ३०५ ॥

सरलद्रव २ — सिरिवासो तु सरलद्दवो-

अञ्जन २ — ऽञ्जन तु कज्जलं।

गन्धद्रव्यभेद २ — वासचुण्ण वासयोगो,

विलेपन २ — वण्णकं तु विलेपनं ॥ ३०६ ॥

गन्धमाल्यादिसंस्कार १ — गन्धमाल्यादिसङ्खारो यो त वासनमुच्चत[1]।

माला २ — माला माल्यं पुप्फदामे,

गन्धमय द्रव्य २ — भावितं वासित तिसु ॥ ३०७ ॥

शिखास्थ माला ४ — उत्तंसो सेखराऽवेळा[2] मुद्धमाल्येऽवटंसको।

शय्या ३ — सेय्या च सयन सेन,

पर्यङ्क २ — पल्लङ्को तु च मञ्चको ॥ ३०८ ॥

मञ्चाधार २ — मञ्चाधारो पटिपादो,

मञ्चावयव १ — मञ्चङ्गे त्वटनित्थिय ॥ ३०९ ॥

मञ्चविशेष ४ — कुळीरपादो आहच्चपादो चेव मसारको।

चत्तारो बुन्दिकाबद्धो तिमे मञ्चन्तरा सियु ॥ ३१० ॥

उपधान २ — बिम्बोहन[3] चापधानं,

---

1. वासन उच्चते—ना०।
2. सेखरोऽवेळा—ना०।
3. बिम्बोहन—म०।

आसन ३	पिट्ठिका पीठमासनं[1] ।
आसनविशेष २	कोच्छं तु भद्दपीठेऽथाऽऽसन्दी[2] पीठन्तरे मता ॥ ३११ ॥
दीर्घलोमक आसन १	महन्तो कोजवो दीघलोमको गोनको मतो ।
चित्रासन १	उण्णामय त्वत्थरण चित्तका वानचित्तक ॥ ३१२ ॥
घनपुष्पासन १	घनपुप्फ पटलिका,
श्वेतासन १	सेत तु पाटिकाऽप्यथ ।
ऊर्ध्वलोमी १	द्विदसेकादसान्युद्दलोमी,
एकान्तलोमी १	एकन्तलोमिनो ॥ ३१३ ॥
नृत्ययोग्यस्थान १	तदेव सोळसित्थीन नच्चयोग्ग हि कुत्तकं ।
सिंहादिचिह्नित छवि १	सीहब्यग्घादिरूपेहि चित्त विकतिका भवे ॥ ३१४ ॥
कौशेय आसन २	कट्टिस्सं कोसेय्य रतनपतिसिब्बितमत्थरण कमा ।
	कोसियकट्टिस्समय कोसियसुत्तेन पकत[3] च ॥ ३१५ ॥
दीप ३	दीपो पदीपो पज्जोतो,
दर्पण २	पुमे त्वादास-दप्पना ।
कन्दुक २	गेण्डुको कन्दुको,
व्यजन २	तालवण्टं तु बीजनीत्थिय ॥ ३१६ ॥
संन्यासिपात्र ४	चङ्कोटको[4] करण्डो च समुग्गो सम्पुटो भवे ।
मैथुन ५	गामधम्मो असद्धम्मो व्यवायो मेथुनं रति ॥ ३१७ ॥

---

1. पीठ आसन–ना० ।
2. ०ऽसन्दि–ना० ।
3. पकत–सी० ।
4. चगोटको–सी०, ना० ।

विवाह ४ — विवाहो[१]पयमा[२] पाणिग्गहो[३] परिणयो[४]ऽप्यथ ।

त्रिवर्ग १ — तिवग्गो[१] धम्म-काम-त्था,

चतुर्वर्ग १ — चतुब्बग्गो[१] समोक्खका ॥ ३१८ ॥

कुब्ज २ — खुज्जो[१] च गण्डुलो[२],

वामन ३ — रस्सो[१] वामनो[२] तु लकुण्टको[३] ।

पङ्गु ५ — पङ्गुलो[१][1] पीठसप्पी[२] च पङ्गु[३] छिन्निरियापथो[४] ॥ ३१९ ॥

पक्खो[५],

खञ्ज २ — खञ्जो[१] तु खोण्डो[२],

मूक २ — ऽथ मूगो[१] सुञ्ञवचो[२] भवे ।

वक्रहस्त १ — कुणी[१] हत्थादिवङ्को च,

वलितहस्त २ — वलिरो[१] तु च केकरो[२] ॥ ३२० ॥

खल्वाट २ — निक्केससीसो[१] खल्लाटो[२],

मुण्डितशीर्ष ३ — मुण्डो[१] तु भण्डु[२] मुण्डिको[३] ।

काण १ — काणो अक्खीनमेकेन सुञ्ञो,

अन्ध १ — अन्धो द्वयेन थ ॥ ३२१ ॥

बधिर २ — बधिरो[१] सुतिहीनो[२],

रोगी ३ — ऽथ गिलानो[१] व्याधिता[२]ऽऽतुरा[३] ।

उन्मादरोगी १ — उम्मादवति उम्मत्तो[१],

खुज्जादि वाच्चलिङ्गिका ॥ ३२२ ॥

---

1. पङ्गळो–सी०, ना० ।

रोगी ९ — आतङ्को आमयो व्याधि गदो रोगो रुजाऽपि च ।
गेलञ्ञाकल्लमाबाधो,

क्षय रोग २ — सोसो तु च खयो सिया ।। ३२३ ।।

पीनस २ — पिनासो नासिकारोगो,

नासाश्लेष्म १ — घाने सिङ्घानिकाऽऽस्सवो ।

व्रण २ — ञेय्य त्वरु वणो[1] नित्थी,

स्फोट २ — फोटो तु पिळका भवे ।। ३२४ ।।

पूय २ — पुब्बो पूयो,

रक्तातिसार २ — ऽथ रत्तातिसारो पक्खन्दिकाऽप्यथ ।

अपस्मार २ — अपमारो अपस्मारो,

पादस्फोट २ — पादफोटो विपादिका[2] ।। ३२५ ।।

अण्डवृद्धि २ — वुद्धिरोगो तु वातण्डं,

श्लीपद २ — सीपदं भारपादता ।

कण्डू ५ — कण्डू[3] कण्डुति कण्डूया[4] खज्जु कण्डूवनं प्यथ ।। ३२६ ।।

पामारोग ३ — पामं वितच्छिका कच्छु[5],

शोथ २ — सोथो[6] तु सयथूदितो ।

अर्शोरोग २ — दुन्नामकं च अरिसं,

---

1. वण्णो–ना० ।
2. विपातिका–सी०, ना० ।
3. कण्डु–सी०, ना० ।
4. ण्डूया–म० ।
5. कच्छू–सी०, ना० ।
6. सोफो–सी०, ना० ।

वमन २ — छद्दिका वमथूदितो ॥ ३२७ ॥

दाह २ — दवथू परितापो,

ऽथ तिलको तिलकाळको[1] ।

अतिसार २ — विसूचिका इति महाविरेको;

भगन्दर १ — ऽथ भगन्दळा ॥ ३२८ ॥

६ रोगविशेष — मेहो जरो काम सासो कुट्ठं मूलाऽऽमयन्तरा ।

वैद्य ४ — वुत्तो वेज्जो भिसक्को च रोगहारी तिकिच्छको ॥ ३२९ ॥

शल्यचिकित्सक २ — सल्लवेज्जो सल्लकत्तो,

चिकित्सा २ — तिकिच्छा तु पतिक्रिया ।

औषध ४ — भेसज्जमगदो[2] चेव भेसजं चोसधं प्यथ ॥ ३३० ॥

स्वस्थता ३ — कुसलाऽनामयाऽऽरोग्यं,

नीरोग २ — अथ कल्लो निरामयो ॥ ३३१ ॥

नरवग्गो निट्ठितो

●

४. खत्तियवग्गो

वंश ७ — कुलं वंसो च सन्तानाऽभिजना गात्तमन्वयो[3] ।

थिय सन्तत्य-

चतुर्वर्ण — थो वण्णा चत्तारो खत्तियादयो ॥ ३३२ ॥

सज्जन ६ — कुलीनो सज्जनो साधु सभ्यो चाऽय्यो महाकुलो ।

---

1 तिळका० सी०, ना० । 2 भेसज्ज अगदो—सी०, ना०, 3. गात्त अन्वयो—ना० ।

राजा ११ राजा भूपति भूपालो, पत्थिवो च नराधिपो ॥ ३३३ ॥
भूनाथो जगतीपालो दिसम्पति जनाधिपो ।
रट्ठाधिपो नरदेवो भूमिपो भूभुजोऽप्यथ ॥ ३३४ ॥

क्षत्रिय ५ राजञ्ञो खत्तियो खत्तं मुद्धाभिसित्त-बाहुजा[1] ।

चक्रवर्ती राजा २ सब्बभुम्मो चक्कवत्ती भूपो,

माण्डलिक राजा १ ऽञ्ञो मण्डलिस्सरो ॥ ३३५ ॥

लिच्छवि २ पुमे लिच्छवि-वज्जी च,

शाक्य २ सक्को[2] तु साकियोऽथ च ।

राहुलमाता ४ भद्दकच्चाना राहुलमाता बिम्बा यसोधरा ॥ ३३६ ॥

धनी क्षत्रिय १ कोटीन हेट्ठिमन्तेन सत येस निधानगं ।
कहापणान दिवसवलञ्जो वीसतम्मण[3] ॥ ३३७ ॥
ते खत्तियमहासाला,

धनी द्विज १ ऽसीतिकोटिधनानि च ।
निधानगानि दिवसवलञ्जो च दसम्मण[4] ॥ ३३८ ॥
यस द्विजमहासाला,

वणिक् १ तदुपड्ढे निधानगे ।
वलञ्जे च गहपतिमहासाला धने सियु ॥ ३३९ ॥

---

1. ०बाहुजो–म० ।
2. सक्यो–म० ।
3. वीसतम्बण–म० ।
4. दसम्बण–म० ।

प्रधानमन्त्री २ महामत्ता पधानं च,

मन्त्री २ मतिसचिवो च मन्तिनी ।

सचिव ३ सजीवो सचिवोऽमच्चो,

सेनापति २ सेनानी तु चमूपति ॥ ३४० ॥

न्यायाधीश १ न्यासादीन[1] निवादानमक्खदस्सो पदट्ठरि[2] ।

द्वारपाल ४ दोवारिको पटिहारो द्वारट्ठो द्वारपालको ॥ ३४१ ॥

अङ्गरक्षक १ अनीकट्ठो[3] तु [4]राजूनमङ्गरक्खगणो मतो ।

कञ्चुकी २ कञ्चुकी सोविदल्लो च,

सेवक २ अनुजीवी तु सेवको ॥ ३४२ ॥

अध्यक्ष २ अज्झक्खोऽधिकतो चेव,

स्वर्णकार २ हेरञ्ञिको तु निक्खिको ।

शत्रु राजा १ सदेसानन्तरो सत्तु,

मित्र राजा १ मित्तो राजा ततोऽपर ॥ ३४३ ॥

शत्रु १९ अमित्तो रिपु वेरी च सपत्तोऽराति सत्त्वरी[5] ।

पच्चत्थिको परिपन्थी पटिपक्खाऽहितापरो ॥ ३४४ ॥

पच्चामितो विपक्खो च पच्चनीकविरोधिनो ।

विद्देसी च दिसो दिट्ठो,

---

1. न्यासादीन–ना० ।
2. पदट्ठरी–म० ।
3. अणीकट्ठो–म० ।
4. राजुन–सी०, ना० ।
5. सत्त्वरि–सी०, ना० ।

अनुवर्त्तन २ ऽथा नुरोधोऽनुवत्तनं ॥ ३४५ ॥

मित्र ५ मित्तो मित्थी वयस्सो च सहायो सुहदो सखा ।

दृढमित्र २ सम्भत्तो दळ्हमित्तो च[1];

साधारण परिचित १ सन्दिट्ठो दिट्ठमत्तको ॥ ३४६ ॥

चर (जासूस) २ चरो च गूळ्हपुरिसो,

पथिक ३ पथावी पथिकोऽद्धगु[2] ।

दूत २ दूतो तु सन्देसहरो,

गणक २ गणको तु मुहुत्तिको ॥ ३४७ ॥

लेखक २ लेखको लिपिकारो च,

अक्षर २ वण्णो तु अक्खरोऽप्यथ ।

नीतिचतुष्टय भेदो दण्डो साम-दानान्युपाया चतुरो इमे ॥ ३४८ ॥

भेदनीति २ उपजापो तु भेदो च,

दण्डनीति ३ दण्डो तु साहसं दमो ॥ ३४९ ॥

राज्याङ्गसप्तक साम्यमच्चो सखा कोसो दुग्गं च विजितं बलं ।

रज्जङ्गानीति[3] सत्तेते सियु पकतियोऽपि च ॥ ३५० ॥

राजशक्तित्रय पभावुस्साह-मन्तानं[4] वसा तिस्सो हि सत्तियो ।

प्रभाव १ पभावो दण्डजो तेजो,

प्रताप १ पतापो तु च कोसजो ॥ ३५१ ॥

---

1. थ–म० । 2. द्धगु–म० ।
3. रज्जङ्गानि च–सी०, ना० ।
4. पभावू०–ना० ।

मन्त्रणा २ — मन्तो च मन्तणं,

चतुष्कर्णमन्त्रणा १ — सो तु चतुक्कण्णो द्विगोचरो।

षट्कर्णमन्त्रणा १ — तिगोचरो तु छक्कण्णो,

रहस्यमन्त्रणा २ — रहस्सं गुय्हमुच्चते[1] ॥ ३५२ ॥

निर्जनस्थान ४ — तीसु विवित्त-विजन-छन्नारहो[2] रहोऽव्ययं।

विश्वास २ — विस्सासो तु च विस्सम्भो,

युक्तवचन २ — युत्तं त्वोपायिकं तिसु ॥ ३५३ ॥

अनुशासन ३ — ओवादो चाऽनुसिट्ठित्थी पुमवज्जेऽनुसासनं।

आज्ञा २ — आणा च सासनं ञेय्यं,

बन्धन २ — उद्दानं तु च बन्धनं ॥ ३५४ ॥

अपराध २ — आगु वुत्तमपराधो,

कर २ — करो तु बलिमुच्चते[3]।

उपहार १ — पुण्णपत्तो तुट्ठिदाये,

रिश्वत ६ — उपदा तु च पाभतं ॥ ३५५ ॥

ततोऽपायनमुक्कोचो[4] पण्णकारो पहेणकं।

शुल्क १ — सुङ्कं त्वनित्थि[5] गुम्बादिदेयो,

आय २ — ऽथाऽऽयो धनागमो ॥ ३५६ ॥

---

1. गुय्ह उच्चते—ना०।
2. विवित्त विजन च छण्णारहो—ना०।
3. बलि उच्चते—ना०।
4. पायन उक्कोचो—ना०।
5. त्वनित्थी—म०।

छत्र २ आतपत्तं[१] तथा छत्तं[२] रञ्ञ तु हेममासन।

सिंहासन १ सीहासनमथो[१]

चामर १ वाळवीजनीत्थी[1][१] च चामरं[२] ॥ ३५७ ॥

पञ्च राजचिह्न खग्गो[१] च छत्तमुण्हीसं[2][२][३] पादुका[४] वाळवीजनी[५]।

इमे ककुधमण्डानि भवन्ति पञ्च राजुन ॥ ३५८ ॥

पूर्णकुम्भ २ भद्दकुम्भो[१] पुण्णकुम्भो[२],

स्वर्णकुम्भ २ भिङ्कारो[१] जलदायको[२]।

चतुरङ्गिणी सेना हत्थि[3]-स्स[3]-रथ-पत्ती तु सेना हि चतुरङ्गिनी ॥ ३५९ ॥

हस्ती १० कुञ्जरो[१] वारणो[२] हत्थी[३] मातङ्गो[४] द्विरदो[५] गजो[६]।

नागो[७] द्विपो[८] इभो[९] दन्ती[१०],

यूथपति २ यूथजेट्ठो[१] तु यूथपो[२] ॥ ३६० ॥

दश गजकुल काळावकं[१] च गङ्गेय्यं[२] पण्डरं[३] तम्ब[४] पिङ्गळ[५] गन्ध[६]।

मङ्गल[७] हेमञ्च[८] उपोसथ[९] छद्दन्ता[१०] च गजकुलानि एतानि* ॥३६१॥

बालगज २ कळभो[१] चेव भिङ्को[२],

मत्तगज ३ ऽथ पभिन्नो[१] मत्त[२]-गज्जिता[३]।

गजसमूह २ हत्थिघटा[१] तु गजता[२],

हस्तिनी २ हत्थिनी[१] तु करेणुका[२] ॥ ३६२ ॥

---

1. वाल०—ना०। 2 छत्त उण्हीस—ना०।

3–3. हत्थस्स—सी०, ना०।

* गाथेयं सी० ना० पोत्थकेसु एव विज्जति —

"काळावक गंगेय्या पण्डर तम्बा च सिंगलो गन्धो।

मंगल हेमो पोसथ छद्दन्ता गजकुलानि एतानि" ॥ इति।

गजकुम्भ १ कुम्भो[1] हत्थिसिरोपिण्डो,

गजकर्णमूल १ कण्णमूलं तु चूळिका[1] [1] ।

गजस्कन्ध १ आसनं[1] खन्धदेसम्हि,

गजपुच्छमूल १ पुच्छमूलं तु मेचको[1] ॥ ३६३ ॥

गजबन्धनस्तम्भ ३ आलान[1]माळ्हको[1][2] थम्भो[3],

गजशृङ्खला २ निगळो[1][3] ऽन्दुको[2] ।

सङ्खलं[1] तीस्वथो,

गजमद ३ गण्डो[1] कटो[2] दानं[3] तु सो मदो ॥ ३६४ ॥

गजशुण्ड २ सोण्डो[1] तु द्वीसु हत्थो[2],

शुण्डाग्र २ ऽथ करग्गं[1] पोक्खरं[2] भवे ।

गजकक्षारज्जु १ मज्झम्हि बन्धन कच्छा[1],

गजपृष्ठास्तरण १ कप्पनो तु कुथादयो ॥ ३६५ ॥

राजवह्य गज २ ओपवय्हो[1] राजवय्हो[2],

सज्जित गज २ सज्जितो[1] तु च कप्पितो[2] ।

तोमर १ तोमरो[1] नित्थिय पादे सिया विज्झनकण्टको ॥ ३६६ ॥

गजकर्णमूलवेधयन्त्र १ तुत्तं[1] तु कण्णमूलम्हि

गजमस्तकवेधयन्त्र १ मत्थकम्हि तु अंकुसो[1] ।

हस्तिपक ४ हत्थारोहो[1] हत्थिमेण्डो[2] हत्थियो[3] हत्थिगोपको[4] ॥ ३६७ ॥

---

1. चूळिका—ना० ।
2. आलान आलहको—ना० ।
3. निगलो—ना० ।

गजशिक्षक १ गामणीयो[1] तु मातङ्ग-हयाद्याचरियो भवे ।

अश्व ६ हयो[1] तुरङ्गो[2] तुरगो[3] वाहो[4] अस्सो[5] च सिन्धवो[6] ॥ ३६८ ॥

अश्वतर १ भेदो अस्सतरो[1] तस्सा-

सुशिक्षित अश्व २ ऽऽजानीयो[1] तु कुलीनको[2] ।

विनीत अश्व २ सुखवाहो[1][1] विनीतो[2],

अश्वपोतक २ ऽथ किसोरो[1] हयपोतको[2] ॥ ३६९ ॥

घोटक २ घोटको[1] तु खळुङ्को[2],

द्रुतगामी अश्व २ ऽथ जवनो[1] च जवाधिको[2] ।

मुखाधान (लगाम) २ मुखाधानं[1] खलीनो[2] वा,

कशा (चाबुक) १ कसा[1] त्वस्सादिताळिनी[2] ॥ ३७० ॥

नासारज्जु(नाथ)१ कुसा[1] तु नासारज्जुम्हि,

अश्वा २ वळवा[1]ऽस्सा[2],

अश्वखुर २ खुरो[1] सफं[2] ।

अश्वपुच्छ ४ पुच्छमनित्थि[1][3] नङ्गुट्ठं[2] वालहत्थो[3] च वालधी[4]* ॥ ३७१ ॥

रथ २ सन्दनो[1] च रथो[2],

क्रीडारथ १ पुस्सरथो[1] तु न रणाय सो ।

व्याघ्रचर्मावृतरथ२ चम्मावुतो च[4] वेय्यग्घो[1] दीपो[2] व्यग्घस्स दीपिनो ॥ ३७२ ॥

---

1 सुखावाही—सी०, ना० । 2. ०तालिनी —सी० ।
3. पुच्छ अनित्थी—ना० । 4. ना० पोत्थके नात्थि ।
* तु०—'वालहस्तश्च वालधिः'—अ० को० (२. ८. ५०)

शिविका(पालकी)२ सिविका याप्ययानं चानित्थी तु,

शकट २ सकटोऽप्यनं ।

रथचक्र १ चक्कं रथङ्गमाख्यात,

रथनेमि १ तस्सन्तो नेमि नारिय ॥ ३७३ ॥

चक्रनाभि १ तम्मज्झे पिण्डिका नाभि,

युगन्धर २ कुब्बरो तु युगन्धरो ।

शकटाग्रकील १ अक्खग्गकीले आणीत्थी,

रथगुप्ति २ वरूथो रथगुत्यथ ॥ ३७४ ॥

रथाग्रभाग १ धुरो मुखे,

रथावयव २ रथस्सङ्गा[1] त्वक्खो पक्खर-आदयो ।

यान ३ यान च वाहनं[2] योग्गं सब्बहत्थ्यादिवाहने[3] ॥ ३७५ ॥

सारथि ४ रथाचारी तु सूतो च पाजिता चेव सारथी ।

रथारोही ३ रथारोहो च रथिको रथी,

योद्धा २ योधो तु यो भटो ॥ ३७६ ॥

पदाति ४ पदाति पत्ती तु पुमे पदगो पदिको मतो ।

कवच ६ सन्नाहो कङ्कटो वम्मं कवचो वा उरच्छदो[4] ॥ ३७७ ॥

जालिका,

---

1 रथस्सङ्गो—म० ।

2. वाहण—म०, एवमुपरि पि ।

3. ०हत्थादि—सी०, ना० ।

4 उदरच्छदो—ना० ।

सज्जित ३ — ऽथ च सन्नद्धो सज्जो च वम्मितो भवे ।

आमुक्त २ — आमुत्तो पटिमुक्को;

पुरोगामी ४ — ऽथ पुरेचारी पुरेचरो ॥ ३७८ ॥

पुब्बङ्गमो पुरेगामी,

मन्दगामी २ — मन्दगामी तु मन्थरो ।

शीघ्रगामी ३ — जवनो तुरितो वेगी,

जेतव्य १ — जेतब्ब जेय्यमुच्चते[1] ॥ ३७९ ॥

शूर पुरुष ३ — सूर-वीरा तु विक्कन्तो,

सहायपुरुष २ — सहायोऽनुचरो समा ।

सन्नद्धप्पभुती तीसु,

पाथेय २ — पाथेय्यं तु च सम्बलं ॥ ३८० ॥

सेना ७ — वाहिनी धजिनी सेना बलं चक्कं चमू[2] तथा ।

अनीको वा,

व्यूह १ — ऽथ विन्यासो व्यूहो सेनाय कथ्यते ॥ ३८१ ॥

चतुरङ्गिणी सेना — हत्थी द्वादस पोसो ति पुरिसो तुरगो रथो ।

चतुपोसो ति एतेन लक्खणेनाधम ततो ॥ ३८२ ॥

हत्थानीक[3] हयानीकं रथानीकं तयो तयो ।

गजादयो ससत्था तु पत्तानीकं चतुज्जना ॥ ३८३ ॥

---

1 जेय्य उच्चते—ना० ।

2. चमु चक्क बल—सी०, ना० ।

3. ०णीक—म० । एवमुपरि पि ।

अक्षौहिणी सेना — सह्विसकलापेसु पञ्चेक[1] सह्विदण्डिसु ।
धूलिकतेसु सेनाय यन्तियाऽक्खोहिणीत्थिय ॥ ३८४ ॥

सम्पत्ति ४ — सम्पत्ति सम्पदा लक्खी सिरी,

विपत्ति २ — विपत्ति चापदा ।

आयुध ४ — अथायुधं च हेतीत्थी सत्थं पहरणं भवे ॥ ३८५ ॥

चतुर्विधायुध — मुत्तामुत्तममुत्तं च पाणितोमुत्तमेव च ।
यन्तमुत्तं ति सकलमायुध त चतुब्बिध ॥ ३८६ ॥
मुत्तामुत्तं च यह्यादि, अमुत्तं छुरिकादिक ।
पाणिमुत्तं तु सत्यादि यन्तमुत्तं सरादिक ॥ ३८७ ॥

धनुष् ५ — इस्सासो धनु कोदण्डं चापो नित्थी सरासन ।

धनुर्ज्या ३ — अथो गुणो जिया[2] ज्या[2],

बाण ९ — ऽथ सरो पत्ती च सायको ॥ ३८८ ॥
बाणो कण्डमुसु द्वीसु खुरप्पो तेजनाऽसन ।

तूणीर ५ — तूणीत्थिय कलापो च तूणो तूणीरबाणधि ॥ ३८९ ॥

शरपक्ष २ — पक्खो तु वाजो,

विषाक्तबाण १ — दिद्धोऽथ[3] विसपीतो[4] सरो भवे ।

लक्ष्य ३ — लक्खं वेज्झं सरव्यं च,

---

1 पञ्चेक—ना० ।
2–2 जियाथ ज्या—ना० ।
3. तु—म० ।
4 विसप्पीतो—म० ।

शरक्षेपण २ सराभ्यासो तु पासनं ॥ ३९० ॥

खड्ग ५ मण्डलग्गो तु नेत्तिंसो असि खग्गो च सायको ।

खड्गकोष १ कोसित्थी[1] तप्पिधाने,

खड्गमुष्टि १ ऽथो थरु खग्गादिमुट्ठिय ॥ ३९१ ॥

खड्गवारक चर्म ३ खेटकं फळकं चम्मं,

कररक्षक चर्म १ इल्ली तु करपालिका ।

खड्गाकार क्षुरिका ३ छुरिका[2] सत्त्यसिपुत्ति,

मुद्गर २ लगुळो तु च मुग्गरो ॥ ३९२ ॥

शल्य २ सल्लो नित्थी[3] संकु पुमे,

तक्षणी २ वासी तु तच्छनीत्थिय ।

कुठारी २ कुठारीत्थी फरसु,

टंक १ सो टङ्को पासाणदारणो[4] ॥ ३९३ ॥

षट् अस्त्रविशेष ६ कणयो भिन्दिवाळो च चक्कं कुन्तो गदा तथा ।

सत्यादि सत्थभेदा,

शस्त्राग्रभाग ३ ऽथ कोणोऽस्सो कोटि नारिय ॥ ३९४ ॥

गमन ६ निय्यानं गमनं यात्रा पट्ठानं च गमो गति ।

धूलि ५ चुण्णो पंसु रजो चेव धूलीत्थी रेणु च द्विसु[5] ॥ ३९५ ॥

---

1 कोसीत्थी—म० ।

2. छूरिका—सी०, ना० ।

3. नीत्थि—म० ।

4 ०दारणे—सी०, ना० ।

5. द्वीसु—म० ।

मागध २	मागधो मधुको वुत्तो,
स्तुतिपाठक २	बन्दी तु थुतिपाठको।
वैतालिक २	वेतालिको[1] बोधकरो,
विशेषस्तुतिपाठक२	चक्किको[2] तु च घण्टिको ॥ ३९६ ॥
ध्वजा ५	केतुध्वजो पताका च कदली केतनं प्यथ।
अहमहमिका १	योऽहङ्कारोऽञ्ञमञ्ञस्स साऽहमहमिका भवे ॥ ३९७ ॥
बल ४	बलं थामो सहं सत्ति,
विक्रम १	विक्कमो त्वतिसूरता।
जयपान १	रणे जितस्स य पान जयपानं ति त मत ॥ ३९८ ॥
युद्ध ९	सङ्गामो सम्पहारो चानित्थिय समर रणं।
	आजित्थी आहवो युद्धमायोधनं च संयुग ॥ ३९९ ॥
विवाद ५	भण्डन च विवादो च विग्गहो कलह-मेधगा[3]।
मूर्च्छा २	मुच्छा मोहो,
बलात्कार ३	ऽथ पसय्हो बलक्कारो हठो भवे ॥ ४०० ॥
भूतविकृति १	उप्पातो भूतविकति या सुभासुभसूचिका।
उपद्रव ४	ईति त्वित्थि अजञ्ञं च उपसग्गो उपद्दवो ॥ ४०१ ॥
मल्लयुद्ध १	निब्बुद्धं मल्लयुद्धम्हि,
जय २	जयो तु विजयो भवे।

1. वेताळिको—सी०, म०।
2. चककिको—ना०।
3. ०मेधगो—म०।

पराजय १	पराजयो रणे भङ्गो,
पलायन १	पलायनमपक्कमो ॥ ४०२ ॥
वध ११	मारणं हननं घातो नासनं च निसूदनं ।
	हिंसनं सरणं हिंसा वधो ससनघातनं ॥ ४०३ ॥
मरण १०	मरणं कालकिरिया[1] पलयो मच्चु चाऽच्चयो[2] ।
	निधनो नित्थिय नासो कालोऽन्तो चवनं भवे ॥ ४०४ ॥
प्रेत ३	तीसु पेतो परेतो च मतो,
चिता २	ऽथ चितको चिता ।
श्मशान २	आळाहणं[3] सुसानं[4] चाऽनित्थिय,
शव २	कुणपो छवो ॥ ४०५ ॥
शिरोहीन देह १	कबन्धो नित्थिय देहो सिरोसुञ्ञो सहक्रियो ।
अर्धदग्ध शव १	अथ सीवथिका वुत्ता, सुसानस्मिं हि आमके ॥ ४०६ ॥
बन्दी २	बन्दीत्थिय करमरो,
प्राण २	पाणो त्वसु पकासितो ।
कारागृह २	कारा तु बन्धनागारं,
यातना २	कारणा तु च यातना ॥ ४०७ ॥

खत्तियवग्गो निट्ठितो

●

1. कालङ्किरिया—इति पि पाठो तेपिटके दिस्सति । 2. अच्चयो—म० ।
3 आलाहन—म० । 4. सुसाण—सी० ।

९. ब्राह्मणवग्गो

ब्राह्मण ८ — ब्रह्मबन्धु[1] द्विजो[2] विप्पो[3] ब्रह्मा[4] भोवादि[5] ब्राह्मणो[6] ।

सोत्थियो[7] छन्दसो[8] सो,

सिस्स २ — ऽथ सिस्साऽन्तेवासिनो पुमे ॥ ४०८ ॥

आश्रमचतुष्टय — ब्रह्मचारी[1] गहट्ठो[2] च वानपन्थो[3][1] च भिक्खु[4] ति † ।

भवन्ति चतुरो[2] एते अस्समा पुन्नपुसके ॥ ४०९ ॥

सब्रह्मचारी १ — चरन्ता सहसीलादी सब्रह्मचारिनो मिथु ।

उपाध्याय २ — उपज्झायो[1] उपज्झा[2],

आचार्य १ — ऽथाऽऽचरियो[1] निस्सयदायको[3] ॥ ४१० ॥

उपनीयाथ वा पुब्ब वेदमज्झापये द्विजो ।

यो साङ्ग सरहस्स ऽचाचरियो ब्राह्मणेसु सो* ॥ ४११ ॥

इतिहास ४ — पारम्परियमेतिह्यमुपदेसो[4] तथेतिहा ।

यज्ञ ३ — यागो[1] तु कतु[2] यञ्ञो[3],

यज्ञवेदी १ — ऽथ वेदीत्थी[1] भू परिक्खता ॥ ४१२ ॥

पञ्च महायज्ञ — अस्समेधो[1] च पुरिसमेधो[2] चेव निरग्गळो[3] ।

---

1. वनपन्थो—म० ।
2. चत्वारो—म० ।
3. निस्सपदादिको—सी०, ना० ।
4. ० तिह्य उप०—सी० ना० ।

† तु०—'ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये'—अ० को० (२-७-३)

* तु०—'उपनीय तु य शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विज ।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥'—मनुस्मृ० २।१४०

सम्मापासो वाजपेय्यमिति[1] यागा महा इमे ॥ ४१३ ॥

याजक २ इरित्विजो याजको,

सभ्य २ ऽथ सभ्यो समाजिकोऽप्यथ❀ ।

सभा ५ परिसा सभा समज्जा च तथा समिति संसदो† ॥ ४१४ ॥

परिषच्चतुष्टय चतस्सो परिसा भिक्खु भिक्खुनी च उपासका ।

उपासिकायो ति इमा,

परिषदष्टक ऽथवाऽट्ठ परिसा सियु ॥ ४१५ ॥

तावतिंस-द्विज-क्खत्त-मार-ग्गहपतिस्स[2] च ।

समणानं वसा चातुम्महाराजिक-ब्रह्मुनं ॥ ४१६ ॥

गायत्रीछन्द गायत्तिपमुख छन्द* चतुवीसक्खर[3] तु य ।

वेदानमादिभूत सा सावित्ती तिपद[4] सिया ॥ ४१७ ॥

यज्ञान्न १ हव्यपाके चरु मतो‡,

यज्ञीयदर्वी १ सुवा[5] तु होमदब्बिय卐 ।

1 वाजपेय्य इति—सी०, ना० ।
2 गहपतिस्स—सी०, ना० ।
3 चतुब्बीस०—सी०, ना० ।
4 त्थीपद—सी०, त्थिपद—ना० ।
5 सुजा—म०, सी०, सूजा—ना० ।

❀ तु०—'सभ्याः सामाजिकाश्च ते'—अ० को० (२-७-१६)

† 'तु०—समज्या परिषद् गोष्ठी सभा समिति-संसदः'—अ० को० (२-७-१५)

* तु०—'गायत्री प्रमुखं छन्द'—अ० को० (२-७-२२)

‡ तु०—'हव्यपाके चरुः पुमान्'—अ० को० (२-७-२२)

卐 तु०—'पात्रं स्रुवादिकम्'—अ० को० (२-७-२४)

परमान्न १ — परमन्न तु पायासो†;

हवि १ — हब्य तु हवि कथ्यते ॥ ४१८ ॥

यज्ञीय अङ्ग २ — यूपो थूणाय[1] निम्मन्थ्यदारुम्हि त्वरणी द्विसु ।

यज्ञाग्नि ३ — गाहपच्चावहणीयो दक्खिणग्गि तयोऽग्गयो ॥ ४१९ ॥

दान ९ — चागो विस्सजन दानं वोस्सग्गो च पदेसन ।
विस्साणन वितरणं विहायिता पवज्जनं ॥ ४२० ॥

महादान ५ — पञ्च महापरिच्चागा[2] वुत्ता[2] सेट्ठधनस्स च ।
वसेन पुत्तदारान रज्जस्सङ्गानमेव च ॥ ४२१ ॥

दानवस्तु १० — अन्नं पानं घरं वत्थं पानं माला विलेपनं ।
गन्धो सेय्या पदीपेय्यं दानवत्थू[3] सियु दस ॥ ४२२ ॥

मृतार्थ दान १ — मतत्थ तदहे दान तीस्वेतमुद्धदेहिकं ।

पितृदान १ — पितूदान तु नीवापो,

श्राद्ध १ — सद्ध तु त च[4] सत्थता[4] ॥ ४२३ ॥

अतिथि ४ — पुमे अतिथि आगन्तु पाहुनाऽऽवेसिकाप्यथ ।

अन्यत्र जिगमिषु — अञ्ञत्थ गन्तुमिच्छन्तो गमिको,

अर्घ्य २ — ऽथाग्घमग्घियं ॥ ४२४ ॥

---

1 थूणाय—म० ।
2–2 महापरिच्चागो वुत्तो—सब्बत्थ ।
3 दानवत्थु—सब्बत्थ ।
4–4 त वसत्थतो—ना० ।
† तु०—'परमान्नं तु पायसम्'—अ० को० (२-७-२४)

पाद्य १	पज्जं पादोदकादो,
	ऽथ सत्तागन्त्वादयो तिसु।
पूजा ६	अपचित्यच्चना पूजा पहारो बलि मानना ॥ ४२५ ॥
नमस्कार ४	नमस्सा तु नमक्कारो वन्दना चाभिवादनं[1] ।
प्रार्थना ३	पत्थना पणिधानं च पुरिसे पणिधीरितो ॥ ४२६ ॥
अध्येषणा १	अज्झेसना तु सक्कारपुब्बङ्गमनियोजन ॥ ४२७ ॥
अन्वेषण ४	परियेसनाऽन्वेसना परियेट्ठि गवेसना ।
उपासन ३	उपासनं तु सुस्सूसा[2] सा परिचरिया भवे ॥ ४२८ ॥
मौन ३	मोनं[3] अभासनं[3] तुण्हीभावो,
अनुक्रम ५	ऽथ पटिपाटि सा।
	अनुक्कमो परियायो अनुपुब्ब्यपुमे कमो ॥ ४२९ ॥
शील ३	तपो च सयमो सीलं,
व्रत २	नियमो तु वतं च वा।
व्यतिक्रम २	वीतिक्कमोऽज्झाचारो,
विवेक २	ऽथ विवेको पुथुगत्तता ॥ ४३० ॥
क्षुद्रशील १	खुद्दानुखुद्दक आभिसमाचारिकमुच्चते।
आदिब्रह्मचर्य १	आदिब्रह्मचरियं तु तदञ्ञ सीलमीरित ॥ ४३१ ॥
उपवास १	यो पापेहि उपावत्तो वासो सद्धि गुणेहि सो।

1. चाभिवन्दन–म० ।
2. सुस्सुसा–म० ।
3–3 मोनमभासन—सब्बत्थ ।

उपवासो ति विञ्ञेय्यो सब्बभोगविवज्जितो ॥ ४३२ ॥

भिक्षु ५ — तपस्सी भिक्खु समणो पब्बजितो तपोधनो ।

मुनि २ — वाचंयमो तु मुनि च,

तापस २ — तापसो तु इसीरितो ॥ ४३३ ॥

जितेन्द्रिय २ — येस यतिन्द्रियगणा यतयो वसिनो च ते ।

शारिपुत्र ३ — सारिपुत्तो पतिस्सो तु धम्मसेनापतीरितो ॥ ४३४ ॥

मौद्गल्यायन २ — कोलितो मोग्गलानो[1],

आर्य १ — ऽथ अरियोऽधिगतो सिया ।

शैक्ष्य १ — सोतापन्नादिका सेखा-

अनार्य १ — ऽनरियो तु पुथुज्जनो ॥ ४३५ ॥

अर्हत्त्व २ — अञ्ञा तु अरहत्तं च,

स्तूप १ — थूपो तु चेतिय भवे ।

आनन्दस्थविर — धम्मभण्डागारिको च आनन्दो द्वे समाथ च ॥ ४३६ ॥

विशाखोपासिका २ — विसाखा मिगारमाता*,

अनाथपिण्डक २ — सुदत्तोऽनाथपिण्डको ॥ ४३७ ॥

सहधर्मा ५ — भिक्खू पि सामणेरो च सिक्खमाना च भिक्खुनी ।

सामणेरीति कथिता पञ्चेते सहधम्मिका ॥ ४३८ ॥

अष्टभिक्षूपकरण — पत्तो तिचीवरं कायबन्धनं वासि सूचि च ।

---

1. मोग्गल्लानो–म० ।

* सति पि छन्दोभङ्गे सुद्धनामग्गहणे एव आचरियस्स हदय ।

परिस्सावनमिच्चेते परिक्खाराट्ठ[1] भासिता ॥ ४३९ ॥

श्रामणेर २ — सामणेरो च समणुद्देसो,

दिगम्बर ३ — चाथ दिगम्बरो ।

अचेलको निगण्ठो च,

जटिल २ — जटिलो तु जटाधरो ॥ ४४० ॥

९६ पाषण्ड — कुटीसकादिका[2] चतुत्तिंस, द्वासट्ठि दिट्ठियो ।

इति छन्नवुत्ती एते पासण्डा सम्पकासिता ॥ ४४१ ॥

पवित्र ३ — पवित्तो पयतो पूतो,

चर्म २ — चम्मं तु अजिनं त्यथ ।

दन्तधोवन २ — दन्तपोणो दन्तकट्ठं,

वल्कल २ — वक्कलो वा तिरीटकं ॥ ४४२ ॥

पात्र ४ — पत्तो पातीत्थिय नित्थी कमण्डलु तु कुण्डिका ।

यष्टि १ — अथालम्बनदण्डस्मिं कत्तरयट्ठि नारिय ॥ ४४३ ॥

नित्यकर्म १ — य देहसाधनापेक्ख[3] निच्च कम्ममय यमो ।

आगन्तुक कार्य १ — आगन्तु[4] साधन कम्ममनिच्च नियमो भवे ॥ ४४४ ॥

ब्राह्मणवग्गो निट्ठितो

●

---

1. परिक्खारट्ठ–सी०, ना० ।
2. कुटीसक–म० ।
3. यन्देहसादनापेक्ख–सी० ।
4. आगन्तू–सी०, ना० ।

६. वेस्सवग्गो

वैश्य २ वेस्सो च वेसियानो,

जीविका ५ ऽथ जीवनं वुत्ति जीविका ।

आजीवो वत्तनं चा,

कृषिकर्म २ थ कसिकम्मं कसीत्थिय ॥ ४४५ ॥

वाणिज्य २ वाणिज्जं च वणिज्जा,

पशुपालन २ ऽथ गोरक्खा पसुपालनं ।

वैश्यवृत्ति ३ वेस्सस्स वुत्तियो तिस्सो गहट्ठागारिका गिही ॥ ४४६ ॥

कृषक २ खेत्ताजीवो कस्सको,

क्षेत्र २ ऽथ खेत्तं केदारमुच्चते* ।

मृत्तिकाखण्ड १ लेड्डुत्तो[1] मत्तिकाखण्डो,

कुदाल २ खणित्तीत्थ्यवदारणं‡ ॥ ४४७ ॥

लवित्र ३ दात्तं लवित्तमसित† ,

ताडनदण्ड ३ पतोदो तुत्त-[2]पाजनं‡ ।

रज्जु ३ योत्तं तु रज्जु रस्मित्थी,

फाल २ फालो तु कसको भवे卐 ॥ ४४८ ॥

---

1 लेड्डुत्तो–सी०, ना० ।

2 पाचन–सी०, ना० ।

* 'केदार· क्षेत्रम्'—अ० को० (२-९-११)

‡ 'खनित्रमवदारणम्'—अ० को० (२-९-१२)

† 'दात्र लवित्रम्'—अ० को० (२-९-१३)

‡ 'प्राजन तोदन तोत्रम्'—अ० को० (२-९-१२)

卐 'फाल. कृषिकः'—अ० को० (२-९-१३)

हल ३ नङ्गलं च हलं[1] सीरो,

लाङ्गलदण्ड १ ईसा नङ्गलदण्डके ।

युगकीलक १ सम्मा तु युगकीलस्मिं,

लाङ्गल रेखा २ सिता तु हलपद्धति ॥ ४४९ ॥

मुद्गादि धान्य मुग्गादिकेऽपरन्न[2] च,

शालि आदि धान्य पुब्बन्नं[3] सालिआदिके ।

सप्तविध धान्य सालि वीहि च कुद्रूसो गोधूमो वरको यवो ॥ ४५० ॥

कङ्गू ति सत्त धञ्ञानि नीवारादी तु तब्भिदा ।

चणक २ चणको च कलायो च,

सर्षप २ सिद्धत्थो सासपो भवे ॥ ४५१ ॥

कंगु २ अथ कङ्गु पियङ्गुत्थी,

अतसी २ उम्मा तु अतसी भवे ।

शस्य २ किट्ठं च सस्सं विञ्ञेय्य,

व्रीहि २ वीही थम्भकरीरितो ॥ ४५२ ॥

शस्यकाण्ड २ कण्डो तु नाळम-

पलाल १ थ सो पलाल नित्थि निप्फले ।

भुस २ भुसं[4] कलिङ्गरो[5] चा-

---

1 हळ—सी० ।
2. परण्ण—म० ।
3. पुब्बण्ण—म० ।
4. भूस—ना० ।
5 कळिङ्गरो—इति पि पाठो म० पोत्थके ।

तुष १	थ थुसो धञ्ञत्तचेऽथ च ॥ ४५३ ॥
शस्यरोग १	सेतट्ठिका सस्सरोगो,
कण २	कणो तु कुण्डको भवे।
खल २	खलो च धञ्ञकरणं,
तृणादिगुल्म १	थम्बो गुम्बो तिणादिन ॥ ४५४ ॥
मुशल २	अयोग्गो मुसलो नित्थी,
सूप २	कुल्लो सुप्पमनित्थिय।
चुल्ली २	अथोद्धनं च चुल्लीत्थी,
कट २	किलञ्जो तु कटो भवे ॥ ४५५ ॥
उलूखल ८	कुम्भीत्थी पीठरो कुण्डं खळो[1] पयुक्खलि[2] थाल्युखा।
अलिञ्जर ४	कोलम्बो चाथ मणिकं भाणको च अरञ्जरो ॥ ४५६ ॥
घट ५	घटो द्वीसु कुटो नित्थि कुम्भो कलस-वारका।
भोजनपात्र १	कंसो भुञ्जनपत्तो
साधारण पात्र ३	ऽथ मत्तं पत्तोऽथ भाजन ॥ ४५७ ॥
घटाधार २	अण्डुपक[3] चुम्बुटकं,[4]
शराव २	सरावो तु च मल्लको।
दर्वी २	पुमे कटच्छु दब्बीत्थि,
कुशूल २	कुसूलो कोट्ठमुच्चते ॥ ४५८ ॥

1 खलो—ना०। 2. पयूक्खलि—ना०।
3 अण्डूपक—सी०। 4. चुम्बटक—ना०।

साक २ साको अनित्थियं डाको;

आर्द्रक २ सिङ्गिवेरं[1] तु अद्दकं।

शुण्ठी १ महोसधं तु त सुक्खं;

मरिच २ मरिचं तु च कोलकं ॥ ४५९ ॥

कांजी ६ सोवीरं कंजियं वुत्त आरनाल थुसोदकं।

धञ्ञम्बिलं बिलङ्गो च;

लवण २ लवणं लोणं उच्चते ॥ ४६० ॥

पञ्चलवण ५ सामुद्दं सिन्धवो नित्थि काललोणं तु उब्भिदं।

बिळाल चेति पञ्चेते पभेदा लवणस्स हि ॥ ४६१ ॥

इक्षुसार ५ गुळो च फाणितं खण्डो मच्छण्डि[2] सक्खरा इति।

इमे उच्छुविकारा थ;

मिश्री १ गुळस्मि विसकण्टकं ॥ ४६२ ॥

अक्षत २ लाजो सिया क्खत चाथ,

धाना १ धाना भट्ठयवे भवे।

सत्तु २ अथो सत्तु च मन्थो च,

पिष्टक ३ पूपा पुपा तु पिट्ठको ॥ ४६३ ॥

पाचक ६ भत्तकारो सूपकारो सूदो आळारिको तथा।

ओदनिको च रसको;

व्यञ्जन २ सूपो तु ब्यञ्जनं भवे ॥ ४६४ ॥

---

1. सिङ्गीवेरं—म०।
2. मच्छण्डी—म०।

अन्न ५ — ओदनो वा कुरं भत्तं भिक्खा चान्नं;

आहार ४ — अथासनं।

आहारो भोजनं घासो,

यागु २ — तरलं यागु नारिय ॥ ४६५ ॥

चतुर्विधाहार — खज्जं तु भोज्जलेय्यानि पेय्यं तु चतुधासनं।

आचाम २ — निस्सावो च तथा चामो,

ग्रास २ — आलोपो कबळो भवे ॥ ४६६ ॥

मण्ड १ — मण्डो नित्थि रसग्गस्मिं,

उच्छिष्ट १ — विघासो भुत्तसेसको।

उच्छिष्टभोजी २ — विघासादो च दमको,

तृषा २ — पिपासा तु च तस्सनं ॥ ४६७ ॥

क्षुधा २ — खुदा[1] जिघच्छा मसस्स,

मासरस १ — पटिच्छादनियं रसे।

उद्गार २ — उद्रेको चेव उग्गारो,

तृप्ति ३ — सोहिच्चं तित्ति तप्पनं ॥ ४६८ ॥

पर्याप्त ५ — कामं त्विट्ठं[2] निकामं च परियत्तं यथिच्छितं।

वणिक् ४ — कयविक्कयिको सत्थवाहाऽऽपणिकवाणिजा ॥ ४६९ ॥

विक्रेता २ — विक्कयिको तु विक्केता,

कयिको तु च कायिको।

उत्तमर्ण २ — उत्तमण्णो च धनिको,

अधमर्ण २ — अधमण्णो तु इणायिको ॥ ४७० ॥

---

1 खुद्दा—म०।

2. त्वीट्टं — म०।

ऋण २ उद्धारो तु इणं वुत्त;

मूलधन २ मूलं तु पाभतं भवे।

सत्यकार २ सच्चापणं[1] सच्चकारो;

विक्रययोग्य २ विक्केय्यं पणियं तिसु ॥ ४७१ ॥

प्रत्यर्पण २ पतिदानं परिवत्तो,

न्यास २ न्यासो तु पणिधीरितो।

संख्याप्रकार अट्ठारसन्ता सङ्ख्येय्ये सङ्ख्या एकादयो तिसु ॥ ४७२ ॥

सङ्ख्याने तु च सङ्ख्येय्ये एकत्ते वीसतादयो[2]।

वग्गभेदे बहुत्ते पि ता आनवुति नारियं ॥ ४७३ ॥

संख्याविशेष २४ सतं सहस्सं नियुतं[3] लक्खं कोटि पकोटियो।

कोटिप्पकोटि[4] नहुतं तथा निन्नहुतं पि च ॥ ४७४ ॥

अक्खोहिणी त्थिय बिन्दु अब्बुदं च निरब्बुदं।

अहहं अबबं चेवाटटं सोगन्धिकुप्पलं ॥ ४७५ ॥

कुमुदं पुण्डरीकं च पदुमं कथानं* पि च।

महाकथाना सङ्खेय्या निच्चेतासु सतादि च ॥ ४७६ ॥

कोट्यादिकं दसगुणं सतलक्खगुणं कमा।

सार्द्धत्रय १ चतुत्थोड्ढेन अड्ढुड्ढो,

सार्द्धद्वय १ ततियोऽड्ढतियो तथा ॥ ४७७ ॥

सार्द्ध ३ अड्ढतेय्यो दियड्ढो तु दिवड्ढो दुतियो भवे।

तुला पत्थङ्गुलि[5] वसा विधा मापमथो सिया ॥ ४७८ ॥

---

1. पच्चापण — म०।
2. विसतादयो — सी०।
3. नहुत — ना०।
4. कोटिपकोटि — म०।
* वुत्तभङ्गो।
5. पत्थुङ्गुलि — म०।

रत्ती १ — चत्तारो वीहयो गुञ्जा[1];

माषक १ — द्वे गुञ्जा मासको[1] भवे।

अक्ष १ — द्वे अक्खा[1] मासका पञ्चा-

धरण १ — क्खातं धरणमट्ठकं[1] ॥ ४७९ ॥

सुवर्ण १ — सुवण्णो[1] पञ्च धरण,

निष्क १ — निक्खं[1] त्वनित्थि पञ्च ते।

चतुर्थांश १ — पादो भागे चतुत्थे थ;

पल १ — धरणानि पलं[1] दस ॥ ४८० ॥

तुला १ — तुला[1] पलसतं चाथ;

भार १ — भारो[1] वीसति ता तुला।

कार्षापण २ — अथो कहापणो[1] नित्थि कथ्यते करिसापणो[2] ॥ ४८१ ॥

कुडव २ — कुडुवो[1] पसतो[2] एको;

प्रस्थ १ — पत्थो[1] ते चतुरो सिय।

आढक १ — आळ्हको[1] चतुरो पत्था;

द्रोण १ — दोण[1] वा चतुराळ्हकं ॥ ४८२ ॥

माणिका १ — माणिका[1] चतुरो दोणा,

खारी १ — खारि[1] त्थी चतुमाणिका।

वाह १ — खारियो वीस वाहो[1] थ,

कुम्भ १ — सिया कुम्भो[1] दसम्मण ॥ ४८३ ॥

सेर २ — आळ्हको[1] नित्थिय तुम्बो[2],

नाळी २ — पत्थो[1] तु नालि[2] नारियं।

शकट २ वाहो तु सकटो चेका-

अम्मण १ दस दोणा तु अम्मणं[1] ॥ ४८४ ॥

अंश ४ पटिविंसो च कोट्ठासो अंसो भागो;

धन ८ धनं तुसो ।

दब्बं वित्तं सापतेय्यं वस्वत्थो विभवो भवे ॥ ४८५ ॥

कोष २ कोसो हिरञ्ञं च कताकतं कञ्चनरूपियं ।

कुप्य १ कुप्पं तदञ्ञं तम्बादि,

रूप्य १ रूपियं द्वयमाहतं ॥ ४८६ ॥

सुवर्ण १३ सुवण्णं कनकं जातरूपं सोण्णं च कञ्चनं ।

सत्थुवण्णो* हरि[2] कम्बु चारु हेमं च हाटकं ॥ ४८७ ॥

तपनीयं हिरञ्ञं,

सुवर्णभेद ४ तब्भेदा चामीकरं पि च ।

सातकुम्भं तथा जम्बुनद सिङ्गी च नारिय ॥ ४८८ ॥

रजत ५ रूपियं रजतं सज्झु रूपि सज्झं,

रत्न ३ अथो वसु ।

रतनं च मणि द्वीसु;

रत्नप्रकार फुस्सरागादि तब्भिदा ॥ ४८९ ॥

सप्तरत्न सुवण्णं रजतं मुत्ता मणि वेलुरियानि च ।

वजिरं च पवालं ति सत्ताहु रतनानिमे ॥ ४९० ॥

---

1. अम्बणं—म० ।

* वुत्तभङ्गो ।

2. हरी—सी० ।

पद्मरागमणि ३ लोहितको[1] च पदुमरागो रत्तमणी प्यथ।

वैदूर्यमणि २ वंसवण्णो वेलुरियं,

प्रवाल २ प्रवालं वा च विद्दुमो ॥ ४९१ ॥

मसारगल्ल २ मसारगलं कबरमणि,

मुक्ता २ अथ मुत्ता च मुत्तिकं।

पित्तल २ रीरि त्यौ[2] आरकुटो वा,

अभ्रक २ अमल त्वब्भकं भवे ॥ ४९२ ॥

लोह ३ लोहो नित्थि अयो काळायसं,

पारद २ च पारदो रसो।

त्रपु २ काळतिपु तु सीस च,

हरिताल २ हरितालं तु पीतन ॥ ४९३ ॥

सिन्दूर २ चीनपिट्ठं च सिन्दूरं,

तूल २ अथ तूलो तथा पिचु।

मधु १ खुद्दजन्तु मधुखुद्दं,

मधूच्छिष्ट २ मधुच्छिट्ठं तु सित्थकं ॥ ४९४ ॥

गोप ३ गोपालो गोपगोसख्या,

गोस्वामी २ गोमा तु गोमिको प्यथ।

वृषभ ६ उसभो बलिवद्दो थ गोणो गो वसभो वुसो ॥ ४९५ ॥

वृद्धवृषभ १ वुद्धो जरग्गवो सोऽथ,

वत्सतर २ दम्मो वच्छतरो समा।

1. लोहितको—म०, सी०।
2. रिरित्यौ—म०।

भारवाही २	धुरवाही[1] तु धोरय्हो[2];
गोविन्द १	गोविन्दोऽधिकतो[1] गव ॥ ४९६ ॥
गोस्कन्ध १	वहो[1] च खन्धदेसो थ;
ककुध २	ककुधो[1] ककु[2] वुच्चते ।
शृङ्ग २	अथो विसाणं[1] सिङ्गं[2] च,
रक्तवर्ण गौ २	रत्तगावी[1] तु रोहिणी[2] ॥ ४९७ ॥
गौ ३	गावी[1] च सिङ्गिनी[2] गो[3] च,
वन्ध्या गौ १	वञ्झा तु कथ्यते वसा[1] ।
धेनु १	नवप्पसूतिका धेनु[1];
वत्सला गौ १	वच्छकामा तु वच्छला[1] ॥ ४९८ ॥
मन्थनपात्र २	गग्गरी[1] मन्थनी[2] त्थि द्वे,
सन्दान २	सन्दानं[1] दाम[2] मुच्चते ।
गोमय १	गोमीळ्हो गोमयो[1] नित्थि;
घृत २	अथो सप्पि[1] घतं[2] भवे ॥ ४९९ ॥
नवनीत १	नवुद्धट तु नोनीत[1],
दधिमण्ड २	दधिमण्डं[1] तु मत्थु[2] च ।
क्षीर ४	खीरं[1] दुद्धं[2] पयो[3] थञ्ञं[4],
तक्र २	तक्कं[1] तु मथितं[2] त्यथ ॥ ५०० ॥
पञ्च गोरस	खीरं[1] दधि[2] घतं[3] तक्कं[4] नोनीतं[5] पञ्च गोरसा ।
मेष ६	उरब्भो[1] मेण्डमेसा[2][3] च उरणो[4] अवि[5] एळको[6] ॥ ५०१ ॥

छाग ३ वस्सो[1] त्वजो[2] छकलको[3];

उष्ट्र २ ओट्ठो[1] तु करभो[2] भवे।

गर्दभ २ गद्रभो[1] तु खरो[2] वुत्तो;

छागी ३ उरणी[1] तु अजी[2] अजा[3] ॥ ५०२ ॥

वेस्सवग्गो निट्ठितो

●

७. सुद्दवग्गो[1]

शूद्र ३	सुद्दोऽन्तवण्णो वसलो;
मिश्रवर्ण १	संकिण्णा मागधादयो।
मागध १	मागधो[2] सुद्दखत्ताजो;
उग्र १	उग्गो सुद्दाय खत्तजो ॥ ५०३ ॥
सूत १	द्विजाखत्तियजो सूतो;
शिल्पी २	कारु तु सिप्पिका पुमे।
श्रेणी	सघातो तु सजातीन तेस सेणि द्विसुच्चते ॥ ५०४ ॥
पञ्चविध	तच्छको तन्तवायो च रजको च नहापितो।
शिल्पी	पञ्चमो चम्मकारो ति कारवो पञ्चिमे सियु ॥ ५०५ ॥
तक्षक ५	तच्छको वड्ढकी मतो पलगण्डी थपत्यपि।
	रथकारोऽथ;
सुवर्णकार २	सुवण्णकारो नाळिन्धमो भवे ॥ ५०६ ॥
तन्तुवाय २	तन्तवायो पेसकारो,
मालाकार २	मालाकारो तु मालिको।
कुम्भकार २	कुम्भकारो कुलालोऽथ;
सूचिक २	तुण्णवायो च सूचिको ॥ ५०७ ॥
चर्मकार २	चम्मकारो रथकारो,
कल्पक २	कप्पको तु नहापितो।
चित्रकार २	रंगाजीवो चित्तकारो;
पुष्पवर्जक १	पुक्कसो[3] पुप्फछड्डको ॥ ५०८ ॥

---

1. सी०, म० पोत्थकेसु नत्थि।
2. मागमो—म०।
3. पुक्कसो—म०।

नळकार ३ — वेणो[1] विलोवकारो च नळकारो समा तयो।
चुन्दकार २ — चुन्दकारो भमकारो,
कम्मार २ — कम्मारो लोहकारको ॥ ५०९ ॥
रजक २ — निन्नेजको च रजको,
जलाहारक २ — नेत्तिको उदहारको।
वीणावादी २ — वीणावादी वेणिविको[2] थ,
धानुष्क २ — उसुकारोसुवड्ढकी ॥ ५१० ॥
वंशीवादक २ — वेणुधमो* वेणविको,
हस्तवाद्यवादक २ — पाणिवादो तु पाणियो।
पिष्टविक्रेता २ — पुपियो[3] पूपपणियो,
मद्यविक्रेता २ — सोण्डिको मज्जविक्कयी ॥ ५११ ॥
इन्द्रजाल २ — माया तु संवरी,
ऐन्द्रजालिक २ — मायाकारो तु इन्द्रजालिको ॥ ५१२ ॥
शौकरिक २ — ओरब्भिकसूकरिका,
मृगयाकारी २ — मागविका ते च साकुणिका।
हन्त्वा जीवन्त्येळक-सूकर-पक्खिनो कमतो + ॥ ५१३ ॥
वागुरिक २ — वागुरिको जालिको थ,
भारवाही २ — भारवाहो तु भारिको।

---

1. वेनो०—म०।
2. वेणिको—म०।
* वुत्तभङ्गो।
3. पूपियो—म०, सी०।
\+ आर्या छन्दो।

भृत्य ३ वेतनिको तु भतको तथा कम्मकरो भवे।

दास ५ दासो च चेटको पेस्सो किङ्कारो परिचारिको ॥५१४॥

क्रीतदास ४ अन्तोजातो धनक्कीतो दासब्योपगतो सयं।

दासा करमरानीतो चेव ते चतुधा सियु ॥ ५१५ ॥

दासकर्मयुक्त २ अदासो तु भुजिस्सोऽथ,

नीच ३ नीचो जम्मो निहीनको।

अनलस २ निक्कोसज्जो अकिलासु,

मन्द २ मन्दो तु अलसोऽप्यथ ॥ ५१६ ॥

चाण्डाल ४ सपाको चेव चण्डालो मातङ्गो सपचो भवे।

किरातादि तब्बिसेसा[1] किरातादि,

म्लेच्छजाति मिलक्खजातियोऽप्यथ[1] ॥ ५१७ ॥

व्याध ३ नेसादो लुद्दको व्याधो,

मृगव्याध २ मिगवो तु मिगव्यधो।

श्वान ११ सारमेय्यो च सुनखो सुणो सोणो च कुक्करो ॥ ५१८ ॥

स्वानो सुवानो साळूरो[2] सूनो सानो च सा पुमे।

उन्मत्तश्वान २ उन्मत्तादितमापन्नो अळक्को तिसुणो मतो ॥ ५१९ ॥

श्वानशृङ्खल २ साबन्धनं तु गद्दूलो,

वन्यजन्तुबन्धन २ दीपको तु च चेतको।

1-1. तब्भेदा मिलक्खजाति किरातो सबरादयो—म०।

2. साळुरो-मा०।

बन्धन १ बन्धनं गण्ठिपासो च;

वाकरादि २ वाकरा[1] मिगबन्धिनी ॥ ५२० ॥

मत्स्यगलद्वारक २ थिय कुवेणि कुमिनं[2];

जाल २ आनायो जालमुच्चते ।

वध्य भूमि २ आघातनं वधट्ठानं,

शूना २ सूणा तु अधिकोट्टनं ॥ ५२१ ॥

तस्कर ५ तक्करो मोसको चोरो थेनेकागारिका समा ।

चौर्य ३ थेय्यं च चोरिको[3] मोसो,

वेम २ वेमो वायनदण्डको ॥ ५२२ ॥

तन्तु ३ सुत्त तन्तू[4] पुमे तन्तं,

पुस्तक १ पोत्थं लेख्यादिकम्मनि ।

पञ्चालिका २ पञ्चालिका पोत्थलिका वत्थदन्तादिनिम्मिता ॥ ५२३ ॥

घटीयन्त्र २ उग्घाटनं घटीयन्तं कूपाम्बुब्बाहन भवे ।

मञ्जूषा २ मञ्जूसा पेळा;

पिटक ३ पिटको त्वित्थिय पच्छि पेटको ॥ ५२४ ॥*

भारवहनदण्ड २ ब्यामङ्गी[5] त्वित्थिय काजो,

सिक्का १ सिक्का तत्रावलम्बन ।

---

1 वाकारा—म० । 2 कुमीन—म० ।
3 चोरिका—सी० ।
4. तन्तु—म० ।
* वुत्तभङ्गो ।
5. ब्यासङ्गी—म० ।

उपाहन २	उपाहनो वा पादु त्थि;
तद्भेद १	तब्भेदा पादुका प्यथ ॥ ५२५ ॥
वरत्रा ३	वरत्ता वट्टिका[1] नन्धि[2];
भस्त्रा २	भस्ता चम्मपसिब्बकं ।
मूषा १	सोण्णाद्यावत्तनी मूसा;
मुद्गर २	थ कुटं[3] वा अयोघनो ॥ ५२६ ॥
सन्दास १	कम्मारभण्डा सण्डासो,
अधिकरणी २	मुठ्याधिकरणी त्थियं ।
गग्गरी १	तब्भस्ता गग्गरी नारी;
कर्तरी १	सत्थ तु पिप्फलं भवे ॥ ५२७ ॥
निकष २	साणो तु निकसो वुत्तो,
आर २	आरा तु सूचिविज्झनं ।
क्रकच २	खरो च ककचो नित्थि,
शिल्प २	सिप्पं कम्म कलादिक ॥ ५२८ ॥
प्रतिमा ४	पटिमा पटिबिम्बं च बिम्बो पटिनिधीरितो ।
सदृश १०	तीसु समो पटिभागो[4] सन्निकासो सरिक्खको ॥५२९॥
	समानो सदिसो तुल्यो सङ्कासो सन्निभो निभो ।
उपमा ३	ओपम्ममुपमानं चोपमा,
वेतन ४	भति तु नारियं ॥ ५३० ॥

1. वद्धिका – म० ।
2. नन्धी (?) ।
3. कूटं – सी० ।
4. पटीभागो (?) ।

निब्बेसो वेतनं मूल्यं;

द्यूत २ जूतं त्वनित्थि केतवं।

धूर्त ५ धुत्तोऽक्खधुत्तो कितवो;

जूतकारक्खदेविनो[1] ॥ ५३१ ॥

प्रतिभू २ पाटिभोगो तु पटिभू,

पाशक २ अक्खो तु पासको भवे।

सारिफलक २ पुमे वाट्ठापदं सारिफलको[2] च;

पण २ पणोऽब्भुतो ॥ ५३२ ॥

मद्यबीज १ किण्णं तु मदिराबीजे,

मधु १ मधु मध्वासवे मतं।

मदिरा ४ मदिरा[3] वारुणी मज्ज सुरा-

आसव २ ऽऽसवो तु मेरयं ॥ ५३३ ॥

पानपात्र २ सरको चसको नित्थि,

पानस्थान २ आपानं पानमण्डलं ॥ ५३४ ॥

येऽत्र भूरिप्पयोगत्ता योगिकेकस्मिमीरिता।

लिङ्गन्तरेऽपि ते ञेय्या तद्धम्मत्ताञ्ञवुत्तिय ॥ ५३५ ॥

सुद्दवग्गो[4] निट्ठितो[5]

चतुब्बण्णवग्गो निट्ठितो[6]

●

---

1. देवीनो—ना० ।
2. फलके च—म० ।
3. मदुरा—म० ।
4. सुद्दवग्गो ति म० पोत्थके नत्थि ।
5. निट्ठिदि—म० । 6 निट्ठिदि—म० ।

८. अरञ्ञवग्गो*

अरण्य ७	अरञ्ञा काननं दायो गहनं विपिनं वनं।
महारण्य २	अटवी त्थि महारञ्ञं त्वरञ्ञानित्थियं भवे ॥ ५३६ ॥
उपवन २	नगरा नातिदूरस्मिं सस्नेहि[1] योभिरोपितो।
	तरुसण्डो स आरामो तथोपवनमुच्चते ॥ ५३७ ॥
उद्यान १	सब्बसाधारणारञ्ञं रञ्ञमुय्यानमुच्चते।
प्रमदवन १	ञेय्यं तदेवप्पमदवनमन्तेपुरोचितं ॥ ५३८ ॥
श्रेणी ५	पन्ति वीथ्यावलि स्सेणी पाळि,
रेखा २	रेखा तु राजि च।
वृक्ष १०	पादपो विटपी[2] रुक्खो अगो सालो महीरुहो ॥ ५३९ ॥
	दुमो तरु कुजो साखी,
क्षुद्रतरु १	गच्छो तु खुद्दपादपो।
वनस्पति १	फलन्ति ये विना पुप्फं ते वुच्चन्ति वनप्पती[3] ॥ ५४० ॥
ओषधि १	फलपाकावसाने यो मरत्योसधि सा भवे।
निष्फल वृक्ष २	तीसु वंझा ऽफला चाथ,
फलवान् वृक्ष ३	फलिनो फलवा फली[4] ॥ ५४१ ॥
प्रस्फुटित ४	सम्फुल्लितो तु विकचो फुल्लो विकसितो तिसु[5]।
वृक्षाग्र भाग ३	सिरोऽग्गं सिखरो,
शाखा २	साखा तु कथिता लता ॥ ५४२ ॥

---

1 सन्नेहि—म०। 2. विटपो—(?)। 3. वनप्पति—सी०। कथं तहि साल्मली रुक्खो कादम्बरिय वनप्पति ति वुत्तो ?—स०।

4 फली—सी०। 5 तीसु—म०।

* सी० पोत्थके 'अरञ्ञवग्गो' ति सद्दतो पुब्बम्हि 'नमो बुद्धाय' ति विज्जति।

पत्र ६ — दलं पलासं छदनं पण्णं पत्तं छदो प्यथ।

पल्लव २ — पल्लवो वा किसलय,

जालक २ — खारको तु च जालकं ॥ ५४३ ॥

कलिका २ — कलिका कोरको नित्थि,

वृन्त १ — वण्टं पुप्फादिबन्धन ॥ ५४४ ॥*

पुष्प ३ — पसवो कुसुमं पुप्फं,

पराग १ — परागो पुप्फजो रजो।

मकरन्द २ — मकरन्दो मधु मत,

गुच्छक २ — थबको तु च गोच्छको ॥ ५४५ ॥

अपक्व फल १ — फले त्वामे सलाटु त्तो;

फल १ — फलं तु पक्वमुच्चते।

चम्पकादी[1] तु कुसुमफलनाम नपुंसके ॥ ५४६ ॥

मल्लिकादी तु कुसुमे सलिङ्गा वीहयो फले।

जम्बू ३ — जम्बू त्थि जाम्बव कम्बु,

शाखापल्लवसमूह २ — विटपो विटपी त्थिय ॥ ५४७ ॥

स्कन्ध १ — मूलमारब्भ साखन्तो खन्धो भागो तरुस्स च।

कोटर १ — कोटरो नित्थिय रुक्खच्छिद्दे,

काष्ठ २ — कट्ठं तु दारु च ॥ ५४८ ॥

वृक्षमूल ३ — बुन्दो गूलं[2] च पादो थ,

शङ्कु २ — सङ्कुत्तो खाणु नित्थियं।

कन्द २ — करहाटं तु कन्दो थ,

बिसाकुर २ — कळीरो मत्थको भवे ॥ ५४९ ॥

---

* पल्लवो वा किसलय नवुब्भिन्ने तु अङ्कुरो।
मकुल वा कुड्मलो खारको तु च जालक—सी० म०।

1. चम्पकादि—म०। 2. मूल—म०, सी०।

मञ्जरी २ — वल्लरी मञ्जरी नारी,

वल्ली २ — वल्ली तु कथिता लता।

गुल्म २ — थम्मो[1] तु[2] गुम्बो अक्खन्धे[3],

पश्चादि लता — लता विरु पतानिनी ॥ ५५० ॥

अश्वत्थ वृक्ष २ — अस्सत्थो बोधि च द्वीसु,

वट २ — निग्गोधो तु वटो भवे।

कपित्थ २ — कविट्ठो च कपित्थो च,

उदुम्बर २ — यञ्ञङ्गो तु उदुम्बरो ॥ ५५१ ॥

रक्त काचन ३ — कोविळारो युगपत्तो उद्दालो,

राजवृक्ष ४ — वातघातको।

राजरुक्खो कमालीन्दविरो[4] व्याधिघातको ॥ ५५२ ॥

जम्भीर २ — दन्तसट्ठो च जम्भीरो,

वरण २ — वरणो तु करेरि च।

किंसुक २ — किंसुको पालिभद्दो थ,

वेतस २ — वञ्जुलो तु च वेतसो ॥ ५५३ ॥

अवाटक २ — अम्बाटको पीतनको,

मधुक २ — मधुको तु मधुद्दुमो[5]।

---

1 थम्भो —म०।
2 'तु' म० पोत्थके नत्थि।
3 अखन्धो — मी०।
4 इन्दविरा०—सी०।
5 मधुद्दुमो—ता०।

पीलु २ — अथा गुळफलो पीलु,
सोभञ्जन २ — सोभञ्जनो च सिग्गु च ॥ ५५४ ॥
सप्तपर्ण वृक्ष २ — सत्तपण्णि छत्तपण्णो,
तिनीश २ — तिनीसो त्वतिमुत्तको ।
पलाश २ — किंसुको तु पलासोऽथ,
अरिष्ट २ — अरिट्ठो फणिलो भवे ॥ ५५५ ॥
श्रीफल वृक्ष ३ — मालूर[1] बेलुवा बिल्लो,
पुन्नाग २ — पुन्नागो तु च केसरो ।
लोध्र २ — गालवो[2] तु च लोद्दोऽथ,
पियाल २ — पियालो सन्नकद्दु च ॥ ५५६ ॥
अकाल २ — लिकोचको तथाऽङ्कोलो,
गुग्गुल २ — अथ गुग्गुल कोसिको ।
आम्र २ — अम्बो चूतो,
सहकार २ — सहो त्वेसो सहकारो सुगन्धवा ॥ ५५७ ॥
पुण्डरीक २ — पुण्डरीको च सेतम्बो,
बहुवारक २ — सेलु तु बहुवारको ।
काश्मीरी २ — सेपण्णी कास्मरी चाथ,
बदरी २ — कोली च बदरी त्थिय ॥ ५५८ ॥
बदर २ — कोलं चानित्थि बदरो,
पिप्पली २ — पिलक्खो पिप्पली त्थिय ।

---

1. मालुर—सी०, ना० ।
2. गाळवो – म० ।

पाटली वृक्ष २ पाटली कण्हवण्टा च;

कण्टकित गुल्म २ सादुकण्टो विकंकतो ॥ ५५९ ॥

तिन्दुक ४ तिन्दुको काळक्खन्धो च तिम्बरूसक तिम्बरू ।

नारग २ एरावतो तु नारङ्गो,

काकतिन्दुक २ कुलको काकतिन्दुको ॥ ५६० ॥

कदम्ब ३ कदम्बो पियको नीपो,

भल्लातक २ भल्ली भल्लातको तिसु ।

पिचुल २ झावुको पिचुलो चाथ,

तिलक २ तिलको खुरको भवे ॥ ५६१ ॥

चिंचा २ चिञ्चा च तिन्तिणी चाथ,

कपीतन २ गद्दभण्डो[1] कपीतनो ।

शाल ३ साळो ऽसकण्णो सज्जोऽथ,

अर्जुन २ अज्जुनो ककुधो भवे । ५६२ ॥

निचुल ३ निचुलो मुचालिन्दो[2] च नीपो,

पीतशाला ३ थ पियको तथा ।

असको पीतसालोऽथ,

झाटल २ गोलीसो[3] झाटलो भवे ॥ ५६३ ॥

क्षारिवृक्ष २ खोरिका राजायतन,

कुम्भो २ कुम्भी कुमुदिका भवे ।

पूग २ पूगो तु कमुको चाथ,

पट्टिकालोध्र २ पट्टि लाखापसादनो ॥ ५६४ ॥

---

1 गद्दभण्डो—सी०, ना० ।

2. मुचलिन्द—म० सी० ।

3 क्वचि—गोळीढो—सी०

इङ्गुदी २ — इङ्गुदी तापसतरु;

भूर्जपत्र २ — भुजपत्तो तु आभुजी ।

सिंबली ४ — पिच्छिला सिम्बली द्वीसु रोचनो कूटसिम्बली[1] ॥५६५॥

पूतिक २ — पकिरियो पूतिकोऽथ*,

रोहितक २ — रोहि रोहितको भवे ।

एरण्ड २ — एरण्डो तु च आमण्डो,

समी २ — अथ सत्तुफला समी ॥ ५६६ ॥

करज २ — नत्तमालो करञ्जोऽथ,

खदिर २ — खदिरो दन्तधावनो ।

कदर २ — सोमवक्को तु कदरो,

मदन २ — सोल्लो तु मदनो भवे ॥ ५६७ ॥

इन्द्रशाल ३ — अथापि इन्द्रसाला च सल्लकी खारका सिया ।

देवदारु २ — देवदारु भद्रदारु,

चम्पक २ — चम्पेय्यो तु च चम्पको ॥ ५६८ ॥

पनस २ — पनसो कण्टकीफलो,

हरीतकी २ — अभया तु हरीतकी ।

बिभीतक २ — अक्खो विभीटको तीसु,

आमलक २ — अमताऽमलकी तिसु ॥ ५६९ ॥

लबुज २ — लबुजो लिकुचो[3] वाथ,

कर्णिकार २ — कणिकारो दुमुप्पलो ।

---

1 कूटसिम्बली—म०, सी० ।

* वुत्तभङ्गो ।

3 लिकुवचो—सी० ।

निम्ब ३	निम्बो अरिट्ठो सुचिमन्दो[1],*
दाडिम २	करको तु च दाळिमो ॥ ५७० ॥
सरल २	सरलो पूतिकट्ठं च,
शिंशप २	कपिला तु च सिंसपा ।
प्रियङ्गु ३	सामा पियङ्गु कङ्गु[2] पि,
शिरीष २	सिरीसो तु च भण्डिलो ॥ ५७१ ॥
शोण वृक्ष २	सोनको दीघवण्टो च,
बकुल २	बकुलो तु च केसरो ।
काकोदुम्बर २	काकोदुम्बरिका फेग्गु,
नग २	नागो तु नागमालिका ॥ ५७२ ॥
अशोक २	असोको वञ्जुलो चाथ,
वैजयन्ती २	तक्कारी वेजयन्तिका ।
तमाल २	तापिञ्जो च तमालोऽथ,
कुटज २	कुटजो गिरिमल्लिका । ५७३ ॥
इन्द्रयव १	इन्दयवो थले[3] तस्सा,
कर्णिका २	ऽग्गिमन्थो कणिका भवे ।
निर्गुण्डी २	निग्गुण्डि त्थी सिन्दुवारो,
मल्लिका २	तिणसूलं तु मल्लिका ॥ ५७४ ॥
शेफालिक २	सेफालिका नीलिकाथ,

---

1. पुचिमन्दो — म० ।

* वुत्तभङ्गो ।

2 कङ्गू (?)

3 फले — म० ।

वनमल्लिका २ — अप्फोटा वनमल्लिका ।

बन्धुक ४ — बन्धुको जयसुमनं मण्डिको बन्धुजीवको + ॥ ५७५ ॥

मालती पुष्प ५ — सुमना जातिसुमना मालती[1] जाति वस्सिकी ।

यूथिका २ — यूथिका मागधी चाथ,

नवमल्लिका २ — सत्तला नवमालिका ॥ ५७६ ।

माधवीलता २ — वासन्ति त्थि अत्तिमुत्तो[2],

करवीर २ — करवीरोऽस्समारको ।

बीजपूरक २ — मातुलुङ्गो बीजपूरो,

मातुल २ — उम्मत्तो तु च मातुलो । ५७७ ।

करमर्द्दक २ — करमद्दो सुसेनो च,

कुन्द २ — कुन्दं तु माध्यमुच्चते ।

जीमूत २ — देवतासो तु जीमूतो,

आमलावृक्ष २ — थामिलातो[3] महासहा ॥ ५७८ ॥

झिंटिका वृक्ष ४ — अथो सेरेय्यको दासी[4] किङ्किरातो कुरण्डको ।

श्वेतपर्णाश १ — अज्जुको सितपन्नासे,

जम्बीरविशेष २ — समीरणो[5] फणिज्झको ॥ ५७९ ॥

+ वुत्तभङ्गो ।

1 मालति -सी०, ना० । मालत्थी -म० ।

2 अतिमुत्तो—म०, सी० ।

3 मिलानो—सी० ।

4. दासो—(?) ।

5. समीरण—(?) ।

जपा २	जपा तु जीवसुमन[1]
क्रकच २	करीरो ककचो भवे।
वृक्षादनी २	रुक्खादनी च वन्दाका,
चित्रक २	चित्तको त्वग्गिसञ्ञितो ॥ ५८० ॥
अर्क २	अक्को विकिरणो तस्मि,
श्वेतार्क १	न्व ळक्को सेतपुप्फके।
गळोची २	पूतिलता[2] गळोची च
मुर्व्वालता २	मुब्बा मधुरसाप्यथ ॥ ५८१ ॥
कपिकच्छू २	कपिकच्छु दुफस्मोऽथ,
मञ्जिष्ठा २	मञ्जिट्ठा विकसा भवे।
आम्वष्ठ २	अम्बट्ठा च तथा पाठा,
कटुक २	कटुका कटुकरोहिणी ॥ ५८२ ॥
शैखरिक २	अपामग्गो सेखरिको,
पिप्पलीलता २	पिप्फली मागधी मता।
गोक्षुर २	गोकण्टको च सिङ्घाटो,
कोलवल्ली २	कोलवल्लीभपिप्फली[3] ॥ ५८३ ॥
वच २	गोलोमी तु वचा चाथ,
अपराजिता २	गिरिकण्यपराजिता।

1 जयसुमन—म०।

2 बूतिलता—ना०।

3. ०थपिप्फली—म०।

सिंहपुच्छी २ — सीहपुच्छि पञ्हिपण्णी,

शालपर्णी २ — सालपण्णी तु चत्थिरा ।। ५८४ ।।

कटकारी २ — निदिग्डिका तु ब्यग्घी[1] च,

मधुपर्णिका २ — अथ नीली च नीलिनी ।

गुञ्जिका २ — जिञ्जुको चेव गुञ्जा थ;

शतमूली २ — सतमूली सतावरी ।। ५८५ ।।

अतिविषा २ — महोसध त्वतिवसा,

सोमराजी २ — बाकुची सोमवल्लिका ।

दारुहरिद्रा २ — दाब्बी दारुहलिद्दा थ,

विरंग २ — विळङ्ग चित्रतण्डुला ।। ५८६ ।।

स्नुही २ — नुही चेव महानामो,

मधुरसा २ — मुद्दिका तु मधुरसा[2] ।

यष्टिमधु — अथापि मधुकं यट्ठिमधुका मधुलट्ठिका ।। ५८७ ।।

वार्ताक २ — वातिङ्गणो च भण्डाको,

बृहती २ — वात्ताकी ब्रहती त्वथ ।

नागबला २ — नागबला चेव झसा,

लांगली २ — लाङ्गली तु च सारदी ।। ५८८ ।।

कदली ३ — रम्भा च कदली मोचो,

कार्पास २ — कप्पासी बदरा[3] भवे ।

1. ब्यग्घी—म० ।
2. मधूरसा (?) ।
3. खदरा—म० ।

ताम्बूल २ — नागलता तु ताम्बूली[1],

धातकी पुष्प २ — अग्गिजाला तु धातकी ॥ ५८९ ॥

शुक्रवर्ण तेवरी २ — तिवुता तिपुटा चाथ,

कृष्णवर्ण तेवरी २ — सामा काळा च कथ्यते ।

कर्कटशृङ्गी २ — अथो सिङ्गी च उसभो,

रेणुका (गन्धद्रव्य) २ — रेणुको[2] कपिला भवे ॥ ५९० ॥

वाला २ — हिरिवेर च वालं च,

रक्तफला २ — रत्तफला तु बिम्बिका ।*

श्वेतार्क २ — मेलेय्य मरमपुप्फं च,

एला २ — एला तु बहुला भवे ॥ ५९१ ॥

कुष्ठ २ — कुट्ठं च ब्याधि कथितो,

कुटनट्ट २ — वानेय्यं तु कुटन्नटं ।

ओषधि २ — ओसधी जातिमत्तम्ह्योसधं[3] सब्बमजातिय ॥ ५९२ ॥

शाकप्रकार १० — मूलं पत्तं कळीरग्गं कण्डं मिञ्जा फलं तथा ।
तचो पुप्फं च छत्तं ति साकं दसविध मत ॥ ५९३ ॥

फल्गु फल २ — पपुन्नाटो एळगलो,

अल्पमारिष २ — तण्डुलेय्योऽप्पमारिसो ।

जीवनीलता २ — जीवन्ती जीवनी चाथ,

जीवकवृक्ष २ — मधुरको च जीवको ॥ ५९४ ॥

---

1 ताम्बूलि—सी० । 2 रेणुका—सी० ।

* वृत्तभङ्गो ।

3 मोसधं—म० ।

लहसुन २	महाकन्दो च लसुन[1],
पलाण्डु २	पलण्डु तु मुकन्दको ।
पटोललता २	पटोलो तित्तको चाथ,
भृङ्गराज २	भिङ्गराजो च माक्कवो ॥ ५९५ ॥
पुनर्नवा २	पुनन्नवा सोथघाति,
वितुन्नक २	वितुन्नं सुनिसन्नक ।
करवेल्लक २	कारवेल्लो तु सुसवि,
तुम्बी ३	तुम्ब्यलाबु च लाबु सा ॥ ५९६ ॥
आलु २	एळालुक च कक्कारी,
कालिङ्ग २	कुम्भण्डो तु च वल्लिभो ।
इन्द्रवारुणी २	इन्दवारुणि विसाला +,
वथवा २	वत्थुलं वत्थुलेय्यको ॥ ५९७ ॥
मूलक २	मूलको निल्थिय चुच्चू,
ताम्रपत्रविशेष २	तम्बको च कलम्बको ।
शाकभेद ३	साकभेदा काममद्द झज्झरी फग्गवादयो ॥ ५९८ ॥
हरिद्वर्ण तृण २	सद्दलो चेव दुब्बा च,
श्वेतदूर्वा २	गोलूमी सा सिता भवे ।
मोथा २	गुन्दा च भद्दमुत्त च,
इक्षु २	रसालो तूच्छु,
वंश ४	वेलु तु ॥ ५९९ ॥

---

1 लसुण – म० ।

+ . वुत्तभङ्गो ।

तचसारो वेणु वंसो;

वंशादिग्रन्थि ३ पब्बं तु फलु गण्ठि सो ।

कीचक १ कीचका ते सियु वेणू[1] ये नदत्यनिलोद्धुता ॥ ६०० ॥

नल २ नळो च धमनो,

काशतृण २ पोटगलो तु कासमित्थि न ।

शरतृण २ तेजनो तु सरो,

कुशतृण ४ मूल तु सीरं बीरणस्य हि ॥ ६०१ ॥

कुसो बरिहिसं दब्भो,

भूतृण २ भूतिणकं तु भूतिणं ।

घास २ घासो तु यवसो चाथ,

पूगवृक्ष २ पूगो तु कमुको भवे ॥ ६०२ ॥

तालवृक्ष २ तालो विभेदिका चाथ,

खर्जूरवृक्ष २ खज्जुरी सिन्दि वुच्चति ॥ ६०३ ॥

हिन्ताल १ हिन्ताल तालखज्जूरि;

नालिकेर १ नालिकेरा तथेव च ।

तालो १ ताली[2] च,

केतकी १ केतकी नारी, पूगो च तिणपादपा ॥ ६०४ ॥

अरञ्ञवग्गो निट्ठितो[3]

●

1 वेणू—म० ।

2. ताली—म० ।

3 निट्ठितो ति सद्दो सी०, म० पोत्थकेसु नत्थि ।

९. सेलवग्गो

पर्वत ९ — पब्बतो गिरि सेलोऽद्दी नगाऽचल सिलुच्चया ।
सिखरी भूधरो,

पाषाण ५ — थ ऽम पासाणऽस्मोपलो सिला ॥ ६०५ ॥

पर्वतविशेष — गिज्झकूटो च वेभारो वेपुलो[1] सिगिली नगा ।
विझो पण्डववंकादि,

उदयाचल २ — पुब्बसेलो तु चोदयो ।

अस्ताचल ३ — मंदारोऽपरसेलोऽत्थो,

हिमालय २ — हिमवा तु हिमाचलो ॥ ६०६ ॥

हिमालयकूट ५ — गन्धमादनकेलासचित्तकूटसुदस्सना ।
कालकूटो तिकूटास्स[2]

सानु २ — पत्थो तु सानु वत्थियं ॥ ६०७ ॥

पर्वतशृंग ३ — कूटो वा सिखरं सिङ्गं,

प्रपात २ — पपातो तु तटो भवे ।

पर्वत पार्श्व २ — नितम्बो कटको नित्थि,

निर्झर १ — निज्झरो पभवोऽम्बुनो ॥ ६०८ ॥

पर्वतकन्दरा २ — दरीत्थी कन्दरो द्विसु,

पर्वतगुहा ३ — लेणं[3] तु गब्भरं गुहा ।

---

1 वेपुल्लो म०, सी० ।

2 तिकूट्टोस—म० ।

3 लेन—सी० ।

शिलावेष्टित पुष्करिणी २ सिलापोक्खरणी[1] सोण्डी,

लताकुञ्ज २ कुञ्ज निकुञ्जमित्थि न ॥ ६०९ ॥

अधित्यका १ उद्धमधिच्चका सेलस्सा-

उपत्यका १ सन्ना भूम्युपच्चका ।

पर्वतपाद २ पादो तु पच्चन्तसेलो थ,

धातु १ धातु त्तो गेरिकादिको ॥ ६१० ॥

सेलवग्गो निट्ठितो[2]

1 पोक्खरणि—सी०, ना०, म० ।

2 'निट्ठितो' सद्दो सी०, म० पोत्थकेसु नत्थि ।

१०. सीहादिवग्गो[1]

सिंह ३ — मिगिन्दो केसरी सीहो,

चित्रक २ — तरच्छो तु मिगादनो।

व्याघ्र २ — ब्यग्घो तु पुण्डरीकोऽथ,

शार्दूल १ — सद्दुलो दीपिनीरितो[2] ॥ ६११ ॥

भल्लुक ३ — अच्छो इक्को च इस्सो तु,

क्षुद्रसिंह २ — कालसीहो इसोऽप्यथ।

रोहित मृग २ — रोहिच्चो[3] रोहितो चाथ,

मृगविशेष ३ — गोकण्णो गणि कण्टको ॥ ६१२ ॥

खड्गिन् ४ — खग्ग-खग्गविमाणा तु पलासादो च गण्डको।

श्वापद २ — ब्यग्घादिके[4] वाळमिगो सापदो,

वानर ७ — थ प्लवंगमो ॥ ६१३ ॥

मक्कटो वानरो साखामिगो कपि वलीमुखो।

प्लवङ्गो,

कृष्णमुख वानर १ — कण्हतुण्डो गोनङ्गुलो तिमो मतो ॥ ६१४ ॥

शृगाल ५ — सिगालो[5] जम्बुको कोत्थु भेरण्डो च सिवा प्यथ।

बिडाल ३ — बिळारो बब्बु मज्जारो,

बक २ — कोको तु च बको भवे ॥ ६१५ ॥

---

1 सी०, म० पोत्थकेसु नत्थि।

2. दीपनीरतो—(?)।

3. रोहिसो—म०।

4. ब्यग्घादिको—म०। 5 सिगालो—०।

महिष २ — महिसो च लुलायोऽथ,

गव्य २ — गवजो गवयो समा।

शल्यक २ — सल्लो तु सल्लकोऽथास्स,

शल्ल २ — लोमम्हि सललं सलं ॥ ६१६ ॥

हरिण ५ — हरिणो मिगसारङ्गा मगो अजिनयोनि च।

शूकर २ — सूकरो तु वराहोऽथ,

शशक २ — पेलको च ससो भवे ॥ ६१७ ॥

एणमृग २ — एणेय्यो एणिमिगो,

प्राणिविशेष २ — पम्पटको तु पम्पको।

वातमृग २ — वातमिगो तु चलनी,

मूषिक ३ — मूसिको त्वाखु उन्दुरो ॥ ६१८ ॥

मृगविशेष ८ — चमरो पसदो चेव कुरङ्गो मिगमातुका।
रूरू रङ्कु च निङ्को च[1] सरभादि मिगन्तरा ॥ ६१९ ॥

चमरी मृग ३ — पियको चमुरु[2] कदलिमिगादि चम्मयोनयो।

पशु २ — मिगा तु पसवो सीहादयो सब्बचतुप्पदा ॥ ६२० ॥

मर्कटिका ४ — लूता लूतिका उण्णनाभि मक्कटिको सिया।*

वृश्चिक २ — विच्छिको त्वालि[3] कथितो,

गृहकोलिका २ — सरभू घरगोलिका ॥ ६२१ ॥

---

1 निको—ना०।
2 चमरू—म०।
* वुत्तभङ्गो।
3. त्वाळि—म०।

स्थलगोधिका २ गोधा कुण्डोऽप्यथो,

जलौका २ कण्णजलूका[1] सतपद्यथ ।

कलन्दक २ कलन्दको काळका थ,

नकुल २ नकुलो मुङ्गुसो भवे ॥ ६२२ ॥

सरट २ ककण्टको च सरटो,

कीटादि क्षुद्रजन्तु ४ कीटो तु पुळवो किमि ।

गोमयच्छत्रिका २ पाणको चाप्यथो उच्चालिङ्गो लोमसपाणको ॥ ६२३ ॥

पक्षी १५ विहङ्गो विहगो पक्खि[2] विहङ्गमखगाण्डजा ।

सकुण्डो च सकुन्तो पि पतङ्गो सकुणि द्विजो ॥ ६२४ ॥

वक्कङ्गो पत्तयानो च पतन्तो नीळजो भवे ।

पक्षिविशेष ११ तब्भेदा वट्टका[3] जीवञ्जीवो[4] चकोर[5] तित्तिरा ॥ ६२५ ॥

सालिका[6] करवीको च रविहंसो ककुत्थको ।

कारण्डवो च पिलवो पोक्खरसातकादयो ॥ ६२६ ॥

पक्ष्मन् ७ पतन्त पेखुणं पत्तं पक्खो पिञ्जं छदो गरु ।

अण्ड १ अण्डं तु पक्खिबीजेऽथ,

नीड २ नीळो नित्थि कुलावकं ॥ ६२७ ॥

---

1. कण्णजलुका—ना० ।
2. पक्खी—(?) ।
3. वदका—म०, सी० ।
4. जीवजीवो—म० ।
5. पोक्ख—सी० ।
6. साळिका—म० ।

गरुडमाता १ — सुपण्णमाता विनता;

मिथुन १ — मिथुनं थी पुमद्वय।

युगल ६ — युग तु युगलं[1] द्वन्दं यमकं यमलं यमं ॥ ६२८ ॥

समूह २९ — समूहो गणसंघाता समुदायो[2] च संचयो।
संदोहो निवहो ओघो विसरो निकरो चयो ॥ ६२९ ॥
कायो खन्धा समुदयो घटा समितिसंहती।
रासि पुञ्जो समवायो पूगो जातं कदम्बकं ॥ ६३० ॥
व्यूहो वितानगुम्बा च कलापो जालं मण्डलं।

समानजात्यादिसमूह १ — समानान गणा वग्गो,

जन्तुसमूह २ — संघो सत्थो तु जन्तुन[3] ॥ ६३१ ॥

कुल १ — सजातिकान तु कुलं,

एकस्वभावविशिष्ट १ — निकायो तु सधम्मिन।

पशुपक्षिसमूह १ — यूथो नित्थी सजातीयतिरच्छानानमुच्चते ॥ ६३२ ॥

गरुडपक्षी ४ — सुपण्णो वेनतेय्यो च गरुळो विहगाधिपो।

कोकिल ५ — परपुट्ठो परभतो[4] कुणालो कोकिलो पिको ॥ ६३३ ॥

मयूर ८ — मोरो मयूरो वरिहिनीलगीवसिखण्डिनो।
कलापी च सिखी केकी,

मयूरशिखा २ — चूळा तु च सिखा भवे ॥ ६३४ ॥

---

1 युगळ –म०।
2 समुदयो—ना०।
3 जन्तून –ना०।
4 परभातो—ना०।

मयूरपिच्छ ४ — सिखण्डो बरिहं चेव कलापो पिञ्छ[1]मप्यथ।

पिच्छचित्र २ — चन्दको मेचको चाथ,

भ्रमर ७ — छप्पदो च मधुब्बतो ॥ ६३५ ॥

मधुलीहो मधुकरो मधुपो भमरो अली।

कपोत ४ — पारापतो कपोतो च ककुटो च पारेवटो[2] ॥ ६३६ ॥

गृध्र २ — गिज्झो गण्डो[3]ऽथ,

श्येनपक्षी ३ — कुललो सेनो ब्यग्घिनसोऽप्यथ।

श्येनपक्षिविशेष १ — तब्भेदा सकुणग्घी त्थि,

पक्षिविशेष २ — आटो दब्बिमुखद्विजो ॥ ६३७ ॥

उलूक ४ — उहुंकारो उलूको च कोसियो ब्यग्घसारि[4] च।

काक ५ — काको त्वरिट्ठो धङ्को च बलिपुट्ठो च वायसो ॥ ६३८ ॥

वनकाक २ — काकोलो वनकाकोऽथ,

लट्टुकी २ — लापो लटुकिकाप्यथ।

हस्तिशुण्ड पक्षी २ — वारणो हत्थिलिङ्गो च हत्थिसोण्डविहङ्गमो ॥ ६३९ ॥

कुरलपक्षी ३ — उक्कुसो कुररो कोलट्ठिपक्खिम्हि च कुक्कुहो।

शुक ३ — सुवो तु कीरो च सुको,

कुक्कुट २ — तम्बचूलो[5] च कुक्कुटो ॥ ६४० ॥

वन्य कुक्कुट २ — वनकुक्कुटो च निज्जिव्हो,

---

1 पिञ्ज—म० सी०।

2 प्परेवता—सी०, पारपु(व)तो—म०।

3 गिज्झोगद्धो (न चा)—म०।

4 वाघसारि—ना०, वायसारि—सी०।

5 तम्बचूळो—ना०।

क्रौञ्च २ — अथ कोञ्चो च कुन्तनी।

चक्रवाक २ — चक्कवाको तु चक्कव्हो,

चातक २ — सारङ्गो तु चातको ॥ ६४१ ॥

पक्षविडाल २ — तुलियो पक्खबिळालो*,

सारस २ — सतपत्तो तु सारसो।

बक २ — वको[1] तु सुक्ककाकोऽथ,

बलाका २ — बलाका[2] विसकण्ठिका ॥ ६४२ ॥

कक २ — लोहपिट्ठो तथा कङ्को,

खञ्जन २ — खञ्जरीटो तु खञ्जनो।

चटक २ — कलविङ्को तु चटको,

दिन्दिभ २ — दिन्दिभो तु किकी भवे ॥ ६४३ ॥

कलहस २ — कादम्बो कलहंसो[3]ऽथ,

शकुन्तपक्षी १ — सकुन्तो भासपक्खिनि।

कलिङ्गपक्षी २ — धूम्याटो तु कलिङ्गोऽथ;

कालकण्टक २ — दात्यूहो कालकण्टको[4] ॥ ६४४ ॥

मधुमक्षिका १ — खुद्दादि मक्खिकाभेदा,

पिङ्गलमक्षिका २ — डंसो पिङ्गलमक्खिका।

मक्षिकाण्ड २ — आसाटिका मक्खिकाण्डं,

---

* वुत्तभङ्गो।

1. बको—म०।

2. वलाका—सी०।

3. कालहंसो—म०।

4. कालकण्ट (ठ) को—म०।

शलभ २	पटङ्गो सलभो भवे ॥ ६४५ ॥
मशक २	सूचीमुखो[1] च मकसो;
झिल्लिक २	चीरी तु झल्लिका ऽथ च ।
जतुका २	जतुका जिनपत्ता[2] थ;
हस २	हंसो सेतच्छदो भवे ॥ ६४६ ॥
राजहस १	ते राजहंसा रत्तेहि पादतुण्डेहि भासिता ।
मलिनकाय हस २	मल्लिकाख्या धतरट्ठा मलिनेहसितेहि[3] च ॥ ६४७ ॥
तिर्यक् २	तिरच्छो तु तिरच्छानो तिरच्छानगते सिया ॥ ६४८ ॥

सीहादिवग्गो निट्ठितो[4]

अरञ्ञादिवग्गो[5] निट्ठितो[6]

1. सूचमुखो म० ।
2 जिनप्पत्ता—ना० ।
3 ह्यसते - म० ।
4 नत्थि —म० ।
5 ० वग्गो—सी० ।
6. नत्थि —म० ।

९. पातालवग्गो[1]

नागलोक ४ — अधोभुवन पाताल नागलोको रसातलं ।

छिद्र ६ — रन्ध्रं तु विवरं छिद्दं कुहिरं सुसिरं बिलं ॥ ६४९ ॥

सुसी त्थी जिग्गलं[2] सोब्भ सच्छिद्दे सुसिर तिसु ।

गव्हर २ — थिय तु कासु आवाटो,

वासुकि २ — सप्पराजा तु वासुकी ॥ ६५० ॥

नागराज २ — अनन्तो नागराजा थ,

अजगर सर्प २ — वाहसोऽजगरो भवे ।

सर्पविशेष २ — गोनसो तु तिलिच्छोऽथ,

राजुलसर्प २ — देड्डुभो राजुलो भवे ॥ ६५१ ॥

मेरुपादस्थितनाग २ — कम्बलोऽस्सतरो मेरुपादे नागा थ,

गृहसर्प ३ — धम्मनी । सिलुत्तो घरसप्पो थ,

नीलसर्प २ — नीलसप्पो सिलाबु च ॥ ६५२ ॥

सर्प १८ — आसीविसो भुजङ्गोऽहि भुजगो च भुजङ्गमो ।
सिरिसपो[3] फणी सप्पा ऽलगद्दा भोगिपन्नगा ॥६५३॥
द्विजिव्हो उरगो वाळो दीघो च दीघपिट्ठिको ।
पादूदरो विसधरो,

सर्पशरीर १ — भोगो तु फणिनो तनु ॥ ६५४ ॥

सर्पविषदन्त १ — आसी त्थी सप्पदाठा[4] थ,

सर्प कञ्चुक २ — निम्मोको कञ्चुको समा ।

---

1 नमो बुद्धाय पातालवग्गो—सी० । 2 छिग्गल म० ।
3 सिरिसप्पो (?), सिरिसपो—सी०, स रिसपो—म० ।
4 सप्पदाठाथ—म० ।

विष २	विस त्वनित्थी गरलं,
विषविशेष २	तब्भेदा वा हलाहलो ॥ ६५५ ॥
	कालकूटादयो चाथ,
आहितुण्डिक २	वाळगाय्हहितुण्डिको ।
निरय २	निरयो दुग्गतीत्थी च,
	नरको सो महाद्धया ॥ ६५६ ॥
अष्टमहानरक	सञ्जीवो काळसुत्तो च महारोरुवरोरुवा ।
	पतापनो अवीचि त्थी संघातो तपनो इति ॥ ६५७ ॥
वैतरणी नदी २	थिय वेतरणी लोहकुम्भी तत्थ जलासया ।
निरयपाल २	कारणिको निरयपो,
निरयस्थ प्राणी २	नेरयिको तु नारको ॥ ६५८ ॥
सागर ७	अण्णवो सागरो सिन्धु समुद्दो रतनाकरो ।
	जलनिध्युदधी,
क्षीरसमुद्र १	तस्स भेदा खीरण्णवादयो ॥ ६५९ ॥
समुद्रकूल १	वेलाऽस्स कूलदेसोऽथ,
आवर्त २	आवट्टो सलिलब्भमो ।
बिन्दु ३	थेवो तु बिन्दु फुसित,
जलनिर्गमनपथ १	भमो तु जलनिग्गमो ॥ ६६० ॥
जल १५	आपो पयं[1] जलं वारि पानीय सलिलं दकं ।
	अण्णो नीरं वनं वाल तोयमम्बू दकं[2] च कं ॥ ६६१ ॥

---

1. पयो—सी० ।
2. तोयम अम्बूदक—म० ।

तरङ्ग ४ — तरङ्गो च तथा भङ्गो ऊमि वीचि पुमित्थियं ।

महोर्मि २ — उल्लोलो तु च कल्लोलो महावीचीसु कथ्यते ॥ ६६२ ॥

पङ्क ५ — जम्बोलो[1] कललं पङ्को चिक्खलं कद्दमोऽप्यथ ।

बालुभूमि ६ — पुलिनं वालुका वण्णु मरू रू मिकता भव ॥ ६६३ ॥

द्वीप २ — अन्तरीपं च दीपो वा जलमज्झगत थल ।

तट ५ — तीरं तु कूलं रोधं च पतीरं च तटं तिसु ॥ ६६४ ॥

दूरवर्ती १ — पारं परम्हि तीरम्हि,

निकटवर्ती २ — ओरं त्वपारमुच्चते ।

प्लव ५ — उळुम्पो तु प्लवो कुल्लो तरो च पच्चरी त्थिय ॥६६५॥

तरणी ३ — तरणी तरि नावा च,

कूपस्तम्भ २ — कूपको तु च कुम्भकं ।

मत्स्यबन्ध १ — मच्छाबन्धो[2] गोटविसो,

कर्णधार २ — कण्णधारो तु नाविको ॥ ६६६ ॥

अरित्र २ — अरित्त केनिपातो थ,

नियामक २ — पोतवाहो नियामको ।

सायात्रिक १ — संयत्तिका तु नावाय वानिज्जमाचरन्ति ये ॥ ६६७ ॥

नौकाङ्ग विशेष ३ नवायङ्गा लकारो[3] च वटाकरो पियादयो[4] ।

---

1. जम्वालो—म० ।
2. पच्छाबन्धो—सी० ।
3. लकारो—म० ।
4. फियादयो—म० ।

नौकाविशेष २　　पोतो पवहणं वुत्त;

द्रोणी २　　दोणी त्वित्थी तथाम्मणं[1] ॥ ६६८ ॥

गम्भीर ३　　गम्भीर[2] निन्न गम्भीरा,

उत्तान १　　थोत्तानं तब्बिपक्खके ।

अतलस्पर्शी २　　अगाधं त्वतलम्फस्सं,

मलिन ३　　अनच्छो कलु साविला ॥ ६६९ ॥

निर्मल ३　　अच्छो पसन्नो[3] विमलो गभीरप्पभुती तिसु ।

धीवर ५　　धीवरो मच्छिको मच्छबन्ध केवट्ट जालिका ॥ ६७० ॥

मत्स्य ६　　मच्छो मीनो जलचरो पुथुलोमोऽम्बुजो झसो ।

मत्स्यविशेष १३　　रोहितो मग्गुरो सिङ्गी बलजो मुञ्जपावुसा ॥ ६७१ ॥

सतङ्को च सवङ्को च नलमीनो[4] च गण्डको ।

सुसुका सफरी मच्छप्पभेदा मकरादयो ॥ ६७२ ॥

महामत्स्य ७　　महामच्छा तिमि तिमिङ्गलो तिमिरपिङ्गलो ।

आनन्दो च तिमिन्दो च अज्झारोहो महातिमि ॥ ६७३ ॥

पाषाणमत्स्य २　　पासाणमच्छो पाठीनो,

बडिश २　　वङ्को तु बलिसो भवे ।

कुम्भीर ३　　सुसुमारो तु कुम्भीलो नक्को,

कूर्म २　　कुम्मो तु कच्छपो ॥ ६७४ ॥

---

1 तथाम्बण — म० ।

2 गम्भीरा — म० ।

3 पसभो — सी० ।

4. नळमीनो — सी०, म० ।

कर्कटक २ — कक्कटको कुलीरो च,

जलौका २ — जलूका तु च रत्तपा ।

मेढक ६ — मण्डूको दद्दुरो[1] भेको,

केंच २ — गण्डुप्पादो महीलता ॥ ६७५ ॥

शक्ति २ — अथ सिप्पी च सुत्तित्थी,

शंख २ — संखो[2] कम्बु मनित्थियं ।

क्षुद्रशंख २ — खुद्दसङ्खा सङ्खनखो,

शम्बुक २ — जलसुत्ती च सम्बुको ॥ ६७६ ॥

जलाशय २ — जलासयो जलाधारो,

ह्रद १ — गम्भीरो रहदो स च ।

कूप २ — उदपानो पानकूपो,

पुष्करिणी २ — खाते पोक्खरणी त्थियं ॥ ६७७ ॥

सरोवर ६ — तळाको च सरो नित्थी वापी च सरसी त्थियं ।
दहो ऽम्बुजाकरो चाथ,

क्षुद्र सरोवर १ — पल्ललं खुद्दको सरो ॥ ६७८ ॥

सप्त महासर — अनोतत्तो तथा कण्ण-मुण्डो च रथकारको ।
छद्दन्तो च कुणालो च वुत्ता मन्दाकिणी त्थियं ॥ ६७९ ॥
तथा सीहप्पपातो ति एते सत्त महासरा ।

निपान २ — आहावो तु निपानं वा,

स्वाभाविक जलाशय २ — खात तु देवखातक ॥ ६८० ॥

---

1. दद्दरो — ना० ।
2. तु संखो — म० ।

नदी ६ — सवन्ती निन्नगा सिन्धु सरिता आपगा नदी ।

गंगा २ — भागीरथी तु गङ्गा थ,

नदीसंगमस्थल २ — सम्भेदो सिन्धुसङ्गमो ॥ ६८१ ॥

पञ्च महानदी — गङ्गाचिरवती चेव यमुना सरभू मही ।

इमा महानदी पञ्च,

नदीविशेष — चन्दभागा सरस्सती[1] ॥ ६८२ ॥

नेरञ्जरा[2] च कावेरी नम्मदादी च निन्नगा ।

पथ प्रणाली २ — वारिमग्गो पणाली[3]त्थी,

ग्रामद्वारस्थित शुद्ध जलाशय ३ — पुमे चन्दनिका तु च ॥ ६८३ ॥

जम्बालि[1] ओलिगल्लो[5] च गामद्वारम्हि कासय ।

पद्म १२ — सरोरुह सतपत्तं अरविन्द च वारिजं ॥ ६८४ ॥

अनित्थी पदमं पङ्केरुहं नलिन[6]पोक्खर ।

मूळाल[7] पुप्फ कमल भिसपुप्फं कुसेसयं ॥ ६८५ ॥

श्वेतपद्म १ — पुण्डरीकं सित रत्त,

रक्तवर्ण पद्म २ — कोकनदं कोकासको ।*

पद्मरेणु २ — किञ्जक्खो केसरो नित्थि,

पद्मनाल २ — दण्डो तु नालमुच्चते ॥ ६८६ ॥

पद्ममूल २ — भिस मुळालो नित्थी च;

बीजकोष २ — बीजकोसो तु कण्णिका ।

---

1 सरस्वती म० ।
2 निरञ्जरा—सी० ।
3 पणाको—म० ।
4 कासय— सी० ।
5 ओळीगल्लो - सी० ।
6. नळिन—म० ।
7 मुळाल—म०, सी० ।
* वुत्तभङ्गो ।

पदुमादिसमूहे तु,

पद्मखण्ड भवे खण्डमनित्थिय ॥ ६८७ ॥

उत्पल २ उप्पलं कुवलयं च,

नीलवर्ण पद्म १ नील त्विन्दीव सियारं ।

श्वेतकुमुद १ सते तु कुमुदं चस्स,

सालुक १ कन्दो सालुक[1] मुच्चते ॥ ६८८ ॥

श्वेत कुमुदपुष्प ३ सोगन्धिकं कल्लहारं दकसीतलिक प्यथ ।

शैवल २ सेवालो नीलिका चाथ;

अम्बुजिनी २ भिसिन्यम्बुजिनी भवे ॥ ६८९ ॥

शैवालविशेष ३ सेवालो[2] तिलबीज च सङ्खो च पणवादयो ॥ ६९० ॥

पातलवग्गो निट्ठितो[3]

❀ निट्ठितो[4] दुतियो भूकण्डो ❀

★

---

1 साळुक – सी० ।

2 सेवाला—सी० ।

3 निट्ठितो ति म० पोत्थके नत्थि ।

4. निट्ठितो ति म०, सी० पोत्थकेसु नत्थि ।

*ततियो सामञ्ञकण्डो

१ विसेस्साधीनवग्गो

विसेस्साधीनसकिण्णानेकत्थेहव्ययेहि च ।
साङ्गोपाङ्गेहि कथ्यन्ते कण्डे वग्गा इहक्कमा ॥ ६९१ ॥

गुणदब्बक्रियासद्दा सियु सब्बे विसेसना ।
विसेस्साधीनभावेन विसेस्समसमलिङ्गिनो ॥ ६९२ ॥

सौन्दर्य १८ — सोभन रुचिरं साधु मनुञ्ञं चारु सुन्दरं ।
वग्गु मनोरमं कन्त[1] हारि मञ्जु[2] च पेसलं ॥ ६९३ ॥
भद्दं वामं च कल्याणं मनाप लद्धक सुभं ।

उत्तम २६ — उत्तमो पवरो जेट्ठो पमुखानुत्तरो वरो ॥ ६९४ ॥
मुख्यो[3] पधानं पामोक्खो परमग्गञ्ञमुत्तर ।
पणीत परमं सेय्यो गामणी सेट्ठसत्तमा ॥ ६९५ ॥
विसिट्ठारिय नागो को मभग्गा मोक्खपुङ्गवा ।
सीह कुञ्जर सद्दूलादी तु समासगा पुमे ॥ ६९६ ॥

सन्तोषकर २ — चित्तक्खिपीतिजननमब्यासेकमसेचनं ।

प्रिय ६ — इट्ठं तु सुभगं हज्ज दयितं वल्लभं पियं ॥ ६९७ ॥

शून्य ३ — तुच्छं च रित्तकं सुञ्ञ,

असार २ — अथाऽसार च फेग्गु च ।

पवित्र ३ — मेज्झ पूतं पवित्तो थ,

अविरुद्ध २ — अविरुद्धो अपण्णको ॥ ६९८ ॥

उत्कृष्ट २ — उक्कट्ठो च पकट्ठो थ,

---

* सी० पोत्थके नत्थि ।

1 कत—सी० । 2 मञ्जु—ना० । 3 मुख्यो ना० ।

निकृष्ट ११ — निहीन हीन लामका।
पतिकिट्ठं निकिट्ठं च इत्तराऽवज्ज कुच्छिता ॥६९९॥
अधमोमकगारय्हा,

मलिन २ — मलिनो तु मलीमसो।

वृहत् ९ — ब्रहा महन्त विपुलं विसालं पुथुल पुथु ॥ ७०० ॥
गरूरु वित्थिण्णमथो,

स्थूलाकार ५ — पीन थूलं[1] च पीवरं।
थुल्लं च वठरं चाथ,

गृहीत २ — आचित निचितं भवे ॥ ७०१ ॥

समुदाय १० — सब्बं समत्तमखिलं निखिल सकलं तथा।
निस्सेस व सिणासेसं समग्गं च अनूनकं ॥ ७०२ ॥

प्रचुर ८ — भूरि पहूतं पचुरं भीय्यो सबहुल बहु।
येभुय्य बहुलं चाथ,

बाह्य २ — बाहिरं परिबहिरं ॥ ७०३ ॥

शताधिक — परोसतादि ते येस[2] परम्मत्त सतादितो।

अल्प १३ — परित्त सुखुम खुद्दं थोक अप्प किस तनु ॥ ७०४ ॥
चुल्ल मत्तोत्थिय लेसा लवाणु हि कणो पुमे।

निकट १३ — समीप निकटासन्नो पकट्ठाऽभ्याससन्तिक ॥ ७०५ ॥
अविदूर च सामन्त सन्निकट्ठमुपन्तिक ।

---

1 पीनत्थूल—सी०।

2 येस—सी०।

सकास चान्तिक ऽर्न्तं,

दूर २ — दूरं तु विप्पकट्ठकं ॥ ७०६ ॥

निरन्तर ३ — निरन्तरं घनं सन्दं;

विरल ३ — विरळं पेलवं तनु ।

सुदीर्घ २ — अथाऽऽयतं दीघमथो,

गोल ३ — निब्बत्तं वट्टं वट्टुलं ॥ ७०७ ॥

उच्च ५ — उच्चो तु उण्णतो तुङ्गो उदग्गो चेव उच्छितो ।

नीच ३ — नीचो रस्सो वामनो थ,

सरल ३ — अजिम्हो पगुणो उजु ॥ ७०८ ॥

वक्र ६ — अळारं वेल्लितं वङ्कं कुटिलं जिम्हं कुञ्चितं ।

ध्रुव ५ — ध्रुवो च सस्सतो निच्चो सदातनसनन्तना ॥ ७०९ ॥

अपरिवर्तनशील १ — कूटट्ठो त्वेकरूपेन कालब्यापी पकासितो ।

क्षुल्लक २ — लहु सल्लहुकं चाथ,

सख्यात ३ — सङ्ख्यातं गणितं मितं ॥ ७१० ॥

तीक्ष्ण ३ — तिण्हं तु तिखिणं तिब्बं,

उग्र ३ — चण्डं उग्गं खरं भवे ।

गतिशील ४ — जङ्गमं च चरं चेव तसं ञेय्यं चराचरं ॥ ७११ ॥

कम्पन २ — कम्पनं चलनं चाथ,

अतिरिक्त २ — अतिरित्तो तथाधिको ।

स्थावर १ — थावरो जङ्गमा अञ्ञो,

चचल ४ — लोलं तु चञ्चलं चलं ॥ ७१२ ॥

तरलं[४] च,

पुरातन ४　　पुराणो[१] तु पुरातन[२] - सनन्तना[३] ।

चिरन्तनो[४]ऽथ,

नूतन ४　　पच्चग्घो[१] नूतनो[२] भिनवो[३] नवो[४] ॥ ७१३ ॥

कर्कश ५　　कुरूरं[१] कठिनं[२] दळ्हं[३] निट्ठुरं[४] कक्खलं[५] [1] भवे ।

अन्तिम ७　　अनित्थ्यन्तो[१] परियन्तो[२] पन्तो[३] च पच्छिमा[४]न्तिमा[५] ॥ ७१४ ॥

जिघञ्ञा[६] चरिमं[७],

पूर्व ४　　पुब्ब[१] त्वग्ग[२] पठम[३]मादि[४]सो ।

उपयुक्त २　　पतिरूपो[१]ऽनुच्छविक[२],

निस्फल २　　अथ मोघं[१] निरत्थकं[२] । ७१५ ॥

व्यक्त २　　व्यत्त[१] फुट[२] च,

कोमल ३　　मुदु[१] तु सुकुमार[२] च कोमला[३] ।

प्रत्यक्ष १　　पच्चक्ख[१] इन्द्रियग्गय्ह,

अप्रत्यक्ष १　　अपच्चक्ख[१] मनिन्द्रिय ॥ ७१६ ॥

अपर ४　　इतरो[१]ऽञ्ञतरा[२] एको[३] अञ्ञो[४],

नानाविध ३　　बहुविधा[१] तु च ।

नानारूपो[२] च विविधो[३],

बाधाशून्य २　　अबाधं[१] तु निराग्गलं[२] ॥ ७१७ ॥

असहाय ४　　अवेकाकी[१] च एकच्चो[२] एको[३] च एकको[४] समा ।

साधारण २　　साधारण[१] च सामञ्ञ[२],

अप्रशस्त समय २　　सम्बाधा[१] तु च सकट[२] ॥ ७१८ ॥

---

1. कक्खळं—सी० ।

वामाङ्ग १ — वाम कलेव सब्य,

दक्षिणाग १ — अपसव्यं तु दक्खिण ।

प्रतिकूल २ — प्रतिकूल त्वपसव्यं,

दुस्प्रवेश २ — गहनं कलिलं समा ॥ ७१९ ॥

अनक प्रकार २ — उच्चावचं बहुभेदं,

निरन्तर व्याप्त ३ — संकिण्णाकिण्ण सङ्कुला ।

सुदक्ष ११ — कतहत्थो च कुसलो पवीणाभिञ्ञ सिक्खिता ॥ ७२० ।
निपुणो च पटुच्छेको चतुरो दक्ख पेसला ।

निर्बोध ७ — बालो दत्तु जळो मूळ्हो मन्दोऽविञ्ञु च बालिसो ॥ ७२१ ॥

पुण्यवान् ३ — पुञ्ञवा सुकती धञ्ञो,

अत्यन्त अध्यवसायी २ — महुस्साहो महाधिति ।

महेच्छावान् २ — महातण्हो महिच्छो थ,

सदन्त करणविशिष्ट २ — हदयी हदयालु च ॥ ७२२ ॥

आनन्दित २ — सुमनो हट्ठचित्तोऽथ,

दुःखित २ — दुम्मनो विमनोऽव्यथ ।

वदान्य ३ — वदानियो वदञ्ञू च दानसोण्डो बहुप्पदे ॥ ७२३ ॥

विख्यात १० — ख्यातो पतीतो पञ्ञातोऽभिञ्ञातो पथितो सुतो ।
विस्सुतो विदुतो चेव पसिद्धो पाकटो भवे ॥ ७२४ ॥

प्रभु ११ — इस्सरो नायको सामि पतीसाधिपति पभु ।
अय्याधिपाधिभू नेता,

धनाढ्य ३ — इब्भो त्वड्ढो तथा धनी ॥ ७२५ ॥

दानार्ह २ दानारहो[१] दक्खिणेय्यो[२];

स्नेहशील २ सिनिद्धो[१] तु च वच्छलो[२]।

परीक्षक २ परिक्खको[१] कारणिको[२],

आसक्त २ आसत्तो[१] तु च तप्परो[२] ॥ ७२६ ॥

दयाशील २ कारुणिको[१] दयालू[२] पि;

उद्योगी पुरुष २ सुरतो[१] उस्सुको[२] तु च।

इट्ठत्थे उय्युतो चाथ;

दीर्घसूत्री २ दीघसुत्तो[१] चिरक्रियो[२] ॥ ७२७ ॥

पराधीन २ पराधीनो[१] परायत्तो[२],

आधीन ४ आयत्तो[१] तु च सन्तको[२]।

परिग्गहो[१] अधीनो[२] च;

स्वाधीन १ सच्छन्दो[१] तु च सेरिनि ॥ ७२८ ॥

अविमृश्यकारी १ *अनिसम्मकारी जम्मो[१],

लोलुप १ अतितण्हो तु लोलुपो[१]।

लुब्ध ३ गिद्धो[१] तु लुद्धो[२] लोलो[३]ऽथ;

अनिपुण व्यक्ति १ कुण्ठो[१] मन्दो क्रियासु हि ॥ ७२९ ॥

कामुक ५ कामयिता[१] तु कमिता[२] कामनो[३] कामि[४][1]कामुका[५]।

मदमत्त १ सोण्डो[१] मत्ते,

सत्यरक्षक ३ विधेय्यो[१] तु अस्सवो[२] सुब्बचो[३] समा ॥ ७३० ॥

प्रतिभाशाली २ पगब्भो[१] पटिभायुत्तो[२],

---

* वुत्तभङ्गो।

1 कामी सी०।

भीरु २	भिसीले भीरु भीरुको ।
अधीर २	अधीरो कातरो चाथ,
हिंसक २	हिंसासीलो च घातुको ॥ ७३१ ॥
क्रोधनशील ३	क्रोधनो रोसनो कोपी,
अत्यन्त क्रुद्ध २	चण्डो त्वच्चन्तकोधनो ।
क्षमाशील ५	सहणो खमणो खन्ता तितिक्खावा च खन्तिमा ॥ ७३२ ॥
श्रद्धायुक्त २	सद्धायुत्तो हि सद्धालु,[1]
ध्वजावान् २	धजवा तु धजालु च ।
निद्राशील २	निद्दालु निद्दासीलोऽथ,
दीप्तिशाली २	भस्सुरो भासुरो भवे ॥ ७३३ ॥
नग्न ३	नग्गो दिगम्बरोऽवत्थो,
भोक्ता २	घस्मरो तु च भक्खको ।
श्रवणवाक्शक्तिरहित १	एळमूगो तु वत्तुञ्च सोतुञ्चाकुसलो भवे ॥ ७३४ ॥
मुखर ३	मुखरो दुम्मुखो बद्धमुखो चाप्पियवादिनि[2] ।
वाचाल १	वाचालो बहुगारय्हवचा,
वक्ता २	वत्ता तु सो वदो ॥ ७३५ ॥
स्वकीय ३	निजो सको अत्तनियो,
विस्मय २	विम्हयेऽच्छरियाब्भुता ।
व्याकुल २	विहत्थो ब्याकुलो चाथ,
आततायी २	आततायी वधुय्युतो ॥ ७३६ ॥
वधार्ह व्यक्ति १	सोसच्छेज्जम्हि वज्झोऽथ,

1. सद्धालू—सी०, ना० ।   2. चाप्पियवादिनी— ना० ।

कूटबुद्धि ३ निकतो च सठा-नुजु ।

कुपरामर्शदाता ३ सूचको पिसुणो कण्णजपो,

प्रतारक २ धुत्तो तु वञ्चको ॥ ७३७ ॥

चपल १ अनिसम्म हि यो किच्च,

पुरिसो वधबन्धनादिमाचरति ।

अविनिच्छितकारिता,

सो खलु चपलो ति विञ्ञेय्यो ॥ ७३८ ॥*

कृपण ५ खुद्दो कदरियो थद्धो मच्छरी कपणोऽप्यथ ।

दरिद्र ५ अकिञ्चनो दलिद्दो च दीनो निद्धनदुग्गता ॥ ७३९ ॥

काकतालीय १ असम्भावितसम्पत्त काकतालीयमुच्चते ।

याचक ४ अथ याचनको अत्थी याचको च वणिब्बको ॥ ७४० ॥

अण्डजप्राणी १ अण्डजा पक्खिसप्पादी,

जरायुज १ नरादी तु जलाबुजा ।

स्वदज १ सेदजा किमिडंसादी,

औपपातिक १ देवादी त्वोपपातिका ॥ ७४१ ॥

जानुप्राण १ जण्णुतग्घो जण्णुमत्ते,

तदपेक्षा किञ्चिदून १ कप्पो तु किञ्चिदूनके ।

अन्तर्गत ३ अन्तग्गते तु परियापन्न अन्तोगधोऽगधा ॥ ७४२ ॥

पुणकृत २ रावितो सावितो चाथ,

अतिशय पक्व २ निप्पक्कं कठितं भवे ।

विपदापन्न १ आपन्नो त्वापदम्पत्तो,

अवश २ विवसो त्ववसो भवे ॥ ७४३ ॥

---

* आर्या छन्द ।

निक्षिप्त ६ नुण्णो नुन्नाऽत्तखित्ता चेरिताविद्धा,

कम्पित ४ थ कम्पितो।

धूतो आधूतचलिता,

निशित २ निसितं तु च तेजितं ॥ ७४४ ॥

प्राप्तव्य ३ पत्तब्बं गम्ममासज्जं,

पक्व २ पक्कं परिणतं समा।

आवृत ५ वेठितं तु वलयितं तु रुद्धं संवुत[1] सावुतं ॥ ७४५ ॥

वेष्टित २ परिक्खित्तं च निवुतं,

विस्तृत ३ विसटं वित्थत ततं।

लिप्त २ लित्तो तु दिद्धो,

गूढ २ गूळ्हो तु गुत्तो,

पोषित २ पुट्ठो तु पोसितो ॥ ७४६ ॥

लज्जाप्राप्त २ लज्जितो हीळितो चाथ,

शब्दित २ सनित धनितं प्यथ।

बद्ध ५ सन्दानितो सितो बद्धो कीलितो संयतो भवे ॥ ७४७ ॥

निष्पन्न २ सिद्धं निप्फन्ननिब्बत्ता,

विदारित २ दारिते भिन्नभेदिता।

आच्छादित १ छन्नो तु च्छादितो चाथ,

वेधित २ विद्धो[2] छिद्दितवेधिता ॥ ७४८ ॥

आनीत ३ आहटो आभतानीता,

कष्टसहिष्णु २ दन्तो तु दमितो सिया।

---

1. सवित—सी०। 2. सिद्ध—सी०।

शान्त २ सन्तो[1] तु समितो[2] चेव,

पूर्ण २ पुण्णो[1] तु पूरितो[2] भवे ॥ ७४९ ॥

पूजित ७ अपचायितो[1] च महितो[2] पूजिता[3]रहिता[4]च्चिता[5]।

मानितो[6] चापचितो[7] च,

सूक्ष्मीकृत १ तच्छितं[1] तु तनूकते ॥ ७५० ॥

सन्तप्त २ सन्ततो[1] धूपितो[2],

उपासित २ चोपचरिता[1] तु उपासितो[2]।

भ्रष्ट ५ भट्ठं[1] तु गलितं[2] पन्नं[3] चुतं[4] च धंसितं[5] भवे ॥ ७५१ ॥

प्रमुदित ५ पीतो[1] पमुदितो[2] हट्ठो[3] मत्तो[4] तुट्ठोऽथ[5],

छिन्न ४ कन्तितो[1]।

सञ्छिन्नो[2] लून[3] दाता[4] थ,

प्रशसित ३ पसत्थो[1] वण्णितो[2] थुतो[3] ॥ ७५२ ॥

आर्द्र ५ तिन्तो[1] ऽल्ला[2]ऽद्द[3] किलिन्[4]नोन्ना[5],

अन्वेषित ४ मग्गितं[1] परियेसितं[2]।

*अन्वेसिता[3] गवेसिता[4]

लब्ध २ लद्धं[1] तु पत्तामुच्चते[2] ॥ ७५३ ॥

रक्षित ७ रक्खितं[1] गोपितं[2] गुत्ता[3] ताता[4] गोपायिता[5]विता[6]।

पालितमथ[7],

त्यक्त ४ वोस्सट्ठं[1] चत्ता[2] हीनं[3] समुज्झित[4] ॥ ७५४ ॥

---

* वुत्तभङ्गो।

कथित ११ भासित[1] लपित[2] वुत्ताभिहिताख्यातजप्पिता[3][4][5][6]।
उदीरितं[7] च कथित[8] गदित[9] भणितोदिता[10][11] ॥ ७५५ ॥

अपमानित ४ अवञ्जितावगणिता[1][2] परिभूतावमानिता[3][4]।

क्षुधित ४ जिघच्छितो[1] नु खुदितो[2] छातो[3] चेव बुभुक्खितो[4] ॥ ७५६ ॥

ज्ञान ६ बुद्धं[1] ञातं[2] पटिपन्नं[3] विदितावगतं[4][5] मतं[6]।

भक्षित ६ गिलितो[1] खादितो[2] भुत्तो[3] भक्खिताज्झोहटासिता[4][5][6] ॥ ७५७ ॥

विसेस्साधीनवग्गो निट्ठितो

२. संकिण्णवग्गो[1]

ञेय्य लिङ्गमिहञ्चापि पच्चयत्थवसेन[2] च।

क्रिया ३ — ¹क्रिया तु ²किरियं ³कम्मं,

शान्ति ३ — ¹सन्ती तु ²समथो ³समो।

तप·क्लेशसहिष्णुता ३ — ¹दमो च ²दमथो ³दत्ती,

विशुद्धकर्म १ — ¹वत्तं तु सुद्धकम्मनि।

अभिरति १ — अथो आमङ्गवचनं तीसु वुत्तं ¹परायणं॥ ७५८॥

विदारण ३ — ¹भेदो ²विदारो ³फुटनं,

सन्तोष २ — ¹तप्पनं तु च ²पणिनं।

अभिशाप २ — ¹अक्कोसनमभि²स्सङ्गो,

भिक्षा ३ — ¹भिक्खा तु ²याचना³त्थना॥ ७५९॥

इच्छा १ — निन्निमित्त ¹यदिच्छाथा-

आपृच्छा ३ — ¹पुच्छना ²नन्दनानि च।

³सभाजनमथो;

न्याय २, — ¹ञायो ²नये

स्फाति १ — ¹फाति तु वुद्धिय॥ ७६०॥

ग्लानि २ — *¹किलमथो ²किलमनं;

---

1 सी० पोत्थके 'नमो बुद्धाय'—तिपि विज्जति।

2. पच्च०—सी०।

*. बुत्तमपुल्लिं।

गर्भविमोचन १ पसवो[1] तु पसूतिय।

आधिक्य २ उक्कंसो[1] त्वतिसयो[2]ऽथ,

जय ३ जयो[1] च जयन[2] जिति[3] ॥ ७६१ ॥

कान्ति २ वसो[1] कन्ति[2],

वेध १ व्यधो[1] वेधो,

ग्रहण १ गहो[1] गाहे

वरण २ वरो[1] वुति[2]।

पाक १, पचो[1] पाके,

अह्वान २ हवो[1] हूति[2],

वेदन २ वेदो[1] वेदनमित्थि[2] वा ॥ ७६२ ॥

जीर्णता १ जीरणे जानि[1],

रक्षण १ ताणे तु रक्खणं[1],

निश्चय ज्ञान २ पमिति[1]प्पमा[2]।

परस्पर मिलन २ सिलेसो[1] सन्धि[2] च,

अपचय २; खयो[1] त्वऽपचयो[2]

रव १ रवे रणो ॥ ७६३ ॥

शब्द १ निगादो[1] निगदे,

दर्प १ मादो[1] मदे

बन्धन १ पसिति[1] बधने।

इंगिताकार ३ आकारो[1] त्विङ्गितं[2] इङ्गो[3];

व्यय १ अथऽत्थापगमे व्ययो[1] ॥ ७६४ ।

विघ्न २ अन्तरायो च पच्चूहो;

विचार २ विकारो च विकत्यपि।

दुरवस्था २ पविस्सिलेसो विधुरं,

उपवेशन २ उपवेसनमासनं ॥ ७६५ ।

अभिप्राय ७ अज्झासयो अधिप्पायो आसयो चाभिमन्धि च।

भावोऽधिमुत्ति छन्दोऽथ,

उपद्रव २ दोमो आदीनवो भवे ॥ ७६६ ॥

गुण २ आनिसंमो गुणो चाथ,

मध्य २ मज्झं वेमज्झमुच्चते।

मध्याह्न समय २ मज्झन्तिको तु मज्झण्हो[1],

सभ्रम २ वेमत्ता तु च नानता ॥ ७६७ ॥

जागरण २ वा जागरो जागरिय,

प्रवाह २ पवाहो तु पवत्ति च।

प्रपञ्च ३ व्यामो पपञ्चो वित्थारो,

इन्द्रियसयम ३ यामो तु संयमो यमो ॥ ७६८ ॥

मर्दन २ संवाहणं मद्दनं च;

प्रसार २ पसरो तु विसप्पनं।

परिचय २ सन्थवो तु परिचयो,

समीलन २ मेलके सङ्गसङ्गमा ॥ ७६९ ॥

सन्निधान १ सन्निधि सन्तिकट्ठम्हि[2],

अदर्शन २ विनासो तु अदसनं।

धान्यादिछेदन ३ लवोऽभिलवो लवनं,

अवसर २ पत्थावोऽवसरो समा ॥ ७७० ॥

---

1 मज्झन्हो (?)

2 सन्निकट्ठम्हि।

अवसान २	ओसानं परियोसानं,
अतिशय २	उक्कंसोऽतिसयो भवे।
सस्थिति २	सन्निवेसो च सण्ठान,
अभ्यन्तर २	अथाऽब्भन्तरमन्तरं ॥ ७७१ ॥
आश्चर्यदृश्य ३	पाटिहीरं पाटिहेरं पाटिहारियमुच्चते।
कर्तव्य कर्म २	किच्चं तु करणीयं च,
वासना २	संखारो वासना भवे ॥ ७७२ ॥
पावन ३	पावनं पवनिप्पावा,
सूत्रवेठन २	तसरो सुत्तवेठन।
सक्रम १	संकमो दुग्गसञ्चारे,
उपक्रम २	पक्कमो तु उपक्कमो ॥ ७७३ ॥
पठन ३	पाठे निपाठो निपठो,
अन्वेषण २	विचयो मग्गनाऽपुमे।
आलिंगन ४	आलिङ्गनं परिस्सङ्गो सिलेसो उपगूहणं ॥ ७७४ ॥
दर्शन ४	आलोकनं च निज्झानं इक्खनं दस्सनं प्यथ।
खण्डन ४	पच्चादेसो निरसनं पच्चक्खानं निराकति ॥ ७७५ ॥
विपर्यास ४	विपल्लासो ऽञ्ञथाभावो व्यत्तयो[1] च विपरिययो। विपरियासो,
अतिक्रमण ३	ऽतिक्कमो त्वतिपातो उपच्चयो ॥ ७७६ ॥

सङ्किण्णवग्गो निट्ठितो

---

1 व्यत्तयो (?)

३. अनेकत्थवग्गो[1]

अनेकत्थे पवक्खामि गाथद्धपादतो कमा।
एत्थ लिङ्गविसेसत्थमेकस्स पुनरुत्तता ॥ ७७७ ॥

समय
समयो समवाये च समूहे कारणे खणे।
पटिवेधे सिया काले पहाणे लाभदिट्ठिसु ॥ ७७८ ॥

वण्ण
वण्णो सण्ठानरूपेसु जातिच्छविसु कारणे।
पमाणे च पसंसाय अक्खरे च यसे गुणे ॥ ७७९ ॥

उपोसथ
उद्देसे पातिमोक्खस्स पण्णत्तियमुपोसथो[2]।
उपवासे च अट्ठङ्गे उपोसथदिने सिया ॥ ७८० ॥

चक्क
रथङ्गे लक्खणे धम्मोऽरचक्केस्विरियापथे।
चक्क सम्पत्तियं चक्करतने मण्डले बले ॥ ७८१ ॥

ब्रह्मचरिय
कुलालभण्डे आणायमायुधे दानरासिसु।
दानस्मिं ब्रह्मचरिय अप्पमञ्ञासु सासने ॥ ७८२ ॥
मेथुनारतिय वेय्यावच्चे सदारतुट्ठियं।
पञ्चसीलारियमग्गोपोसथङ्गधितीसु च ॥ ७८३ ॥

धम्म
धम्मो सभावे परियत्तिपञ्ञा-
ञायेसु सच्चप्पकतीसु पुञ्ञे।
ञेय्ये गुणाचारसमाधिसूपि
निस्सत्तत्तापत्तिसु कारणादो ॥ ७८४ ॥

अत्थ
अत्थो पयोजने सद्दाभिधेय्ये बुद्धियं धने।
वत्थुम्हि कारणे नासे हिते पच्छिमपब्बते ॥ ७८५ ॥

केवल
येभुय्यताऽब्यामिस्सेसु विसं योगे च केवल।
दळ्हत्थेऽनतिरेके चानवसेसम्हि तन्तिसु ॥ ७८६ ॥

गुण
गुणो पटलरासीसु आनिसंसे च बन्धने।
अप्पधाने च सीलादोसुक्कादिम्हि जियाय च ॥ ७८७ ॥

---

1. इतो पुब्बे नमो बुद्धाय ति पद सी॰ पोत्थके अत्थि।
2. पण्णत्तिय॰—सी॰।

भूत	रुक्खादो विज्जमाने बारहन्ते खन्धपञ्चके ।
	भूतो सत्तमहाभूतामनुस्सेसु च नारियं ।। ७८८ ।
	वाच्चलिङ्गो अतीतस्मिं जाते पत्ते मे मतो ।। ७८९ ।।
साधु	सुन्दरे दळ्हकम्मे चायाचने सम्पटिच्छने ।
	सज्जने सम्पहंसाय माऽभिधेय्यऽलिङ्गिकं ।। ७९० ।।
अन्त	अन्तो नित्थि समीपे चावमाने पदपूरणे ।
	देहावयवकोट्ठासनासमीमासु लामके ।। ७९१ ।।
जाति	निकायसन्धिसामञ्ञपसूतिसु कुले भवे ।
	विसेसे सुमनायं च जाति मङ्खतलक्खणे ।। ७९२ ।।
गति	भवभेदे पतिट्ठायं निट्ठाज्झासयबुद्धिसु ।
	वासट्ठाने च गमने विसदत्ते गतीरिता ।। ७९३ ।।
ञाणदस्सन	फले विपस्सना दिब्बचक्खुसब्बञ्ञुतासु च ।
	पच्चवेक्खणञाणम्हि मग्गे च ञाणदस्सन ।। ७९४ ।।
उक्का	कम्मारुद्धन अङ्गार कपल्लदीपिकासु च ।
	सुवण्णकारभूसायं उक्का वेगे च वायुनो ।। ७९५ ।।
वुत्त	केसोहारणजीवितवुत्ति वपने च वापसम करणे ।
	कथने पमुक्कभावज्झेसनादो वुत्तमपि तीसु ।। ७९६ । *
सुत	गमने विस्सुते चाऽवधारितोपचितसु च ।
	अनुयोगे किलिन्ने च सुताऽभिधेय्यलिङ्गिको ।।७९७।। +
कप्प	सोतविञ्ञेय्यसत्थेसु सुत पुत्ते सुतो सिया ।
	कप्पो काले युगे लेसे पञ्ञत्ति परमायुसु ।। ७९८ ।।
	सदिसे तीसु समण वोहारकप्प कन्दुसु ।
	समन्तत्तोऽन्तरकप्पादिके तक्के[1] विधिम्हि च ।।७९९ ।।
सच्च	निब्बाणमग्गविरतिसपथे सच्चभासिते ।
	तच्छे चारियसच्चम्हि दिट्ठियं सच्चमीरितं ।। ८०० ।।

* वुत्तभङ्गो ।

+. छन्दोभङ्गो ।

1. तक्को – सी० ।

आयतन सञ्जातिदेसे हेतुम्हि वासट्ठानाकरेसु च।
समोसरणट्ठाने चायतनं पदपूरणे ॥ ८०१ ॥

अन्तर अन्तरं मज्झवत्थाञ्ञखणोकासोऽधिहेतुसु।
व्यवधाने विनाऽत्थे च भेदे छिदे मनस्यपि ॥ ८०२ ॥

कुसल आरोग्ये कुसल इट्ठविपाके कुसलो तथा।
अनवज्जह्मि छेके च कथितो वाच्चलिङ्गिको ॥ ८०३॥

रस द्रवाचारेसु विरिये मधुरादीसु पारदे।
सिङ्गारादो धातुभेदे किच्चे सम्पत्तिय रसो ॥ ८०४ ॥

बोधि बोधि सब्बञ्ञुतञ्ञणे ऽरियमग्गे च नारिय।
पञ्ञत्तिय पुमेस्सत्थरुक्खह्मि पुरिसित्थिय ॥ ८०५ ॥

विषय सेवितो येन यो निच्च तत्थापि विसयो सिया।
रूपादिके जनपदे तथा देसे च गोचरे ॥ ८०६ ॥

भाव भावो पदत्थे सत्तायमधिप्पायक्रियासु च।
सभावस्मि च लीलायं पुरिसित्थिन्द्रियेसु च ॥ ८०७ ॥

स सो बन्धवेऽत्तनी च स सो धनस्मिमनित्थियं।

सा सा पुमे सुनखे वुत्तोऽत्तनिये सो तिलिङ्गि सो ॥ ८०८ ॥

सुवण्ण सुवण्ण कनके वुत्ता सुवण्णो गरुळे तथा।
पञ्चधरणमत्तो च छविसम्पत्तायं पि च ॥ ८०९ ।

वर वरो देवादितो इट्ठे जामातरि पतिम्हि च।
उत्तामे वाच्चलिङ्गे सो वर मन्दप्पियेऽव्ययं ॥ ८१० ॥

कोस मुकुले धनरासिम्हि सिया कोसमनित्थियं।
नेत्तिमादिपिधाने च धनुपञ्चसतेऽपि च ॥ ८११ ॥

ब्रह्मा पितामहे जिने सेट्ठे ब्राह्मणे च पितुस्वपि।
ब्रह्म ब्रह्मा वुत्तो तथा ब्रह्म वेदे तपसि वुच्चते ॥ ८१२ ॥

कच्छ हत्थीनं मज्झबन्धे च पकोट्ठे कच्छबन्धनं।
मेखलाय मता कच्छा कच्छो वुत्तो लताय च ॥ ८१३ ॥
तथेव बाहुमूलस्मिमनुपम्हि[1] तिणेऽपि च ॥ ८१४ ।

---

1. बाहुमूलस्मि अनुपम्हि—सी० ।

पमाण	पमाण हेतुसत्थेसु माणे च सच्चवादिनि ।
	पमातरि च निच्चम्हि मरियादायमुच्चते ॥ ८१५ ॥
सत्त	सत्त दब्बाराभावेसु पाणेसु च बले सिया ।
	सत्ताय च जने सत्ता आसत्ते सो तिलिङ्गिको ॥ ८१६ ॥
धातु	सेम्हादो रसरत्तादो महाभूते पभादिके ।
	धातु द्वोस्वट्ठि चक्खादि भवादी गोरिकादिसु ॥८१७॥
पकति	अमच्चादो सभावे च योनियं पकतीरिता ।
	सत्वादि साम्यवत्थाय पच्चया पठमेऽपि च ॥ ८१८ ।
पद	पद ठाने परित्ताणे निब्बाणम्हि[1] च कारणे ।
	सद्दे वत्थुम्हि कोट्ठासे पादे तल्लञ्छने मत ॥ ८१९ ॥
घन	लोहमुग्गरमेघेसु घनो तालादिके घन ।
	निरन्तरे च कठिने वाच्चलिङ्गिकमुच्चते ॥ ८२० ॥
खुद्द	खुद्दा[2] च मक्खिकाभेदे मधुम्हि खुद्दमप्पके[3] ।
	अधमे कपणे चापि बहुम्हि चतुसुत्तिसु ॥ ८२१ ॥
अरिट्ठ	तक्के मरणलिङ्गे च अरिट्ठमसुभे सुभे ।
	अरिट्ठो आसवे काके निम्मे[4] च पणिलद्दुमे ॥ ८२२ ॥
तुला	मानभण्डे[5] पलसते सदिसत्ते तुला तथा ।
	गेहान दारुबन्धत्थ पीटिकायं च दिस्सति ॥ ८२३ ॥
सगर	मित्ताकारे लञ्चदाने बळरासि[6] विपत्तिसु ।
	युद्धे चेव पटिञ्ञाय सङ्गरो सम्पकासितो ॥ ८२४ ॥
रूप	खन्धे भवे निमित्तम्हि रूप वण्णे च पच्चये ।
	सभावसद्दसण्ठानं रूपज्झानवपूसु च ॥ ८२५ ॥
काम	वत्थू किलेसकामेसु इच्छायं मदने रते ।
	कामा काम निकामे चानुञ्ञाय काममव्यय ॥ ८२६ ॥

---

1 निब्बाणनम्हि 2 खुद्द (?) ।

3 खद्द अप्पके (?) । 4 निम्ब–सी० ।

5. माणभण्डे-सी० । 6 बलरासि–सी० ।

पोक्खर — पोक्खर पदुमे देहे वज्जभण्डमुखेपि च ।
सुन्दरत्ते च सलिले मातङ्ग कर कोटि यं ॥ ८२७ ॥

कूट — रासि निच्चल मायासु दम्हाऽसच्चेस्वयोघने ।
गिरिसिङ्गम्हि सिरङ्गे[1] यन्ते कूटमनित्थियं ॥ ८२८ ॥

भव — वड्ढियं जनने कामधात्वादिम्हि च पत्तिय ।
सत्तायं चेव ससारे भवो सस्सतदिट्ठियं ॥ ८२९ ॥

उत्तार — पटिवाक्योत्ताराङ्गे सूत्तर उत्तारो तिसु ।
सेट्ठे दिमादिभेदे च परस्मिमुपरीरितो ॥ ८३० ॥

नेक्खम्म — नेक्खम्म पठमज्झाने पब्बज्जाय विमुत्तियं ।
विपस्सनायं निस्सेसकुसलस्मिं च दिस्सति ॥ ८३१ ॥

सखार — सखारा संखते पुञ्ञाभिसंखारादिके पि च ।
पयोगे कायसंखाराद्यभिसंखरणेसु च ॥ ८३२ ॥

सहगत — आरम्मणे च संसट्ठे वोकिण्णे निस्सये तथा ।
तब्भावे चाऽव्यभिधेय्यलिङ्गो सहगता भवे ॥ ८३३ ॥

छन्न — तोसु छन्न पतिरूपे छादिते च निगूहिते ।
निवासनपारुपने रहो पञ्ञत्तिय पुमे ॥ ८३४ ॥

चक्खु — बुद्धसमन्तचक्खूसु चक्खु पञ्ञायमीरितं ।
धम्मचक्खुम्हि च मस-दिब्बचक्खुद्वयेसु च ॥ ८३५ ॥

अभिक्कन्त — वाच्चलिङ्गो अभिक्कन्तो सुन्दरस्मिमभिक्कमे ।
अभिरूपे खये वुत्तो तथेवाब्भनुमोदने ॥ ८३६ ॥

परियाय — कारणे देसनायं च वारे वेवचनेऽपि च ।
पाकारस्मिं[2] अवसरे परियायो कथीयति ॥ ८३७ ॥

चित्त — विञ्ञाणे चित्तकम्मे च विचित्तो चित्तमुच्चते ।
पञ्ञत्तिचित्तमासेसु चित्तो तारन्तरे थियं ॥ ८३८ ॥

साम — साम वेदन्तरे सान्त्वे तम्पीते सामले तिसु ।
सयमत्थे व्ययं साम सामा च सारिबाय पि ॥ ८३९ ॥

---

1 सारङ्गे-सी ।

2 पकारस्मिं—सी० ।

गरु	पुमे आचरियादिम्हि गरु मातु पितुस्वपि ।
	गरु तीसु महन्ते च दुज्जरालहुकेसु च ॥ ८४० ॥
सन्त	अच्चिते विज्जमाने च पसत्थे सच्चसाधुसु ।
	खिन्ने च समिते चेव सन्तोऽभिधेय्यलिङ्गिको ॥ ८४१ ॥
देव	देवो विसुद्धदेवादो मेघमच्चुनभेसु च ।
माणव	अथापि तरुणे सत्ते चोरेऽपि माणवो भवे ॥ ८४२ ॥
अग्ग	आदि कोट्ठास कोटीसु पुरतोऽग्ग वरे तिसु ।
पर	पच्चानिकोत्तमेस्वञ्ञे पच्छाभावे परो तीसु ॥ ८४३ ॥
भग	योनि काम सिरिस्सेर धम्मुय्यामयसे भग ।
उळारो	उळारो तीसु विपुले सेट्ठे च मधुरे सिया ॥ ८४४ ॥
सपन्न	सम्पन्नो तीसु सम्पुण्णे मधुरे च समङ्गिनि ।
सखा	सखा तु ञाणे कोट्ठासे पञ्ञत्तिगणनेसु च ॥ ८४५ ॥
ठान	ठानमिस्सरियोकासहेतुसु ठितियं पि च ।
विध	अथो माने[1] पकारे च कोट्ठासे च विधो द्विसु ॥ ८४६ ॥
दम	पञ्ञोपवासखन्तीसु दमा इन्द्रियसंवरे ।
वेद	ञाणे च सोमनस्से च वेदो छन्दसि वोच्चते ॥ ८४७ ॥
योनि	खन्ध कोट्ठास पस्सावमग्गे[2] हेतुसु योनि सा ।
वेला	काले तु कूले सीमाय वेला रासिम्हि भासिता ॥ ८४८ ॥
वाहार	वोहारो सद्दपण्णत्ति वणिज्जा चेतनासु च ।
नाग	नागो तूरगहत्थीसु[3] नागरुक्खे तथोत्तमे ॥ ८४९ ॥
एक	सेट्ठासहायसंखाञ्ञतुल्येस्वेको तिलिङ्गिको ।
मानस	रागे तु मानसो चित्तारहत्तेसु च मानसं ॥ ८५० ॥
मूल	मूल भे सन्तिके मूलमूले हेतुम्हि पाभते ।
खन्ध	रूपाद्यंसपखन्धेसु खन्धो रासिगुणेसु च ॥ ८५१ ॥
आरभ	आरम्भो विरिये कम्मे आदिकम्मे विकोपने ।
हृदय	अथो हदयवत्थुम्हि चित्ते च हदय उरे ॥ ८५२ ॥

1 माणे—सी० ।

2 पस्सावमग्ग—सी० ।

3. तुरगहत्थीसु सी० ।

अनुसय	पच्छातापानुबन्धेसु रागादोऽनुसयो भवे।
कुंभ	मातङ्गमुद्धपिण्डे तु घटे कुम्भो दसम्मणे ॥ ८५३ ॥
परिवार	परिवारो परिजने खग्गकोसे परिच्छदे।
आडम्बर	आडम्बरो तु सारम्भे भेरिभेदे च दिस्सति ॥ ८५४ ॥
खण	खणो कालविसेसे च निब्यापारट्ठितिम्हि च।
अभिजन	कुले त्वभिजनो वुत्तो उप्पत्तिभूमियं पि च ॥ ८५५ ॥
आहार	आहारो कबळिङ्काराहारादिसु च[1] कारणे।
पणय	विस्सासे याचनायं च पेमे च पणयो मतो ॥ ८५६ ॥
पच्चय	णादो सद्धाचीवरादिहेत्वाधारेसु पच्चयो।
विहार	कोळा दिब्बविहारादो विहारो सुगतालये ॥ ८५७ ॥
समाधि	समत्थने मतो चित्तेकग्गतायं समाधि च।
योग	योगो सङ्गे च कामादो झानोपयेसु युत्तियं ॥ ८५८ ॥
भोग	भोगो सप्पफणङ्गेसु कोटिल्ले भुञ्जने धने।
अगण	भूमिभागे किलेसे च मले चाङ्गणमुच्चते ॥ ८५९ ॥
अभिमान	धनादिदप्पे पञ्ञायमभिमानो मतोऽथ च।
अपदेस	अपदेसो निमित्ते च छले च कथने मतो ॥ ८६० ॥
अत्ता	चित्ते काये सभावे च सो अत्ता परमत्तनि।
गुम्ब	अथ गुम्बो च थम्भस्मि समूहे बलसञ्जने ॥ ८६१ ॥
कोट्ठ	अन्तोघरे[2] कुसूले च कोट्ठोऽन्तोकुच्छियं प्यथ।
उण्हीस	सोपानङ्गम्हि[3] उण्हीसो मकुटे सीसवेठने ॥ ८६२ ॥
निय्यूह	निय्यासे सेखरे द्वारे निय्यूहो नागदन्तके।
कलाप	अथो सिखण्डे तूणीरे कलापो निकरे मतो ॥ ८६३ ॥
चूळा, मोलि	चूळा संयतकेसेसु मकुटे मोलि च द्विसु।
सङ्ख	सङ्खो त्वनित्थियं कम्बु ललाटट्ठीसु गोप्फके ॥ ८६४ ॥
पक्ख	पक्खो काले बले साध्ये सखीवाजेसु पक्कुले।
सिन्धु	देसेऽण्णवे पुमे सिन्धु सरितायं सनारियं ॥ ८६५ ॥

1. सी० पोत्थके नत्थि।
2. अन्तोघरे—मा०।
3. सोपानङ्गम्हि—सी०।

करोरु	गजे करेरु पुरिसे सो हत्थिनियमनित्थियं[1] ।
वजिर	रतने वजिरो नित्थी मणिवेधिन्दहेतिसु ॥ ८६६ ॥
विसाणं	विसाणं तीसु मातङ्गदन्ते च पसुसिङ्गके ।
कोणो	कोटियं तु[2] मतो कोणो तथा वादित्तवादने ॥ ८६७ ॥
निगम	वणिप्पथे च नगरे वेदे च निगमोऽथ च ।
अधिकरण	विवादादोऽधिकरण सियाऽऽधारे च कारणे ॥ ८६८ ॥
गो	पसुम्हि वसुधायं च वाचादो गो पुमित्थियं ।
हरि	हरिते तु सुवण्णे च वासुदेवे हरीरितो ॥ ८६९ ॥
परिग्गह	आयत्ते परिवारे च भरियायं परिग्गहो ।
उत्तंस	उत्तंसो त्ववतंसो च कण्णपूरे च सेखरे ॥ ८७० ॥
असनि	विज्जुयं वजिरे चेवाऽसनित्थी पुरिसेऽप्यथ ।
कोटि	कोणे सग्गाविसेसस्मिं उक्कंसे कोटि नारियं ॥ ८७१ ॥
सिखा	चूळा जाला पधानग्गमोरचूळासु सा सिखा ।
आसि	सप्पदाठायमाऽऽसित्थी[3] इट्ठस्सासिसनाय पि ॥ ८७२ ॥
वसा	वसा विलीनतेलस्मि[4] वसगा वञ्झगाविसु ।
रुचि	अभिलासे तु किरणे अभिस्सङ्गे रुचित्थियं ॥ ८७३ ॥
सञ्ञा	सञ्ञा सञ्जानने नामे चेतनायं च दिस्सति ।
कला	अंसे सिप्पे कला काले भागे चन्दस्स सोळसे ॥ ८७४ ॥
कण्णिका	बीजकोसे घरकूटे कण्णभूसाय कण्णिका ।
आयति	आगामिकाले दीघत्ते पभावे च माताऽऽयति ॥ ८७५ ॥
उण्णा	उण्णा मेसादिलोमे च भूमज्झे रोमधातुगं ।
वारुणी	वारुणी त्वित्थियं वुत्ता नत्तकी मदिरासु च ॥ ८७६ ॥
क्रिया, किरिय	क्रियाचिस्ते च करणे किरिय कम्मनि क्रिया ।
वधू	सुणिसायं तु कञ्ञाय जायाय च वधू मता ॥ ८७७ ॥

1. हत्थिनियमित्थिय—सी० ।
2. कोटियन्तु ना० ।
3 दाठयमा०— ना० ।
4. विलीनतेलस्मि—सी० ।

मत्ता	पमाणिस्सरिये मत्ता अक्खरावयवेऽप्पके।
सुत्त	सुत्त पावचने सिद्धे तन्ते तं सुपिने तिसु ॥ ८७८ ॥
कुकुध	राजलिङ्गेसभङ्गेसु रुक्खे च कुकुधोऽप्यथ।
ब्यञ्जन	निमित्तक्खरसूपेसु[1] ब्यञ्जन चिन्हे[2] पदे ॥ ८७९ ॥
देवन	वोहारे जेतुमिच्छायं कीळादो चापि देवन।
खेत्त	भरियायं तु केदारे सरीरे खेत्तमीरितं ॥ ८८० ॥
उपासन	सुस्सूसायं च विञ्ञेय्यं इट्ठाभ्यासेऽयुपासन।
सूल	सूल त्वनित्थियं हेति भेदे सङ्कु रुजासु च ॥ ८८१ ॥
तन्ति, तन्त	तन्ति वीणागुणे, तन्त मुख्यसिद्धन्ततन्तुसु।
युग	रथादयङ्गे तु च युगो कप्पम्हि युगले युग ॥ ८८२ ॥
रजो	इत्थिपुप्फे च रेणुम्हि रजो पकतिजे गुणे।
निय्यातन	न्यासप्पणे तु दानम्हि निय्यातनमुदीरितं ॥ ८८३ ॥
तित्थ	गुरुपादावतारेसु[3] तित्थ पूतम्बुदिट्ठिसु।
जोति	पण्डके जाति नक्खत्तरंसिस्वग्गिम्हि जोति सो ॥ ८८४ ॥
कण्ड	कण्डो नित्थि सरे दण्डे वग्गे चावसरेऽप्यथ।
पोरिस	उद्धबाहु द्वयुम्माने[4] सूरत्तोऽपि च पोरिस ॥ ८८५ ॥
उट्ठान	उट्ठान पोरिसेहासु निसिन्नादब्भुग्गमेऽयथ।
इरीण	अनिस्सयमहीभागे त्विरीणमूसरे सिया ॥ ८८६ ॥
आराधन	आराधनं साधने च पत्तियं परितोसने।
सिङ्ग	पधाने तु च सानुम्हि विसाणे सिङ्गमुच्चते ॥ ८८७ ॥
दस्सन	दिट्ठ्यादिमग्गे ञाणक्खिलक्खणलद्धिसु दस्सन।
निक्ख	हेय्ये पञ्चसुवण्णे च निक्खो नित्थि पसाधने ॥ ८८८ ॥
पब्ब	तिथिभेदे च साखादिकलुम्हि पब्बमुच्चते।
पाताल	नागलोके तु पाताल मासितं वळवामुखे ॥ ८८९ ॥

1. निमित्ताक्खरसूपेसु—सी०।
2. चिह्ने—म०, चिह्णे—सी०।
3. गुरुपायावतारेसु—ना०।
4. द्वयुम्माने द्वयुम्माणे सी०।

ब्यसन	कामजे कोपजे दोसे ब्यसन[1] च विपत्तियं ।
साधन	अथोपकरणे सिद्धिकारकेसु च साधन ॥ ८९० ॥
वदञ्ञू	तिस्वितो दानसीले च वदञ्ञू वग्गुवादिनि ।
पुरक्खत	पुरक्खतोऽभिसित्ते च पूजिते पुरतो कते ॥ ८९१ ॥
मन्द	मन्दो भाग्यविहीने[2] वाऽप्पके मूळ्हापटुस्वपि ।
उस्सित	वुद्धियुत्ते समुन्नद्धे उप्पन्ने चोस्सितं भवे ॥ ८९२ ॥
अक्ख	रथङ्गेऽक्खो, सुवण्णस्मिं पासके अक्खमिन्द्रिये ।
धुव	सस्सते च धुवो तीसु धुव तक्के च निच्छिते ॥ ८९३ ॥
सिव	हरे सिवो, सिव भद्दमोक्खेसु, जम्बुके सिवा ।
बल	सेनायं सत्तियं चेव थूलत्ते च बलं भवे ॥ ८९४ ॥
पदुम	सङ्ख्या नरकभेदे च पदुम वारिजेऽप्यथ ।
वसु	देवभेदे वसु पुमे, पण्डकं रतने धने ॥ ८९५ ॥
निब्बाण	निब्बाणं[3] अत्थगमने अपवग्गे सियाऽथ च ।
पुण्डरीक	सेतम्बुजे पुण्डरीक ब्यग्घे रुक्खन्तरे पुमे ॥ ८९६ ॥
बलि	उपहारे बलि पुमे करस्मिं चासुरन्तरे ।
सुक्क	सुक्क तु सम्भवे सुक्को धवले कुसले तिसु ॥ ८९७ ॥
दाय	दायो दाने विभत्तब्बधने च पितुनं वने ।
वस	पभुत्तायत्तातायत्ताऽभिलासेसु वसो भवे ॥ ८९८ ॥
परिभासन	परिभासनमक्कोसे नियमे भासनेऽथ च ।
सेलन	धनिम्हि सेलन योधसीहनादम्हि दिस्सति ॥ ८९९ ॥
पभव	पभवो जातिहेतुम्हि ठाने चादयुपलद्धियं ।
उतु	अथोतु नारिपुप्फस्मिं हेमन्तादिम्हि च द्विसु ॥ ९०० ॥
करण	करण साधकतमे क्रियागत्तेसु चेन्द्रिये ।
ताळ	ताळो तु कुञ्चिकायं च तुरियङ्गे दुमन्तरे ॥ ९०१ ॥
पसव	पुप्फे फले च पसवो उप्पादे गब्भमोचने ।
गन्धब्ब	गायने गायके अस्से गन्धब्बो देवतन्तरे ॥ ९०२ ॥

1. ब्यसनं—सी० ।
2. भाग्यविहीन—सी० ।
3. निब्बानं – सी० ।

वनप्पति	विना पुप्फं फलग्गाही रुक्खे रुक्खे वनप्पति ।[1]
रूपिय	आभते हेमरजते रूपियं रजतेऽपि च ॥ ९०३ ॥
पास	खगादिबन्धने पासो केसपुब्बो चयेऽप्यथ ।
तारा, तार	ताराक्खिमज्झे नक्खत्तो; तारो उच्चतरस्सरे ॥ ९०४ ॥
कंस	पत्तो च सब्बलोहस्मिं कंसो चतुकहापणे ।
मज्झिम	मज्झिमो देहमज्झस्मिं मज्झभावे च सो तिसु ॥ ९०५ ॥
आवेसन	आवेसन सियावेसे सिप्पसालाघरे सु च ।
सिरी, लक्खी	सोभासम्पत्तिसु सिरी, लक्खीत्थी देवताय च ॥ ९०६ ॥
कुमार	कुमारो युवराज च खन्धे वुत्तो सुसुम्हि च ।
पवाल	अथानित्थि पवालो च मणिभेदे तथाङ्कुरे ॥ ९०७ ॥
पण	पणो वेतनमूलेसु वोहारे च घने मतो ।
पटिग्गह	पटिग्गहो तु गहणे कथितो भाजनन्तरे ॥ ९०८ ॥
भाग्य	असुभे च सुभे कम्मे भाग्य वुत्तं द्वयेऽप्यथ ।
पिप्फल	पिप्फल तरुभेदे च वत्थच्छेदनसत्थके ॥ ९०९ ॥
अपवग्ग	अपवग्गो परिच्चागावसानेसु विमुत्तियं ।
लिङ्ग	लिङ्ग तु अङ्गजातस्मिं पुमत्तादिम्हि लक्खणे ॥ ९१० ॥
सग्ग	चागे स्वभावे निम्माणे सग्गोऽज्झाये दिवेऽप्यथ ।
रोहित	रोहितो लोहिते मच्छभेदे चेव मिगन्तरे ॥ ९११ ॥
निट्ठा	निट्ठा निप्फत्तियं चेवावसानस्मिं अदस्सने ।
कण्टक	कण्टको तु सपत्तस्मिं रुक्खङ्गे लोमहंसने ॥ ९१२ ॥
घुस	मुख्योऽपायेसु वन्दने चादिस्मिं घुसमीरितं ।
दब्ब	दब्ब भब्बे गुणाधारे वित्ते च बुधदारुसु ॥ ९१३ ॥
मान	मान पमाणे पत्थादो मानो वुत्तो विधाय च ।
ब्यायाम	अथो परिस्समे वुत्तो ब्यायामो विरियेऽपि च ॥ ९१४ ॥
सतपत्त	सरोरुहे सतपत्त, सतपत्तो खगन्तरे ।
सुसिर	छिद्दे तु छिद्दवन्ते च सुसिर तुरियन्तरे ॥ ९१५ ॥

---

1. तु. ५४० गाथा (अभिनप्पदीपिका) ।

समान	एकस्मिं सदिसे तुल्ये समानं वाच्चलिङ्गिकं ।
सम्भम	भयो गारवभीतीसु संवेगे सम्भमो मतो ॥ ९१६ ॥
जुण्हा	जुण्हा चन्दप्पभायं च तब्युत्तनिसाय च ।
विमान	विमानं देवतावासे सत्तभूमघरम्हि च ॥ ९१७ ॥
जेट्ठ	मासे जेट्ठोऽतिवुद्धातिप्पसत्थेसु च तीसु सो ।
सेय्य	धम्मे च मङ्गले सेय्यो सो पसत्थतरे तिसु ॥ ९१८ ॥
गह	आदिच्चादिम्हि गहणे निबन्धे च घरे गहो ।
काच	काचो तु मत्तिकाभेदे सिक्कायं नयनामये ॥ ९१९ ॥
गामणि	तीसु गामणि सेट्ठस्मिं अधिपे गामजेट्ठके ।
बिम्ब	बिम्बं तु पटिबिम्बे च मण्डले बिम्बिकाफले ॥ ९२० ॥
भण्ड	भाजनादिपरिक्खारे भण्डं मूलधनेऽपि च ।
मग्ग	मग्गो त्वरियमग्गे च सम्मादिट्ठ्यादिके[1] पथे ॥ ९२१ ॥
समा, सम	समा वस्से, समो खेदसन्तीसु[2] सन्निभे[3] तिसु ।
इस्सास	चापे त्विस्सासमुसुनो इस्सासो खेपकम्हि च ॥ ९२२ ॥
बाल	बालो तिस्वादिवयसासमङ्गिनि अपण्डिते ।
रत्त	रत्तं तु सोणिते तम्बानुरत्तरञ्जिते[4] तिसु ॥ ९२३ ॥
तन्वि	तचे काये च तन्वित्थी तीस्वप्पे विरळे किसे ।
सिसिर	उतुभेदे तु सिसिरो हिमे सो सीतले तिसु ॥ ९२४ ॥
सक्खरा	सक्खरा गुळभेदे च कठलेऽपि च दिस्सति ।
सगह	अनुग्गहे तु सङ्खेपे गहणे सङ्गहो मतो ॥ ९२५ ॥
पटु	दक्खे च तिखिणे व्यत्ते रोगमुत्ते पटु तिसु ।
राजा	राजा तु खत्तिये वुत्तो नरनाथे पतिम्हि च ॥ ९२६ ॥
खल	खलं च धञ्ञकरणे कक्के नीचे खलो भवे ।
समुदय	अब्भुप्पादे समुदयो समूहे पच्चयेऽपि च ॥ ९२७ ॥
अस्सम	ब्रह्मचारिगहट्ठादो अस्समो च तपोवने ।
कूर	भयङ्करे च कठिने कूरो तीसु निद्दये ॥ ९२८ ॥

1. सम्मादिट्ठादिके—सी० ।
2. खेदसन्तिसु—सी० ।
3. सो निभे—सी० ।
4. रञ्जिती—सी० ।

कनिट्ठ	कनिट्ठो कनियो तीसु अप्पेऽतियुवकेऽप्यथ ।
लहु	सीघम्हि लहु तं इट्ठनिस्साराऽगरुकेसु ॥ ९२९ ॥
अधर	अधरो तिस्वधो हीने[1] पुमे ओट्ठकेऽप्यथ ।
सुस्सूसा	सुस्सूसा सोतुमिच्छाय सा पारिचरियाय च ॥ ९३० ॥
हत्थ	हत्थो पाणिम्हि[2] रतने गणे सोण्डाय मन्तरे ।
कूप	आवाटे चोदपाने च कूपो कुम्भे च दिस्सति ॥ ९३१ ॥
पठम	आदो पधाने पठम पमुखं च तिलिङ्गिकं ।
वितत	वज्जभेदे च वितत तं वित्थारे तिलिङ्गिकं ॥ ९३२ ॥
सार	सारो बले थिरंसे च उत्तमे[3] सो तिलिङ्गिको ।
भार	भारो तु बन्धभारादो द्विसहस्सपले[4]ऽपि च ॥ ९३३ ॥
खय	मन्दिरे रोगभेदे च खयो अपचयम्हि च ।
बाळ	बाळो तु सापदे सप्पे कुरूरे सो तिलिङ्गिको[5] ॥ ९३४ ॥
साल	साळो सज्जुद्दुमे रुक्खे साला गेहे च दिस्सति ।
सवन	सोते तु सवन वुत्त यजने सुतियं पि च ॥ ९३४ ॥
पेत	तीसु पेतो परेतो च मते च पेतयोनिजे ।
पथित	ख्याते तु हट्ठे विञ्ञाते पथित वाच्चलिङ्गिकं ॥ ९३५ ॥
आसय	अधिप्पाये च आधारे आसयो कथितोऽथ च ।
पत्त	पत्त पक्खे दले पत्तो भाजने सोगते तिसु ॥ ९३६ ॥
सुकत	कुसले सुकत, सुट्ठुकते च सुक्तो तिसु ।
तपस्सी	तपस्सी त्वनुकम्पायाग्हे वुत्तो तपोधने ॥ ९३७ ॥
सोण्ड	तीसु सुरादिलोलस्मि सोण्डो हत्थिकरे द्विसु ।
रसन	अस्सादने तु रसन जिह्वाय च धनिम्हि च ॥ ९३८ ॥
पणीत	पणीतो तीसु मधुरे उत्तमे विहितेऽप्यथ ।
वीथि	अञ्जसे विसिखायं च पन्तियं वीथि नारियं ॥ ९३९ ॥

---

1. हीणे—सी० ।
2. पानिम्हि—सी० ।
3. उत्तमो—सी० ।
4. ० पळे—सी० ।
5. सी० पोत्थके नत्थि ।

अध	पापस्मिं गगने दुक्खे ब्यसने चाऽघमुच्चते ।
पटल	समूहे पटलं नेत्तरोगे वुत्तं छदिम्हि च ॥ ९४० ॥
सन्धि	सन्धि संघटने वुत्तो सन्धित्थी पटिसन्धियं ।
सत्तम	सत्तमं पूरणे सेट्ठे ऽतिसन्ते सत्तमो तिसु ॥ ९४१ ॥
ओज	ओजा तु यापनायं च, ओजो दित्तिबलेसु च ।
निसामन	अथो निसामनं वुत्तं दस्सने सवनेऽपि च ॥ ९४२ ॥
गब्भ	गब्भो कुच्छिट्ठसत्ते च कुच्छिओवरकेसु च ।
अपदान	खण्डने त्वपदानं च इतिवुत्ते च कम्मनि । ९४३ ॥
तिलक	चित्तके रुक्खभेदे च तिलको तिलकालके ।
पटिपत्ति	सीलादो पटिपत्तित्थी बोधे पत्तिपवत्तिसु ॥ ९४४ ॥
पाण	असुम्हि च बले पाणो सत्ते हदयगानिले ।
छन्द	छन्दो वसे अधिप्पाये वेदेच्छानुट्ठुभादिसु ॥ ९४५ ॥
ओघ	कामोघादो समूहस्मिं ओघो वेगे जलस्स च ।
कपाल	कपाल सिरसट्ठिम्हि घटादिसकलेऽपि च ॥ ९४६ ॥
जटा	वेण्वादिसाखाजालस्मिं लग्गकेसे जटाऽऽलये ।
सरण	सरणं तु वधे गेहे रक्खितस्मिं च रक्खणे ॥ ९४७ ॥
कन्त	थियं कन्ता, पिये कन्तो मनुञ्ञे सो तिलिङ्गिको ।
जाल	गवक्खे तु समूहे च जालं मच्छादिबन्धने ॥ ९४८ ॥
किं	पुच्छायं गरहाय चानियमे किं तिलिङ्गिकं ।
सद्धा	ससद्धे तीसु नीवापे सद्धं सद्धा च पच्चये ॥ ९४९ ॥
बीज	बीजं हेतुम्हि अट्ठिस्मिं अङ्कजाते च दिस्सति ।
पुब्ब	पुब्बो पुरोगते[1] आदो सो दिसादो तिलिङ्गिको ॥ ९५० ॥
फल	फलचित्ते हेतुकते लाभे धञ्ञादिके फलं ।
आगम	आगमने तु दीघादिनिकायस्मिं च आगमो ॥ ९५१ ॥
सन्तान	सन्तानो देवरुक्खे च वुत्तो सन्ततियं व्यथ ।
अनुत्तर	उत्तरविपरीते च सेट्ठे चानुत्तरं तिसु ॥ ९५२ ॥
विक्कम	सत्ति सम्पत्तियं वुत्तो कति मत्ते च विक्कमो ।
छाया	छाया तु आतपाभावे पटिबिम्बे पभाय च ॥ ९५३ ॥

1 पुथोग्गते — सी० ।

घम्म, निदाघ	गिम्हे घम्मो, निदाघो च उण्हे सेदजलेऽप्यथ।
कप्पन	कप्पनं कन्तनें वुत्तं विकप्पे सज्जने त्थियं ॥ ९५४ ॥
अंग	अंगा देसे बहुम्हऽङ्ग तथाऽवयवहेतुसु।
चेतिय	देवालये च थूपस्मि चेतियं चेतियद्दुमे ॥ ९५५ ॥
सज्जन	सज्जनो साधुपुरिसे, सज्जनं कप्पनेऽथ च।
सुपिन	सुपिनं सुपिने सुत्तविञ्ञाणे च मनित्थियं ॥ ९५६ ॥
सन्निधि	पच्चक्खे सन्निधाने च सन्निधि परिकित्तितो।
भीय	भीयो बहुतरत्थे सो पुनरत्थेऽव्ययं भवे ॥ ९५७ ॥
दिद्ध	विसलित्तसरे दिद्धो, दिद्धो लित्ते तिलिङ्गिको।
अधिवास	वासे धूपादिसङ्खारेऽधिवासो सम्पटिच्छने ॥ ९५८ ॥
विसारद	वुत्तो विसारदो तीसु सुप्पगब्भे च पण्डिते।
सित्थ	अथ सित्थं मधुच्छिट्ठे वुत्तमोदनसम्भवे ॥ ९५९ ॥
कसाय	द्रवे वण्णे रसभेदे कसायो सुरभिम्हि च।*
उग्गमन	अथो उग्गमनं वुत्तमुप्पत्तुद्धगतीसु च ॥ ९६० ॥
फरुस	लूखे निट्ठुरवाचायं फरुस वाच्चलिङ्गिक।
पवाह	पवाहो त्वम्बुवेगे च सन्दिस्सति पवत्तियं ॥ ९६१ ॥
परायण	निस्सये तप्परे इट्ठे परायणपदं[1] तिसु।
कञ्चुक	कवचे वारबाणे च निम्मोकेऽपि च कञ्चुको ॥ ९६२ ॥
तम्ब	लोहभेदे मतं तम्ब तम्बो रत्ते तिलिङ्गिको।
अवसित	तीसु त्ववसित ञाते अवमानगते मतं ॥ ९६३ ॥
पटिपादन	बोधने च पदाने च विञ्ञेय्यं पटिपादन।
मरु	सेले निज्जलदेसे च देवतासु मरूदितो ॥ ९६४ ॥
सत्थ	सत्थमायुधगन्थेसु लोहे, सत्थो[2] सञ्चये।
वुत्ति	जीविकायं विवरणे वत्तने वुत्ति नारियं ॥ ९६५ ॥
परक्कम	विरिये सूरभावे च कथीयति परक्कमो।
कम्बु	अथ कम्बु मतो सङ्खे सुवण्णे वलयेऽपि च ॥ ९६६ ॥

---

* छन्दोभङ्गो।

1. परायनपद—सी०।

2. सत्थो तु (?)

सर — सरो कण्डे अकारादो सद्दे वापिम्हि नित्थियं ।
खर — दुप्फस्से[1] तिखिणे तीसु गद्रभे ककचे खरो ॥ ९६७ ॥
आसव — सुरायोपद्दवे कामासवादिम्हि च आसवो ।
उपधि — देहे बुसो[2] रथङ्गे च चतुरोपधिसूपधि ॥ ९६८ ॥
वत्थु — वत्थूत्त कारणे दब्बे भूभेदे रतनत्तये ।
यक्ख — यक्खो देवे महाराजे कुवेरानुचरे[3] नरे ॥ ९६९ ॥
पीठ — दारुखण्डे पीठिकायं आपणे पीठमासने ।
परिक्खार — परिवारे परिक्खारो सम्भारे च विभूमने ॥ ९७० ॥
पञ्ञत्ति — वोहारस्मि च ठपने पञ्ञत्तित्थी पकासने ।
पटिभान — पटिभान तु पञ्ञायं उपट्ठितगिराय च ॥ ९७१ ॥
हेतु — वचनावयवे मूले कथितो हेतु कारणे ।
गहणी — उदरे तु तथा पाचानलस्मि गहणीत्थियं ॥ ९७२ ॥
पिय — पियो भत्तरि, जायाय पिया, इट्ठे पियो तिसु ।
यम — यमराजे तु युगले संयमे च यमो भवे ॥ ९७३ ॥
मधु — मुद्दिकारस च पुप्फस्स रसे खुद्दे मधूदितं ।
वितान — उल्लोचे तु च वित्थारे वितान पुन्नपुंसके ॥ ९७४ ॥
अमत — अपवग्गे च सलिले सुधायं अमत मत ।
तम — मोहे तु तिमिरे साम्यगुणे तममनित्थियं । ९७५ ॥
कटु — खरे चाकारिये तीसु रसम्हि पुरिसे कटु ।
पुञ्ञ — पण्डके सुकते पुञ्ञ मनुञ्ञे पावने तिसु ॥ ९७६ ॥
रुक्ख — रुक्खो दुमम्हि फरुसासिनिद्धेसु च सो तिसु ।
सम्भव — उपत्तियं[4] तु हेतुम्हि सङ्के सुक्के च सम्भवो ॥ ९७७ ॥
निमित्त — निमित्त कारणे वुत्त अङ्गजाते च लच्छने ।
आदि — आदि सीमाप्रकारेसु समीपेऽवयवे मतो ॥ ९७८ ॥
मन्त — वेदे च मन्तणे मन्तो, मन्ता पञ्ञायमुच्चते ।
अनय — अनयो व्यसने चेव सन्दिस्सति विपत्तियं ॥ ९७९ ॥

---

1. दुफस्से—सी० ।
2. बुसो—सी० ।
3. कुबेरानुचरे (?)
4. उप्पत्तियं (?)

अरुण	अरुणो रंसिभेदे चाब्यत्तरागे च लोहिते।
अनुबन्ध	अनुबन्धो तु पकताविबन्धे नस्सरक्खरे ॥ ९८० ॥
अवतार	अवतारोऽवतरणे तित्थस्मि विवरेऽप्यथ।
आकार	आकारो कारणे वुत्तो सण्ठाने इङ्गितेऽपि च ॥ ९८१ ॥
उग्ग	सुद्दित्थी तनये खत्ता उग्गो तिब्बम्हि सो तिसु।
पधान	पधान तु महामत्तो पकत्यग्गधितीसु च ॥ ९८२ ॥
कल्ल	कल्ल पभाते निरोगे[1] सज्जदक्खेसु तीसु तं।
कुहन	कुहना[2] कूटचरियायं कुहनो[3], कुहके तिसु ॥ ९८३ ॥
कपोत	कपोतो पक्खिभेदे च दिट्ठो पारापतेऽथ च।
सारद	सारदो सरदुब्भूते अप्पगब्भे मतो तिसु ॥ ९८४ ॥
कक्कस	तीसु खरे च कठिने कक्कसो साहसप्पिये।
कोपीन	अकारिये तु गुय्हङ्ग चीरे कोपीनमुच्चते ॥ ९८५ ॥
कदली	मिगभेदे पताकायं मोचे च कदलीत्थियं।
दक्खिणा	दक्खिणा दानभेदे च, वामतोऽञ्ञम्हि दक्खिणो ।९८६ ॥
दुतिया	दुतिया भरियायं च दिन्नं पूरणियं मता।
धूमकेतु	अथुप्पादे सिया धूमकेतु वेस्सानरेऽपि च। ९८७ ॥
निस्सरण	भवनिग्गमने याने द्वारे निस्सरणं सिया।
नियामक	नियामको पोतवाहे तिलिङ्गो सो नियन्तरि ॥ ९८८ ॥
निरोध	अपवग्गे विनासे च निरोधो रोधनेऽप्यथ।
पतिभय	भये पटिभय वुत्त तिलिङ्ग त भयङ्करे ॥ ९८९ ॥
पिटक	पिटक भाजने वुत्त तथेव परियत्तियं।
वलि	जरासिथिलचम्मस्मिं उदरङ्गे मता वली ॥ ९९० ॥
भिन्न	भिन्न विदारितेऽञ्ञस्मि निस्सिते वाच्चलिङ्गिकं।
भेद	उपजापे मतो भेदो विसये[4] च विदारणे ॥ ९९१ ॥

1. नीरोगे (?)
2. कुहणा—सी०।
3. कुहणो—सी०।
4. विसेसे—सी०।

मण्डल — मण्डलं गामसन्दोहे बिम्बे परिधिरासिसु ।

सासन — आणायं आगमे लेखे सासनं अनुसासने ॥ ९९२ ॥

सिखर — अग्गे तु सिखरं चायोमयविज्झनकण्टके ।

सम्पत्ति — गुणुक्कंसे च विभवे सम्पत्ति चेव सम्पदा ॥ ९९३ ॥

खमा — भू खन्तिसु खमा योग्गे हिते युत्ते खमो तिसु ।

अद्ध — अद्धो भागे पथे काले एकंसेद्धा व्ययन्तरे[1] ॥ ९९४ ॥

करीस — अथो करीसं वच्चस्मिं वुच्चते चतुरम्मणे ।

उसभ — उसभोसधगोसेट्ठे सूसभं वीसयट्ठियं ॥ ९९५ ॥

पाळि — सेतुस्मिं तन्तिमन्तासु नारियं पाळि कथ्यते ।

कट — कटो जयेत्थीनिमित्ते* किलञ्जे सो कते तिसु ॥ ९९६ ॥

जगती — महियं[2] जगती वुत्ता मन्दिरालिन्दवत्थुनि ।

तक्क — वितक्के मथिते तक्को तथा सूचिफले मतो । ९९७ ॥

सुदस्सन — सुदस्सनं सक्कपुरे तीसु तं दुद्दसेतरे ।

दीप — दीपोऽन्तरोपपज्जोतपतिट्ठानिब्बुतीसु च ॥ ९९८ ॥

सित — बद्धनिस्सितसेतेसु तीसु त मिहिते सित ॥ ९९९ ॥

पजापति — थियं पजापति दारे ब्रह्म मारे सुरे पुमे ।

कण्ह — वासुदेवेऽन्तके कण्हो सो पापे असिते तिसु ॥ १००० ॥

उपचार — उपचारो उपट्ठाने आसन्नेऽञ्ञतरोपने[3] ।

सक्क — सक्को इन्दे जनपदे साकिये सो खमे तिसु ॥ १००१ ॥

परिहार — वज्जने परिहारो च सक्कारे चेव रक्खने[4] ।

अरिय — सोतापन्नादिके अग्गे अरियो तीसु[5] द्विजे पुमे ॥ १००२ ॥

सुसुक — सुसुको संसुमारे च बालके च उलूपिनि ।

इन्दीवर — इन्दीवरं मतं नीलुप्पले उद्दाल पादपे ॥ १००३ ॥

असन — असनो पियके कण्डे भक्खने खिपनेऽसनं ।

धुर — युगेऽधिकारे विरिये पधाने चान्तिके धुरो ॥ १००४ ॥

---

1. व्ययम्भवे—सी० ।

*. छन्दोभङ्गो ।

2. माहिय—ना० ।

3. अञ्ञत्थीरो० (?) ।

4. रक्खणे ।

5. तिसु (?) ।

असित	काळके[1] च असिते तीसु लवित्ते असितो पुमे।
पवारणा	पवारणा पटिक्खेपे, कमिताऽऽवेदनाय च ॥ १००५ ॥
इन्दखील	उम्मारे एसिका थम्भे इन्दखीलो मतोऽथ च।
पोत्थक	पोत्थकं मकचिवत्थे गन्थे लेप्यादिकम्पनि ॥ १००६ ॥
गच्छ	गच्छ साल्यादिके वुत्ता गच्छो पुब्बवति[2] तिसु।
पाणि	पाणि हत्थे च सत्ते भू सण्हकारिणियं[3] मतो ॥ १००७ ॥
पीत	तिसु पीतं हलिद्दाभे हट्ठे च पायिते सिया।
ब्यूह	ब्यूहोऽनिबद्धरच्छायं[4] बलन्यासे गणे मतो ॥ १००७ ॥
राग	लोहितादिम्हि लोहे च रागो च रञ्जने मतो।
पदर	पदरो फलके भङ्गे पवुद्धदरियं पि च ॥ १००९ ॥
सिंघाटक	सिंघाटक[5] कसेरुस्स फले मग्गसमागमे।
एला	बहुलायं च खेळम्हि एळा दोसेळमीरितं ॥ १०१० ॥
आधार	आधारो चाधिकरणे पत्ताधारे लवालके।
कार	कारोऽग्गभेदे सक्कारे सो पुमे बन्धनालये ॥ १०११ ॥
करका	करका मेघपासाणे, करको कुण्डिकाय च।
पत्ति	पापने च पदातिस्मिं गमने पत्ति नारियं ॥ १०१२ ॥
छिद्द, रन्ध, विवर	छिद्द रन्धं च विवर सुसिरे दूसनम्हि च।
मुत्ता	मुत्ता तु मुत्तके मुत्ता पस्सावे मुञ्चिते तिसु ॥ १०१३ ॥
वारण	निसेधे वारणं हत्थीलिङ्गहत्थीसु वारणो।
दान	दानं चागे मदे सुद्धे खण्डने लवने खये ॥ १०१४ ॥
निब्बुति	मनोतोसे च निब्बाणेऽत्थगमे निब्बुतीत्थियं।
नेगम	नेगमो निगमुब्भूते[6] तथा पण्योपजीविनि ॥ १०१५ ॥
पलास	हरितस्मिं च पण्णे च पलासो किंसुकद्दुमे।[7]
पकास	पकासो पाकटे तीसु आलोकस्मिं पुमे मतो ॥ १०१६ ॥
पक्क	पक्कं फलम्हि तं नासुम्मुखे परिणते तिसु।
पिण्ड	पिण्डो आजीवने देहे पिण्डने गोळके मतो ॥ १०१७ ॥

1. काले—सी०। 3. पुब्बवधि—सी०।
2. सण्हकरणियं—सी०। 4. अनिबद्धरच्छायं—सी०।
5. सिंघाटकं—ना०। 6. निगमुब्भुते—ना०। 7. किंसुकदुमे—ना०।

वट्ट	वट्टो परिब्बये कम्मादिके तो वट्टं तिसु ।
पटिहार	पच्चाहारे पटिहारो द्वारे च द्वारपालके[1] ॥ १०१८ ॥
भीरु	नारियं भीरु कथिता भीरुके सा तिलिङ्गिका ।
विकट	विकट गूथमुत्तादो विकटो विकते तिसु ॥ १०१९ ॥
वाम	वामं सब्यम्हि तं चारु विपरीतेसु तीस्वथ ।
लक्ख	सङ्खाभेदे सरब्ये च चिण्हे[2] लक्खमुच्चते ॥ १०२० ॥
सेनी	सेनीत्थी समसिप्पीनं गणे चावलियं पि च ।
चुण्ण	सधाय धूलिया चुण्णो, चुण्णं च वासचुण्णके ॥ १०२१ ॥
जेय्य	जेतब्बेऽतिप्पसत्थेऽतिवुड्ढे जेय्य तिसूदितं ।
मथित	तक्के तु मथित होतयालोलिते मथितो तिसु ॥ १०२२ ।
अब्भुत	अब्भुतोऽच्छरिये तीसु पणे चेवाब्भुतो पुमे ।
मेचक	मेचको पुच्छमूलम्हि कण्हेऽपि मेचको तिसु ॥ १०२३ ॥
वसवत्ति	वसवत्ति पुमे मारे वसवत्तापके तिसु ।
असुचि	सम्भवे चासुचि पुमे अमेज्झे तीसु दिस्सति ॥ १०२४ ।
अच्छ	अच्छो इक्के पुमे वुत्तो पसन्नम्हि तिलिङ्गिको ।
वङ्क	वलिसे सेलभेदे च वंको सो कुटिले तिसु ॥ १०२५ ॥
छव	कुणपम्हि छवो ञेय्यो लामके सो तिलिङ्गिको ।
सकल	सब्बस्मिं सकलो तीसु अद्धम्हि परिसे सिया ॥ १०२६ ॥
उत्पाद	चन्दग्गाहादिके चेवोत्पादो उप्पत्तियं पि च ।
पदोस	पदुस्सने पदोसो च कथितो संवरीमुखे ॥ १०२७ ॥
लोहित	रुधिरे लोहितं वुत्तं रत्तम्हि लोहितं तिसु ।
मुद्ध	उत्तमङ्गे पुमे मुद्धो मुद्धो मूळ्हे तिलिङ्गिको ॥ १०२८ ।
विजित	रट्ठम्हि विजित वुत्तं विजिते विजितो तिसु ।
परित्त	परित्तं तु परित्ताणे परित्तो तीसु अप्पके ॥ १०२९ ॥
कुम्भण्ड	कुम्भण्डो देवभेदे च दिस्सति वल्लिजातियं ।
पाद	चतुत्थंसे पदे पादो पच्चन्तसेलरंसिसु ॥ १०३० ॥

1. द्वारपाळके—सी० ।
2. चिह्णे—सी० ।

वङ्क — वङ्को रोगन्तरे वङ्कदेसे पुभ[1] वङ्कम्हि च ।
कुट्टि — कम्मारभण्डभेदे च खटक कुट्टि च द्विसु ॥ १०३१ ॥
अम्मण — अम्मणं दोनियं चेकादसदोणप्पमाणके ।
अधिट्ठान — अधिट्ठितियमाधारे ठानेऽधिट्ठानमुच्चते ॥ १०३२ ॥
महेसी — पुमे महेसी सुगते देविय नारियं मता ।
उपसग्ग — उपद्दवे उपसग्गो दिस्सति पादिकेऽपि च ॥ १०३३ ॥
वक्क — वक्को कोट्ठासभेदस्मि वक्को वग्गे तिसुच्चते ।
विज्ज — विज्जा वेदे च सिप्पे च तिविज्जादो च बुद्धियं ॥ १०३४ ॥
एकग्ग — समाधिस्मि पुमे एकग्गोऽनाकुले वाच्चलिङ्गिको ।
पज्ज — पज्ज सिलोके पज्जो द्वे[2] पज्जो पादहिते तिसु ॥ १०३५ ॥
कतक — कतको रुक्खभेदस्मि कतको कित्तिमे तिसु ।
अस्सव — विधेय्ये अस्सवो तीसु पुब्बम्हि पुरिसे सिया ॥ १०३६ ॥
खेम — कल्याणे कथितं खेमं तीसु लद्धत्थरक्खणे ।
पयोजन — अथो नियोजने वुत्तं कारियेऽपि पयोजनं ॥ १०३७ ॥
अस्सत्थ — अस्सत्थो तीसु अस्सासपत्ते बोधिद्दुमे पुमे ।
लुद्द — तीसु लुद्दो कुरूरे च नेसादम्हि पुमे सिया ॥ १०३८ ॥
विलग्ग — विलग्गो तीसु लग्गस्मि पुमे मज्झम्हि दिस्सति ।
अड्ढ — अड्ढो त्वनित्थियं भागे धनिस्मि वाच्चलिंगिको ॥ १०३९ ॥
कट्ठ — कट्ठं दारुम्हि त किच्छे गहणे कसिते तिसु ।
अज्झत्त — ससन्ताने च विसये गोचरेऽज्झत्तमुच्चते ॥ १०४० ॥
लोक सिखी — भुवने च जने लोको मोरे त्वग्गिम्हि सो सिखी ।
सिलोक, धव — सिलोको तु यसे वज्जे रुक्खे तु सामिके धवो ॥ १०४१ ॥
निग्रोध, धंक — वटब्यामेसु निग्रोधो धंको तु वायसे बके ।
वार, पयोधर — वारो त्ववसराहेसु कुचे त्वब्भे पयोधरो ॥ १०४२ ॥
अंक, रस्मि — उच्छंगे लक्खणे चाङ्को रस्मित्वी जुतिरज्जुसु ।
आलोक, बुद्ध — दिट्ठोभासेसु आलोको, बुद्धो तु पण्डिते जिने ॥ १०४३ ॥

---

1 पुभ (?) ।
2. द्वे—सी० ।

भानु, दण्ड — सुरासुसु पुमे भानु, दण्डो तु मुग्गरे दमे ।
अनिमिस, पत्थ — देवमच्छेस्वनिमिसो, पत्थो तु मानसानुसु[1] ॥ १०४४ ॥
आतंक, मातंग — आतङ्को रोगतापेसु, मातङ्गो सपचे गजे ।
मिग, कोसिय — मिगो पसु कुरंगेसु, उलूकिन्देसु कोसियो ॥ १०४५ ॥
विग्गह, पुरिस — विग्गहो कलहे काये, पुरिसो माणवत्तसु ।
दायाद, सीस — दायादो बन्धवे पुत्ते, सिरे सीसं ति पुम्हि च ॥ १०४६ ॥
कर, द्विज — बलिहत्थासु करो, दन्ते विप्पेण्डजे दिजो ।
बत्त, कण — बत्त पञ्जाननाचारे, धञ्ञङ्गे सुखुमे कणो ॥ १०४७ ॥
थम्भ, सूप — थम्भो थूणा[2] जलत्तेसु[3] सूपो कुम्मासव्यञ्जने ।
गण्ड, अग्घ — गण्डो फोटे कपोलम्हि, अग्घो मूले च पूजने ॥ १०४८ ॥
पकार, सकुन्त — पकारो तुल्यभेदेसु, सकुन्तो भासपक्खिसु ।
विधि, सायक — भाग्ये[4] विधि विधाने च सरे खग्गे च सायको ॥ १०४९ ॥
सारङ्ग, सत्ति — सारङ्गो चातके एणे सत्ती तु सरपक्खिसु ।
पाक, गण — सेदे पाको विपाकेऽथ भिक्खुभेदे चये गणो ॥ १०५० ॥
रासि सिन्धव — रासि पुञ्जे च मेसादो अस्से लोणे च सिन्धवो ।
पलय, पूग — संवट्टे पलयो नासे, पूगो कमुकरासिसु ॥ १०५१ ॥
सुधा, अभिख्या — अमते तु सुधा लेपे, अभिख्या नामरंसिसु ।
सत्थि, मही — सत्थि सामत्थिये सत्थे, मही नज्जन्तरे भुवि ॥ १०५२ ॥
उपलद्धि, पवेणि — ञाणे लाभे उपलद्धि, पवेणि कूथवेणिसु ।
पवत्ति, — पवत्ति वुत्ति वात्तासु वेतने भरणे भती ।
लीला, पजा — लीला क्रियाविलासेसु, सत्तो तु अराजे पजा[5] ॥ १०५३ ॥
मर्यादा, मुत्ति — आचारे चापि मरियादा, मुत्ति सत्ता समिद्धिसु ।
तन्दी, यात्रा — सोप्पे पमादे तन्दी च, यात्रा गमनवुत्तिसु ॥ १०५४ ॥
निन्दा, कङ्गु — निन्दा कुच्छापवादेसु, कङ्गु धञ्ञपियङ्गुसु ।
सन्ति, भत्ति — मोक्खे सिवे समे सन्ति, विभागे भत्ति सेवने ॥ १०५५ ॥

---

1. माघसानुसु—सी० ।
2. थुमा—मा० ।
3. जलत्तेसु—सी० ।
4. भाग्ये—सी० ।
5. सी० पोत्थके नत्थि ।

कन्ति, रति	इच्छायं जुतियं कन्ति, रञ्जने सुरते रति।
वसति, वाहिनी	गेहे वसति वासेऽथ, नदी सेनासु वाहिनी[1] ॥ १०५६ ॥
नालि, समिति	पत्थे नाले[2] च नालित्थि[3], गणे समिति सङ्गमे।
तण्हा, वत्तनी	तण्हा लोभे पिपासायं, मग्गवुत्तिसु वत्तनी । १०५७ ॥
नाभि, विञ्ञत्ति	पाण्यङ्गे नाभि चक्कन्ते, याचे विञ्ञत्ति ञापने[4]।
वित्ति, ठिति	वित्ति तोसे वेदनायं, ठाने तु जीविते ठिति ॥ १०५८ ॥
वीचि, धिति	तरङ्गे चान्तरे वीचि[5], धीरत्ते धारणे धिति।
भू, सुति	भू भूमियं च भमुके, सद्दे वेदे सवे सुति ॥ १०५९ ॥
गोत्त, पुर	गोत्त नामे च वंसेऽथ, नगरे च घरे पुर।
ओक, कुल	ओक तु निस्सये गेहे, कुलं तु गोत्तरासिसु ॥ १०६० ॥
हिरञ्ञ, पञ्ञाण	हेमे वित्ते हिरञ्ञ च, पञ्ञाण त्वङ्कबुद्धिसु।
अम्बर, गुय्ह	अथाम्बर च खे वत्थे, गुय्ह लिङ्गे रहस्यपि ॥ १०६१ ॥
तप, किब्बिस	तपो धम्मे वते चेव, पापे त्वागुम्हि किब्बिस।
रतन, वस्स	रतन मणिसेट्ठेसु, वस्स हायनवुट्ठिसु ॥ १०६२ ॥
वन, पय	वन अरञ्ञवारीसु, खीरम्हि तु जले पयो।
अक्खर, मेथुन	अक्खर लिपि मोक्खेसु, मेथुनं सङ्गमे रते ॥ १०६३ ॥
सोत, रिट्ठ	सोत कण्णे पयोवेगे, रिट्ठ पापासुभेसु च।
आगु, धज	आगु पापापराधेसु, केतुम्हि चिन्हे[6] धजो ॥ १०६४ ॥
गोपुर, मन्दिर	गोपुर द्वारमत्तेऽपि, मन्दिर नगरे घरे।
व्यत्त	वाच्चलिङ्गा परमितो, व्यत्तो तु पण्डिते फुटे ॥ १०६५ ॥
वल्लभ, थूल	वल्लभो दयितेऽज्झक्खे, जळे थूलो महत्यपि।
भीम, लोल	कुरूरे भेरव भीमो, लोलो तु लोलुपे चले ॥ १०६६ ॥
बीभच्छ, मुदु	बीभच्छो विकते भीमे, कोमलातिखिणे मुदु।
सादु, मधु	इट्ठे च मधुरे सादु, सादुम्हि च पिये मधु ॥ १०६७ ॥

---

1. वाहिणी—सी०।
2. नाळे—सी०।
3. नाळित्थि—सी०।
4. ञापणे—सी०।
5. वाचि—ना०।   6 चिन्हे—ना०।

ओदात, द्विजिव्ह	सिते तु सुद्धे ओदातो, द्विजिव्हो सूचिकाऽहिसु ।
समत्थ, समत्त	सक्के समत्थो सम्बन्धे, समत्तं निट्ठिताखिले ॥ १०६८ ॥
सुद्ध, जिघञ्ञ	सुद्धो केवलपूतेसु, जिघञ्ञोऽन्ताधमेसु च ।
पोण, इतर	पोणो पणत[1]निन्नेसु, अञ्ञनीचेसु चेतरो ॥ १०६९ ॥
सुचि, पेसल	सुचि सुद्धे सिते पूते, पेसलो दक्खचारुसु ।
अधम, अलिक	अधमो कुच्छिते ऊने, अप्पियेऽप्यलिको भवे ॥ १०७० ॥
सङ्किण्ण, भब्ब	व्यापे असुद्धे सङ्किण्णो, भब्ब योग्गे च भाविनि ।
सुखुम, बुद्ध	सुखुमो अप्पकाणुसु, बुद्धा थेरे च पण्डिते ॥ १०७१ ॥
भद्द, बहु	सुभे साधुम्हि भद्दोऽथ, त्यादो च विपुले बहु ।
धीर, वेल्लित	धीरो बुधे धितिमन्ते, वेल्लित कुटिले धुते ॥ १०७२ ॥
विसद, तरुण	विसदो व्यत्तसेतेसु, तरुणो तु युवे नवे ।
योग्ग, पिण्डित	योग्ग याने, खमे योग्गो, पिण्डित गणिते घने ॥ १०७३ ॥
अभिजात, महल्लक	बुधेऽभिजातो कुलजे, बुद्धोरूसु[2] महल्लको ।
कल्याण, हिम	कल्याण सुन्दरे चापि, हिमो तु सीतलेऽपि च ॥ १०७४ ॥
चपल, उदित	लोले तु सीघे चपलो, वुत्ते उदितमुग्गते ।
दित्त, पिट्ठ	आदित्ते गब्बिते दित्तो, पिट्ठं तु चुण्णितेऽपि च ॥ १०७५ ॥
वीत, भावित	विगते वायने वीत, भावित वड्ढितेऽपि च ।
भट्ठ, पुट्ठ	भज्जिते पतिते भट्ठो, पुट्ठो पुच्छित पोसिते ॥ १०७६ ॥
जात, पटिभाग	जातो भूते, चये जात, पटिभागो समारिसु ।
सूर, दुट्ठ	सूरो वीरे रवि[3] सूरे, दुट्ठो कुद्धे च दूसिते ॥ १०७७ ॥
दिट्ठ, वालिस	दिट्ठोऽरिम्हिक्खिते दिट्ठो, मूळ्हे पोते च वालिसो ।
खेप, नियम	निन्दायं खेपने खेपो, नियमो निच्छये वते ॥ १०७८ ॥
कुस, वय	सलाकायं कुसो दब्भे, बाल्यादो तु खये वयो ।
अवलेप, अण्डज	लेपगब्बेस्ववलेपो, अण्डजा मीनपक्खिसु ॥ १०७९ ॥
बब्बु, मन्थ	बिलाळे नकुले बब्बु, मन्थो मन्थानसत्तुसु ।
वाल, सघात	वालो केसेस्सादिलोमे, सघातो घातरासिसु ॥ १०८० ॥

1. पनत—सी० ।
2. बुद्धेरूसु—सी० ।
3. रपि—सी० ।

घोस, सूत	घोपगामे रवे घोसो, सूतो सारथिवन्दिसु ।
माल्य, वाह	माल्य तु पुप्फे तद्दामे, वाहो तु सकटे हये ॥ १०८१ ॥
अपचय, काल	खयेच्चने चाऽपचयो, कालो समयमच्चुसु ।
तारक, सीमा	भे तारका नेत्तमज्झे, सीमाऽवधिथुतीसु च ॥ १०८२ ॥
आभोग, आलि	आभोगो पुण्णतावज्जेस्वालित्थी सखि सेतुसु ।
दळ्ह, लता	सत्ते थूले तीसु दळ्हो, लता साखाय वल्लिय ॥ १०८३ ॥
मुत्ति, काय	मुत्तित्थी मोचने मोक्खे, कायो तु देहरासिसु ।
पुथुज्जन, भत्ता	नीचे पुथुज्जनो मूळ्हे, भत्ता सामिनि धारके ॥ १०८४ ॥
सिखण्ड, पुग्गल	सिखापिञ्जेसु सिखण्डो[1], सत्ते त्वत्तनि पुग्गलो ।
सम्बाध, पराभव	सम्बाधो सङ्कटे गुय्हे, नासे खेपे पराभवो ॥ १०८५ ॥
वच्च, जुति	वच्चो रूपे करीसेऽथ, जुतित्थी कन्तिरंसिसु ।
लब्भ, दल	लब्भ युत्ते च लद्धब्बे खण्डे पण्णे दल मतं ॥ १०८६ ॥
सल्ल, धावन	सल्ल कण्डे सलाकायं, सुचित्ते धावन गते ।
विब्भम, मोह	भन्तत्ते विब्भमा भावे, मोह ऽविज्जाय मुच्छने ॥ १०८७ ॥
सेद, गुळ	सेदो घम्मजले पाके, गोळे उच्छुमये गुळो ।
सखा, विभु	मित्ते सहाये च सखा, विभु निच्चप्पभूसु सो ॥ १०८८ ॥
नेत्तिस, असु	खग्गे कुरूरे नेत्तिसो, परस्मि चात्र तीस्वसु[2] ।
कलङ्क, जनपद	कलङ्कोऽङ्कापवादेसु, देसे जनपदो जने ॥ १०८९ ॥
गाथा, वसो	पज्जे गाथा वचीभेदे, वसो त्वन्वयवेणुसु ।
यान, तल	यान रथादो गमने, सरूपस्मिमधोतल ॥ १०९० ॥
मज्झ, पुप्फ	मज्झो विलग्गो वेमज्झे, पुप्फ तु कुसुमोतुसु ।
सील, पुङ्गव	सील सभावे सुब्बते, पुङ्गवो उसभे वरे ॥ १०९१ ॥
अण्ड, कुहर	कोसे खगादिवीजेऽण्ड, कुहर गब्भरे विले ।
खग्ग, कदम्ब	नेत्तिसे गण्डके खग्गो, कदम्बो तु दुमे चये ॥ १०९२ ॥
रोहिणी, वरङ्ग	भे धेनुयं रोहिणीत्थी, वरङ्ग योनिये सिरे ।
साप, पङ्क	अक्कोसे सपथे सापो, पङ्क पापे च कद्दमे ॥ १०९३ ॥

1. सीखण्डो (?) ।
2. असू (?) ।

भोगि, इस्सर	भोगवत्युरगे भोगिस्सरो तु सिवसामिसु ।
विरिय, तेज	बले पभावे विरियो, तेजो तेसु च दित्तियं ॥ १०६४ ॥
धारा, वान	धारा सन्तति खग्गङ्गे, वान तण्हाय सिब्बने ।
खत्ता, वेदना	खत्ता सूते पटिहारे, वित्ति पीळासु वेदना ॥ १०६५ ॥
मति, रण	धियं मतिच्छापञ्ञासु, पापे युद्धे रवे रणो ।
लव, भुस	लवो तु विन्दुच्छेदेसु, पलापेऽतिसये भुस ॥ १०६६ ॥
बाधा, मातिका	बाधा दुक्खे निसेधे च, मूलपादे[1] पि मातिका ।
स्नेह, आलय	स्नेहो तेलेऽधिकप्पेमे, घरापेक्खासु आलयो ॥ १०६७ ॥
केतन, भूमित्थिय	केतुस्मि केतन गेहे, ठाने भूमित्थिय भुवि ।
लेख, भगवा	लेखो लेख्ये राजि लेखा, पुज्जे तु भगवा जिने ॥ १०६८ ॥
गद, आसन	गदा सत्थे, गदो रोगे, निसज्जा पीठेस्वासन[2] ।
तथागत, समुस्सय	तथागतो जिने सत्ते, चये देहे समुस्सयो ॥ १०९९ ॥
बिल, वज्ज	बिल कोट्ठासछिद्देसु, वज्ज दोसे च भेरियं ।
अद्धान, सेतु	काले दीघञ्जसेऽद्धान, आलियं सेतु कारणे ॥ ११०० ॥
ओकास, सभा	ओकासो कारणे देसे, सभा गेहे च संसदे ।
यूप, अयन	यूपो थम्भे च पासादे, थाऽयन गमने पदे ॥ ११०१ ॥
अक्क, अस्स	अक्क रुक्खन्तरे सूरे, अस्सो कोणे हयेऽप्यथ ।
अस, अच्चि	असो खन्धे च कोट्ठासे, जालंसुस्वच्चि नो पुमे ॥ ११०२ ॥
अभाव, अन्न	नासासत्तेस्वभावोऽथ, अन्नमोदनभुत्तिसु ।
जीव, घास	जीव पाणे जने जीवो, घासो त्वन्ने च भक्खने ॥ ११०३ ॥
अच्छादन, निकाय	छदनेऽच्छादन वत्थे, निकायो गेहरासिसु ।
आमिस, दिक्खा	अन्नादो आमिस मंसे, दिक्खा तु यजनेऽच्चने ॥ ११०४ ॥
कारिका, केतु	क्रियायं कारिका पज्जे, केतु तु चिह्ने[3] धजे ।
कुसुम, कवि	कुसुम थीरजे पुप्फे, वानरे तु बुधे कवि ॥ ११०५ ॥
ओट्ठ, लुद्द	अधरे खरभे ओट्ठो, लुद्दो तु लुद्दकेऽपि च ।
कलुस, कलि	कलुस त्वाविले पापे, पापे कलि पराजये ॥ ११०६ ॥

---

1. मूलपदे—ना० ।
2. पीठेसु आसन (?) ।
3. चिह्णे—सी० ।

कन्तार, चर   कन्तारो वनदुग्गेसु चरो, चारम्हि चञ्चले ।
गाम, चम्म   जनावासे गणे गामो, चम्मं तु फलके तचे ॥ ११०७ ॥
आमोद, चारु   आमोदो हासगन्धेसु, चारु तु कनकेऽपि च ।
भवन, छल   सत्तायं भवनं गेहे, लेसे तु खलिते छल ॥ ११०८ ॥

वेर, तच   वेर पापे च पटिघे, तचो चम्मनि वक्कले ।
आरोह, नेत्त   उच्चेऽधिरोहे आरोहो, नेत्त वत्थन्तराक्खिसु ॥ ११०९ ॥
द्वार, मत   पटिहारे मुखे द्वार, पेते ञाते मतो तिसु ।
मास, नग्ग   मासोऽपरन्नकालेसु, नग्गो त्वचेळके[1] ऽपि च ॥ १११० ॥
पटिघ, पसु   दोसे घाते च पटिघो, मिगादो छकले पसु ।
नाम, दर   अप्पे चाव्हये नाम, दरो दरथभीतिसु ॥ ११११ ॥
भिक्खा, दर   याचने भोजने भिक्खा, भारे त्वतिसये भरो ।
भुजा, अब्भ   दन्तिब्रन्दजायासु भुजा, मेघे त्वब्भ विहायसे ॥ १११२ ॥

मोदक, मणि   मोदको खज्जभेदेऽपि, मणिके रतने मणि ।
मलय, लक्खण   सेलारामेसु मलयो, सभावङ्केसु लक्खणं ॥ १११३ ॥
गवि, सिर   गवि सप्पिम्हि होतब्बे, सिरो सेट्ठे च मुद्धनि ।
विवेक, सिखरी   विचारेऽपि विवेकोऽथ, सिखरी पब्बते दुमे ॥ १११४ ॥
वेग, सङ्कु   वेगो जवे पवाहे च, सङ्कु तु खिलहेतुसु ।
बिन्दु, विराह   निग्गहीते कणे बिन्दु, वराहो सूकरे गजे ॥ १११५ ॥
अपाङ्ग, सिद्धत्थ   नेत्तन्ते चित्ताकेऽपाङ्ग, सिद्धत्थो सासपे जिने ।
हार, खारक   हारो मुत्ता गुणे गाहे, खारको मुकुले रसे ॥ १११६ ॥

अच्चय, अग   अच्चयोऽतिक्कमे दोसे, सेलरुक्खेस्वगो नगो ।
मत्त, अपचिति   स्वप्पेऽवधारणे मत्त, अपचित्यच्चने खये ॥ १११७ ॥
ओतार, पिता   छिद्दावतरणेस्वो तारो[2], ब्रह्मे चजनके पिता ।
पितामह   पितामहोऽय्यके ब्रह्मे, पोतो नावाय बालके ॥ १११८ ॥
सोण, दिव   रुक्खे वण्णे सुणे सोणो, सग्गे तु गगने दिवो ।
वास, चुल्ल   वत्थे गन्धे घरे वासो, चुल्लो खुद्दे च उद्धने ॥ १११९ ॥

1 त्वचेलकेसी० ।
2 छिद्दावतारणेसी० ।

कण्ण, माला	कण्णो कोणे च सवणे, माला पुप्फे च पन्तियं ।
भाग कुट्ठ	भागो भाग्येकदेसेसु, कुट्ठ रोगेऽजपालके ॥ ११२० ॥
सेय्या, भम	सेय्या सेनासने सेने, चन्दभण्डिम्हि च भमो ।
निपात, असु	वत्थादिलोमेऽप्यंसुकरे, निपातो पतनेऽव्यये ॥ ११२१ ॥
विप, सत्तु	साखायं बिटपो थम्भे, सत्तु खज्जन्तरे दिसे ।
सामिक, पट्ठान	सामिको पतिअरियेसु, पट्ठान गतिहेतुसु ॥ ११२२ ॥
रङ्ग, पान	रागे रङ्गो नच्चट्ठाने, पान पेय्ये च पीतिय ।
उद्धार, एळक	इणुक्खेपेसु उद्धारो, उम्मारे एळको अजे ॥ ११२३ ॥
पहार, सरद	पहारो पोथने यामे, सरदो हायनोतुसु ।
तुम्ब, पलाप	कुण्डिकायाळ्हके तुम्बो, पलापो तु भुसम्हि च ॥ ११२४ ॥
कासु, उपनिसा	मता वाटे चये कासु, पनिसा कारणे रहे ।
कास, दोस	कासो पोटकिले रोगे, दासो कोत्रे गुणेतरे ॥ ११२५ ॥
अट्ट, दव	युत्त्यट्टालट्टितेस्वट्टो, कीळायं कानने दवो ।
उप्पतन, उय्यान	उप्पत्तिय चोप्पतन, उय्यान गमने वने ॥ ११२६ ॥
वोकार, पाभत	वोकारो लामके खन्धे, मूलो पादासु पाभत ।
दसा, कारण	दसाऽवत्था पटन्तेसु, कारण घातहेतुसु ॥ ११२७ ॥
मद, घटा	हत्थिदाने मदो गब्बे, घटा घटनरासिसु ।
उपहार, चय	उपहारोऽभिहारेऽपि, चयो बन्धनरासिसु ॥ ११२८ ॥
गन्ध, चाग	गन्धो थोके घायनीये, चागो तु दानहानिसु ।
पीति, गीवा	पाने पमोदे पीतित्थी, इणे गीवा गलेऽपि च ॥ ११२९ ॥
पतिट्ठा, साहस	पतिट्ठा निस्सये ठाने, वलक्कारे पि साहस ।
भङ्ग, छत्त	भङ्गो भेदे, पटे भङ्ग, छत्ता तु छवके पि च ॥ ११३० ॥
भूरि, मदन	ञाणे भुवि च भूरित्थी, अनङ्गे मदनो दुमे ।
माता, वेठन	पमातरि पि माता, थ वेठुण्हीसेसु वेठन ॥ ११३१ ॥
मारिस, मोक्ख	मारिसो तद्धुलीयेऽय्ये, मोक्खे निब्बानमुत्तिसु ।
इन्द, आलम्बन	इन्दोऽधिपतिसक्केस्वारम्मण, हेतु गोचरे ॥ ११३२ ॥
सठान, वपु	अङ्के सण्ठाणमाकारे, वप्पे वप्पो तटेऽपि च ।
सम्मुत्ति, अक्खत	सम्मुत्यानुञ्ञा वोहारेस्वथ, लाजासु चऽक्खतं ॥ ११३३ ॥

सत्र, सोम	सत्रं यागे[1] सदा दाने, सोमे तु ओसधिन्दुसु[2] ।
सङ्घाट	सङ्घाटो युग गेहङ्गे, खारो ऊसे च भस्मनि ॥ ११३४ ॥
आताप, ओधि	आतापो विरिये भागे, सीमाय ओधि च ॥ ११३५ ॥

अनेकत्थवग्गो निट्ठितो[3]

1. सदा—सी० ।

2. औषधिन्दु—सी० ।

3 निट्ठितो ति ना० पोत्थके नत्थि ।

अव्ययवग्गो

अव्ययं

चिरं ४ — अव्ययं वुच्चते दानि, चिरस्सं तु चिरं तथा।
चिरेन चिरत्ताय,

सह ४ — सह सद्धिं समं अमा ॥ ११३६ ॥

पुन पुन ५ — पुनप्पुनं अभिण्हं चाऽसकी चाभिक्खणं मुहुं ।

वर्जन ५ — वज्जने तु विना नाना अन्तरेन रिते पुथु ॥ ११३७ ॥

अतिशय ६ — बलवं सुट्ठु चाऽतीवाऽतिसये किमुत स्व ऽति ।

वितर्क — अहो तु किं किमु दाहु विकप्पे किमुतो च द ॥ ११३८ ॥

सम्बोधन १० — अव्हाने भो अरे अम्भो हम्भो रे जे ऽङ्ग आवुसो।
हे हरे थ,

प्रश्नबोधक ६ — कथं किमु ननु कच्चि नु किं समा ॥ ११३९ ॥

वर्तमान समय ४ — अधुनेतरहीदानि सम्पति,

निश्चय ४ — अञ्ञदत्थु तु ।
तग्घेऽकंसे ससक्कं चाद्धा वामं जातुचे हवे ॥ ११४० ॥

परिच्छेदवाचक ७ — यावता तावता याव ताव कित्तावता तथा ।
एत्तावता च कीवे ति परिच्छेदत्थवाचका ॥ ११४१ ॥

उपमावाचक १६ — यथा तथा यथे चेवं यथानाम तथापि च ।
सेय्यथाप्येवमेवं वा तथेव च तथापि च ॥ ११४२ ॥
एवं पि च सेय्यथापिनाम यथरिवाऽपि च ।
पटिभागत्थे यथा च विय तथरिवापि च ॥ ११४३ ॥

स्वयं ३ — सं[1] सामं[2] च सयं[3] चाथ;

अनुमोदन ६ — आम[1] साहु[2] लहु[3] पि च।

ओपायिकं[4] पतिरूपं[5] साध्वेवं[6] सम्पटिच्छने ॥ ११४४ ॥

हेत्वर्थक ६ — यं[1] तं[2] यतो[3] ततो[4] येन[5] तेनेति[6] कारणे सियु।

अल्पमात्र २ — असाकल्ये तु चन[1] चि[2];

निरर्थकार्थक १ — निप्फले तु मुधा[1] भवे ॥ ११४५ ॥

अनियतकालार्थक २ — कदाचि[1] जातु[2] तुल्या थ,

सर्वप्रकारार्थक ४ — सब्बतो[1] च समन्ततो[2]।

परितो[3] च समन्ता[4] पि,

मिथ्या वाक्य २ — अथ मिच्छा[1] मुसा[2] भवे ॥ ११४६ ॥

निषेधार्थक ६ — निसेधे न[1] अ[2] नो[3] मा[4]ऽल[5] नहि[6];

अनियमार्थक ३ — चे[1] तु सचे[2] यदि[3]।

अनुकूलार्थक १ — आनुकूल्ये तु सद्धं[1] च,

रात्रि २ — रत्त[1] दोसो[2],

दिवा १ — दिवा[1] त्वहे ॥ ११४७ ॥

अल्पार्थक ३ — ईसं[1] किञ्चि[2] मनं[3] अप्पे,

अतर्कितार्थक १ — सहसा[1] तु अतक्किते।

अभिमुख ३ — पुरे[1]ऽग्गतो[2] तु पुरतो[3],

जन्मान्तर २ — पेच्चा[1]ऽमुत्र[2] भवन्तरे ॥ ११४८ ॥

विस्मयार्थक २ — अहो[1] हि[2] विम्हये;

मौन १ — तुण्ही[1] तु मोने,

प्रादुर्भाव २ — थाऽऽवि[1] पातु[2] च।

तत्क्षण २ — तक्खणे सज्जु[1] सपदि[2],

बलात्कार १ — बलक्कारे पसय्ह[1] च ॥ ११४९ ॥

पदपूरण ६ सुदं[1] खो[2] अस्सु[3] यग्घे[4] वे[5] हा[6]ऽऽदयो पदपूरणे ।

अन्तरालय ३ अन्तरेन[1]ऽन्तरा[2] अन्तो[3],

निश्चय २ ऽवस्सं[1] नून[2] च निच्छये ॥ ११५० ॥

सन्तोष २ आनन्दे सं[1] च दिट्ठा[2] च,

विरोधप्रकाश १ विरोधकथने ननु[1] ।

इच्छाप्रकाश १ कामप्पवेदने कच्चि[1],

अस्तु १ उसूयोपगमेऽत्थु[1] च ॥ ११५१ ॥

अवधारणार्थक १ एवा[1]वधारणे ञेय्यं,

अविपरीत २ यथत्तं[1] तु यथातथं[2] ।

अल्प १ नीचं[1] अप्पे,

प्रचुर १ महत्युच्च[1]

पूर्वाण्ह २ अथ पातो[1] पगे[2] समा ॥ ११५२ ॥

अनवरत २ निच्चे सदा[1] सनं[2];

बाहुल्य १ पायो[1] बाहुल्ये,

बाहिरं[1] बही[2] ।

बहिरर्थक ४ बहिद्धा[3] बहिरा[4] बाह्ये

शीघ्रार्थक १ सीघे तु खणिकं[1] भवे ॥ ११५३ ॥

विनाश १ अत्थं[1] अदस्सने

निन्दा १ दुट्ठु[1] निन्दाय,

प्रणाम १ वन्दने नमो[1] ।

प्रशंसा २ सम्मा[1] सुट्ठु[2] पससाय,

विद्यमान १ अथो सत्तायमत्थि[1] च ॥ ११५४ ॥

सन्ध्या १ साय साये,

अद्य १ ऽज्ज अत्राहे,

श्व २ सुवे[1] तु स्वे[2] अनागते ।

परश्व १ ततो परे परसुवे[1],

ह्य १ हिय्यो[1] तु दिवसे गते ॥ ११५५ ॥

यत्र ३ — यत्थ[1] यत्र[2] यहिं[3];

तत्र ४ — चत्थ तत्थ[1] तत्र[2] तहिं[3] तहं[4]।

ऊर्ध्वं २ — अथो उद्धं[1] च उपरि[2],

अध. २ — हेट्ठा[1] तु च अधो[2] समा ॥ ११५६ ॥

नियोग २ — चोदने इघ[1] हन्दा[2]ऽथ

दूर ३ — आरा[1] दूरा[2] च आरका[3]।

असम्मुख २ — परम्मुखा[1] तु च रहो[2],

सम्मुख ३ — सम्मुखा[1] त्वाऽवि[2] पातु[3] च ॥ ११५७ ॥

ससय ३ — ससयत्थमम्हि अप्पेव[1] अप्पेवनाम[2] नु[3] ति च।

निदर्शन ३ — निदस्सने इति[1] त्थं[2] च एवं[3],

क्लेश १ — किच्छे कथञ्चि[1] च ॥ ११५८ ॥

विषाद १ — हा[1] खेदे,

प्रत्यक्ष १ — सच्छि[1] पच्चक्खे,

ध्रुव १ — धुवं[1] थिरावधारणे।

वक्रभाव ३ — तिरो[1] तु तिरियं[2] चाथ,

कुत्स २ — कुच्छाय दुट्ठु[1] कु[2]च्चते ॥ ११५९ ॥

आशीष १ — सुवत्थि[1] आसिट्ठत्थम्हि,

निन्दा १ — निन्दाय तु धि[1] कथ्यते।

कुत्र ७ — कुहिञ्चनं[1] कुहिं[2] कुत्र[3] कुत्थ[4] कुत्थ[5] कहं[6] क्व[7] थ ॥ ११६० ॥

अत्र ५ — इहे[1] धा[2]ऽत्र[3] तु एत्था[4]ऽत्थ[5]

सर्वत्र २ — अथ सब्बत्र[1] सब्बधि[2]।

कदाचन २ — कदा[1] कुदाचन[2] चाथ,

तदा २ — तदानि[1] च तदा[2] समा ॥ ११६१ ॥

उपसग्गा

प उपसर्ग — आदिकम्मे भुसत्थे च सम्भवो तिण्ण तित्तिसु ।
नियोगिस्सरियप्पोति दानपूजाऽग्गसन्तीसु ॥ ११६२ ॥
दस्सने तप्परे सङ्गे पसंसागतिसुद्धिसु ।
हिंसा पकारऽन्तोभाववियोगावयवेसु च ॥ ११६३ ॥

परा उपसर्ग — परासद्दो परिहानिपराजयगतीसु च ।
भुसत्थे पटिलोमत्थे विक्कमाऽमसनादिसु ॥ ११६४ ॥

नि उपसर्ग — निस्सेसऽभाव संन्यास भुसत्थ मोक्खरासिसु ।
गेहादेसोपमाहीनपसादनिग्गताच्चये ॥ ११६५ ॥
दस्सनोसाननिक्खन्ताऽधोभागेस्ववधारणे ।
सामीप्ये बन्धने छेकाऽन्तोभागोऽपरीतीसु च ॥ ११६६ ॥
पातुभावे वियोगे च निसेधादो नि दिस्सति ।

नी उपसर्ग — अथो नीहरणे चेवाऽऽवरणादो च नी सिया ॥ ११६७ ॥

उ उपसर्ग — उद्धङ्गमवियोगत्तलाभतित्तिसमिद्धिसु ।
पातुभावऽच्चयाभाव पबलत्तो पकासने ।
दक्खग्गनासु कथने सत्तिमोक्खादिके उ च ॥ ११६८ ॥

दु उपसर्ग — दु कुच्छितेऽमदत्थेसु विरूपत्तो ऽप्यसोभने ।
सियाऽभावाऽसमिद्धीसु किच्छे चानन्दनादिके ॥ ११६९ ॥

स उपसर्ग — स समोधानसङ्खेप समन्तत्थसमिद्धिसु ।
सम्मा भुस सहाऽप्पत्थाभिमुखत्थेसु सङ्गते ।
पिधाने पभवे पूजापुनप्पुनक्रियादिसु ॥ ११७० ॥

वि उपसर्ग — विविधातिसयाभावे भुमत्थिस्सरियाच्चये ।
वियोगे कलहे पातुभावे भासे च कुच्छने ॥ ११७१ ॥
दूरानभिमुखत्थेसु मोहानवट्ठितीसु च ।
पधानदक्खता खेदे सहत्थादो वि दिस्सति ॥ ११७२ ॥

अव उपसर्ग — वियोगे जानने चाधो भावाऽनिच्छयसुद्धिसु ।
ईसदत्थे परिभवे देसब्यापनहानिसु ।
वचोक्रियाय थेय्ये च आणप्पत्तादिके अव ॥ ११७३ ॥

अनु उपसर्ग
पच्छा भुसत्थ सादिस्साऽनुपच्छिन्नाऽनुवत्तिसु ।
हीने च ततियत्थाधोभावेस्वनुगते हिते ।
देसे लक्खणवीच्छेत्थम्भूतभागादिके अनु ॥ ११७४ ॥

परि उपसर्ग
समन्तत्थे परिच्छेदे पूजालिङ्गनवज्जने ।
दोसक्खाने निवासनाऽवञ्ञाऽऽधारेसु भोजने ।
सोक व्यापन तत्त्वेसु लक्खणादो सिया परि ॥ ११७५ ॥

अभि उपसर्ग
आभिमुख्यविसिट्ठुद्धकम्मसारुप्पवुद्धिसु ।
पूजाऽधिककुलासच्चलक्खणादिम्हि चाप्यभि ॥ ११७६ ॥

अधि उपसर्ग
अधिकिस्सिरपाठाधिट्ठानपापुणनेस्वधि ।
निच्छये चोपरित्ताऽधि भवने च विसेसने ॥ ११७७ ॥

पति उपसर्ग
पतिदाननिसेधेसु वामाऽऽदाननिवत्तिसु ।
सादिस्से पटिनिधिम्हि आभिमुख्यगतीसु च ॥ ११७८ ॥
पतिबोधे पतिगते तथा पुन क्रियाय च ।
सम्भावने पटिच्छत्थे पतीति लक्खणादिके ।

सु उपसर्ग
सु सोभने सुखे सम्मा भुस सुट्ठु समिद्धिसु ॥ ११७९ ॥

आ उपसर्ग
आभिमुख्यसमीपादिकम्मालिङ्गनपत्तिसु ।
मरियादुद्धकम्मिच्छाबन्धनाभिविधीसु आ ॥ ११८० ॥
निवासाऽऽव्हानगहणकिच्छेऽसत्थनिवत्तिसु ।
अप्पसादाऽसिसरणपतिट्ठाविम्हयादिसु ॥ ११८१ ॥

अति उपसर्ग
अन्तोभावभुसत्थाऽतिसयपूजास्वतिक्कमे ।
भूतभावे पसंसाय दळ्हत्थादो सिया अति ॥ ११८२ ॥

अपि उपसर्ग
सम्भावने च गरहापेक्खासु च समुच्चये ।
पञ्हे सञ्चरणे चेव आसंसत्थे अपीरितं ॥ ११८३ ॥

अप उपसर्ग
निद्देसे वज्जने पूजाऽपगतेऽवारणे पि च ।
पदुस्सने च गरहा चोरिकादो सिया अप ॥ ११८४ ॥

उप उपसर्ग
समीपपूजासादिस्से दोसक्खानोपपत्तिसु ।
भुसत्थापगमाधिक्यपुब्बकम्मनिवत्तिसु ।
गय्हाकारोऽपरिरोसु उप इत्यनसनादिके ॥ ११८५ ॥

'एव उपसर्ग	एव निदस्सनाकारोपमासु सम्पहंसने । उपदेसे च बचनपटिग्गाहेऽवधारणे । गरहायेदमत्थे च परिमाणे च पुच्छने ॥ ११८६ ॥

निपाता

च निपात	समुच्चये समाहारेऽन्वाचये चेतरीतरे । पदपूरणमत्ते च चसद्दोऽवधारणे ॥ ११८७ ॥
इति	इति हेतु पकारेसु आदिम्हि चावधारणे । निदस्सने पदत्थस्स विपल्लासे समापने ॥ ११८८ ॥
वा	समुच्चये चोपमायं संसये पदपूरणे । ववत्थितविभासायं वा वसग्गे विकप्पने ॥ ११८९ ॥
अल	भूसणे वारणे चाऽल वुच्चते परियत्तियं ।
अथो, अथ	अथोऽथानन्तरारम्भपञ्हेसु पदपूरणे ॥ ११९० ॥
अपिनाम	पसंसा गरहा सञ्ञा स्वीकारादोऽपिनाम थ ।
नून	निच्छये चानुमानस्मिं भिया नून वितक्कने ॥ ११९१ ॥
ननु	पुच्छाऽवधारणानुञ्ञासान्त्वनाऽऽलपने ननु ।
वत	वतेकंस दया हास खेदालपन विम्हये ॥ ११९२ ॥
हन्द	वाक्यारम्भविसादेसु हन्द हासोऽनुकम्पने ।
याव, ताव	यावत्तु ताव साकल्यमाणावध्यवधारणे । ११९३ ॥
पुरत्थ	पाचि पुरागतोऽत्थेसु पुरत्थो पठमेऽप्यथ ।
पुरा	पबन्धे च चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ ११९४ ॥
खलु	निसेधे वाक्यालङ्काराऽवधारणपसिद्धिसु ।
अभितो	खल्वामन्ने तु अभितोऽभिमुखोभयतो दिके ॥ ११९५ ॥
काम	काम यदचपि सद्दत्थे एकंसत्थे च दिस्सति ।
पन	अथो पन विसेसस्मिं तथेव पदपूरणे ॥ ११९६ ॥
हि	हि कारणे विसेसावधारणे पदपूरणे ।
तु	तु हेतु वज्जे तत्था थ;
कु	कु पापेऽसत्थकुच्छने ॥ ११९७ ॥

नु	नु संसये च पञ्हेऽथ,
नाना	नाना नेकत्थ वज्जने ।
किं	किं तु पुच्छा जिगुच्छाणसु;
क	क तु वारिम्हि मुद्धनि ॥ ११९८ ॥
अमा	अमा सह समीपे ऽथ;
पुन	भेदे अप्पठमे पुन ।
किर	किरानुस्सवारुचिसु,
उद	उदाप्यत्थे विकप्पने ॥ ११९९ ॥
पच्छा	पतीचि चरिमे पच्छा,
सामि	सामि त्वद्धे जिगुच्छने ।
पातु	पकासे सम्भवे पातु,
मिथ	अञ्ञोञ्ञे तु रहे मिथो ॥ १२०० ॥
हा	हा खेदे सोकदुक्खेसु,
अहह	खेदे त्वहह विम्हये ।
धि	हिंसापने धि निन्दायं,
तिरो	पिधाने तिरियं तिरो ॥ १२०१ ॥

तून त्वान तवे त्वा तु धा सो था क्खत्तु मेव च ।
तो थ त्र हिञ्चन हिं ह धि ह हि धुना रहि ॥ १२०२ ॥
दानि घो दाचन दा ज्ज थ थत्ता ज्झ ज्जू आदयो ।
समासो चाऽव्ययीभवो यादेसो चाव्यय भवे ॥ १२०३ ॥

अव्ययवग्गो निट्ठितो ।

सामञ्ञकण्डो ततियो निट्ठितो ।

❀

अभिधानप्पदीपिका समत्ता ।

कत्तुसन्दस्सनादिगाथा

सग्गकण्डो च भूकण्डो तथा सामञ्ञकण्डो ति।
कण्डत्तयान्विता एसा अभिधानप्पदीपिका ॥ १ ॥

तिदिवे महियं भुजगावसथे सकलत्थसमव्हयदीपनीयं।
इह यो कुसलो मतिमा स नरो पटु होति महामुनिनो वचने ॥ २ ॥

परक्कमभुजो नाम भूपालो गुणभूसनो।
लङ्कायमासि तेजस्सी जयी केसरिविक्कमो ॥ ३ ॥

चिरभिन्नचिरमि भिक्खुसङ्घन्निकाय-
त्तयस्मिञ्च कारेसि सम्मा समग्गे ॥
सदेहं व निच्चादरो दीघकालं,
महग्घेहि रक्खेसि यो पच्चयेहि ॥ ४ ॥

येन लङ्काविहारेहि गामारामपुरेहि च।
कित्तिया विय सङ्काधिकता खेत्तेहि वापीहि ॥ ५ ॥

यस्सासाधारणं पत्तानुग्गहं सब्बकामदं।
अहं पि गन्थकारत्तं पत्तो बिबुधगोचरं ॥ ६ ॥

कारिते तेन पासादगोपुरादिविभूसिते।
सग्गकण्डे व तत्तो यासयस्मिं पटिबिम्बिते ॥ ७ ॥

महाजेतवनाख्यम्हि विहारे साधुसम्मते।
सरोगामसमूहम्हि वसता सन्तवुत्तिना ॥ ८ ॥

सद्धम्मट्ठितिकामेन मोग्गल्लानेन धीमता।
थेरेन रचिता एसा अभिधानप्पदीपिका ॥ ९ ॥

सद्धम्मकित्तिमहाथेरविरचितो

एकक्खरकोसो

नमो बुद्धाय

एकक्खरकोसो

एकन्तसारदं सेट्ठं वन्देकन्तगुणाकरं ।
एकक्खरादिना धम्मं देसितारं जिनम्बुधिं ॥ १ ॥

विसुद्धेकरसं धम्मं, वन्देकजिनसंभवं ।
एकन्तपूजितं तेन मुनिनादिच्चबन्धुना ॥ २ ॥

एकन्तपुञ्ञखेत्तग्गं एकन्तसारसंभवं ।
एकन्तविचिनं संघं वन्देकगुणसागरं ॥ ३ ॥

संगीता वण्णिता कता गन्थन्तरादिपक्किका ।
आरूळ्हा पोत्थकं येपि गारवो गरवो च मे ॥ ४ ॥

वन्दाहं सिरसा सेट्ठे सद्धम्मवंसपालके ।
यावज्ज सोपकारे ते साधुजनममायिते ॥ ५ ॥

इच्चेकन्तविहितस्स पणामस्सानुभावतो ।
हतन्तरायो सब्बत्थ हुत्वाहं सुद्धचेतसा ॥ ६ ॥

दुब्बिञ्ञेय्यमलिताय सक्कताय निरुत्तिया ।
पोराणेकक्खरकोसे रचितं किञ्चि मत्तकं ॥ ७ ॥

पालियट्ठकथादीनं वण्णने वाचके पि सो ।
सासने गरु सेट्ठानं मत्थं साधेति सब्बसो ॥ ८ ॥

भासन्तरं ततो हित्वा पालियुत्तकतादिय ।
जिनपाठादिके सन्तं विचिन्त्येकक्खरं तथा ॥ ९ ॥

सम्पुण्णेकक्खरकोसं सुद्धसज्जनगोचरं ।
सुद्धसुमतिदातारं कुमतीधंसकं वरं ॥ १० ॥

सासने खे रविन्दुव ञाणालोककरं परं ।
विरचिस्समहं दानि सासनत्थमहेसिनो ॥ ११ ॥

निस्साय गरुवरानं मतं विसुद्धिवण्णितं ।
जिनपाठादिके साधुं ओगाहेत्वा यथाबलं ॥ १२ ॥

अ वुद्धि तब्भावसदिस निसेधञ्ञप्पके रजे।
निन्दा विरुद्ध विरह सुञ्ञे अ पदपूरणे ॥ १३ ॥
आ ईसानुस्सत्यत्थे कोधे मुदट्ट पदपूरणे।
निपातभूतो आ सद्दो भवतीति पकित्तितो ॥ १४ ॥
अभिमुखसमीपादि कम्मालिंगनपत्तिसु।
मरियादुद्धंगमिच्छा बन्धनाभिविधीसु आ ॥
निवासट्ठान गहण पेसनादो च दिस्सति ॥ १५ ॥
इ इ कामे अतिक्कमे च अज्झेसने च दिस्सति।
पवत्ते गमने पत्ते आगते च सज्झायने ॥ १६ ॥
ई ई लक्खी पेम वाक्येसु,
उ सिवे दुक्खलाभके।
उ निसेधे रोगमुत्ते च पट्ठाने संभवुग्गते ॥ १७ ॥
उद्धं गमवियोगस्स लामतित्तिसमिद्धिसु।
पातुभावब्बयाभाव पबलत्ते पकासने।
दक्खगतासु कथने सत्तिमोक्खादिकेसु च ॥ १८ ॥
ऊ, ए ऊ पुच्छायं दुस्सोधिते,
एकारो तु अजे भवे।
ओ ओ पणवेनुमत्यत्थे ब्रह्म विण्हु महिस्सरे ॥ १९ ॥
क को ब्रह्मत्तानिलग्गि मोरपुमेसु भूमियं।
क सुखे च जले सीसे को पकासे तिलिंगिको ॥ २० ॥
कि निंदा नियम पुच्छासु निप्फले सम्पटिच्छने।
सब्बनामिकपदं किं जलजे सदिसे तु किं ॥ २१ ॥
कि कि तु हिंसा विकिणेसु, कु, के सद्दे पकित्तिता।
कु के कु भूमि पाप सत्थेसु कुच्छिते अप्पके ऽब्ययं ॥ २२ ॥
ख खमिन्द्रिये सुखे सग्गे सुञ्ञाकासे च विवरे।
निग्गहीतन्तं पण्डक लिंगं ख ति पदं मतं ॥ २३ ॥
गो गो गोणे थि पुमे सेसे पुमिन्द्रिये जले करे।
सग्गे वजिरवाचायं भूम्यं आणे च सूरिये ॥ २४ ॥
गीतरी खन्धे गन्धब्बे चन्दे दुक्खे सगायने।
सूरस्सति दिसायं च गो सद्दो समुदीरितो ॥ २५

गु गे गु सद्दुग्गमे करीस उस्सग्गे, गे तु उच्चारणे।
घ घा घो घर्म्मे। सा पच्चयेसु घा किंकिणियमुच्चते ॥ २६ ॥
घो कायसहने रत्थ घायनवेदनेसु घा।
र, घु घि मत्थकिलमने घु तु सद्देभिगमने भवे ॥ २७ ॥
वुत्तेऽप्येकक्खरकोसे पोराणे इस्सत्थे निघ।
वुत्ता सन्ता पाळियट्ठ कथादीसुत्थभेदका ॥ २८ ॥
कवग्गमोलि अलिनं सेवित पादपंकजं।
किन्दातिकिन्दकिन्दस्स मुनिसेट्ठस्स सासने ॥ २९ ॥
कवग्गपच्चेकत्थानं निच्छयं सारसभवं।
सद्धाआणादयोपेता सज्जना मोदयन्तु नो ॥ ३० ॥

कवग्गो निट्ठितो

च चन्द चोर निम्मलेसु चो ततिमेसु चं मत।
कारिये कारितोत्यस्स पदिस्सति पयोगतो ॥ ३१ ॥
चि चि चये चियने धंसे पगुणुच्चिनने तथा।
चु वड्ढने चु तु वचने पदिस्सति पयोगतो ॥ ३२ ॥
च-निपात समुच्चये व्यतिरेके विकप्पत्थावधारणे।
वाक्यारम्भानुकड्ढने पदपूरे च दिस्सति।
चे निपात संसयत्थे च निपातो चे कारोति पकित्तितो ॥ ३३ ॥
छ छो पच्चये कारिये च छेदने आहु रूळिहया।
छा, छि छा तु खुदा पिपासासु छि दित्ति सित निच्छये।
छु पटिच्छन्ने छेदने च छु तित्त हीण छेदने ॥ ३४ ॥
ज, जि जो जेतरी कारिये च वेगिते ज्याभिवेजितो।
जु जये पराजये जु तु थेय्य दित्ति गतीसु च ॥ ३५ ॥
जे जे खये जेतु सामीनं दासीनामन्तणे भवे।
झ सज्झायं च झो वात्यत्थ नट्ठ गीतरिचापरे ॥ ३६ ॥
झे झे तु उज्झानडय्हने॥ आणदित्तिचितासु च।
सज्झायोपनिज्झानेसु. वेदितब्बा विभाविना ॥ ३७ ॥

ञ	ञकारो चोररवत्थ पञ्चयेष्वस्सकारिये।
ञा	ञा त्वावधारणे ञाणे सञ्ञाणे च विजानने।
	मारणे तोसने चापि निसे निसामने तथा ॥ ३८ ॥
	चक्कातिचक्कचक्किन्द चक्कराजसमंगिनो।
	चक्कसेट्ठे चवग्गत्थे निच्छयं सारसंभवं।
	सद्धाञाणादयोपेता सज्जना मोदयन्तु नो ॥ ३९ ॥

चवग्गो निट्ठितो

ट	टो खे टं तु पुथव्यंकुरकोटे पकित्तितं।
टि	टी तु पक्खन्दने रत्थ गमने तिक्खणे तथा ॥ ४० ॥
	कम्मञ्ञे च सिया दक्खे व्यसे अच्छादने पि च।
टु	टु त्वाभिपीळने धंसे विरूहे च पकित्तिता ॥ ४१ ॥
ठ	महारवे हरे सुञ्ञे चंदबिम्बे ठो सिया।
	ठाम्हि धातुम्हि च तस्स कारिये ठा पकित्तिता ॥ ४२ ॥
ठा धातु	ठा तु रुप्पज्जने ठातु ठातु पट्ठान सान्तिसु।
	खायने गत्यत्थे सेवे भवतीती पकित्तिता ॥ ४३ ॥
ड	सकरे तास सद्देसु डकारो यमुदीरितो।
डि	डी तु पविसना कास गमने वत्तते तथा ॥ ४४ ॥
	उपहासे सिया हिंसे आदाने च यथारहं।
ढ	ढक्क निग्गुणसद्देसु ढकारो समुदीरितो ॥ ४५ ॥
ढि	ढी तु मुय्यनत्थे होति जानितब्बा विभाविना।
ण	ञाणस्मिं निग्गतम्हि च णकारो समुदीरितो ॥ ४६ ॥
	तिलोकसुद्धिभूतस्य मुनि मुद्धिन्द मुद्धिनो।
	मुनिनो सासने सेय्य टादिवग्ग मुधाजनं ॥ ४७ ॥
	नानत्थनिच्छयं सारं सद्धम्मसारमेसिनो।
	पसन्नचित्ता सब्बे पि निसामयथ साधवो ॥ ४८ ॥

टवग्गो निट्ठितो

त	चोर सिंगाल वालेसु पच्चये सब्बनामिके।
ता	तकारो, ता तु धातुम्हि पच्चये सब्बनामिके। ४९ ॥

ति — ति धातुम्हि पच्चये संख्याय च पकित्तितो।
तु — तुकारो पच्चये ब्यये पवत्तति यथारहं ॥ ५० ॥
पच्चये उपयोगे च करणे संपदानिये।
सामिम्हि चाति ते सद्दो पञ्चस्वत्थेसु दिस्सति ॥ ५१ ॥
तो — पंचम्यत्थे पच्चयम्हि तोकारो समुदीरितो।
उपयोगे च तसद्दो द्वयजोति पकित्तितो ॥ ५२ ॥
ता, ति-धातु — ता तु पालनत्थे ति तु छेदनत्थे पकित्तितो।
तु-निपात — भेदावधारणे कंसे पूरणत्थे ब्ययं तु तु ॥ ५३ ॥
थ — मंगले भयताणे च गिरिम्हि पच्चयम्हि च।
चतुरवेतेसु अत्थेसु थकारो समुदीरितो ॥ ५४ ॥
था — था पच्चये पकारे चाकारे को[ा] सत्थे रपि।
थी, थु — थी त्वित्थियं थुकारो तु निब्बत्ते पच्चये रपि ॥ ५५ ॥
थ — थ पच्चये ततियत्थे पकारत्थे च दिस्सति।
थु थ, धातु — थु तु धातुम्हि थुतिम्हि थे सद्दो संघाते रपि ॥ ५६ ॥
दा — दा कलत्तम्हि धातुम्हि, दानादाने च खण्डने।
दा-धात् — समादाने हव्यदाने कुगते निद्दसुज्झने ॥ ५७ ॥
दि-दु — दी तु खये दुक्कटम्हि दु तु गतिम्हि पीळने।
दे — दे तु पालनत्थे होति वेदितब्बा विभाविना। ५८ ।
दु-उपसर्ग — दु कुच्छितीसप्पत्थेसु विरूपत्थे व्यसाभने।
सीलाभावासमिद्धीसु किच्छे चानन्दनादिके ॥ ५९ ॥
धा — बन्धने च धनेसे च धातरि धा पकित्तिता।
धी, धु, धे — धी मत्यं धु तु भारेसु धे वेसे चिन्तने सिया ॥ ६० ॥
धा-धातु — धा धारणे करभास नासारोपन सन्धिसु।
पिदहने निदाने च सद्दतुद्दिसे सिया ॥ ६१ ॥
धू धा — धू तु गति थेरीयेसु कम्पेन च निद्धमने।
पप्पोटे धंसने धोवे आतुररवने रपि।
धे, धा, धि-निपात — धे पाने धे निपातो तु गरहत्थे पकित्तितो ॥ ६२ ॥
न — नकारो सुगते बंधे सम्पुण्णे तस्स कारिये।
ना — ना पच्चये विभत्तिम्हि पुमे, नी नेतरि भवे ॥ ६३ ॥

नि नि धातुम्हि उपसग्गो पदिस्सति पयोगतो।
ननु नु थुत्यं, नो तु नाथायं नोसद्दो अहाको पन ॥ ६४ ॥
ना पच्चये उपयोगे च कारणे संपकानिये।
तथा निपातभत्तम्हि नो सद्दो संपवत्तति ॥ ६५ ॥
न नि नये नमने नासे कस्सने पवत्ते रपि।
निदस्सने नमनेपि पवत्तति यथारहं ॥ ६६ ॥
नु धा, नु निपात नू तु थुतियगत्यर्थं पञ्हे संसयेरितं।
न निपात पटिसेधो पमाणे च निपातो समुदीरितो ॥ ६७ ॥
नं-निपात नामत्थे नं ति निपातो पदिस्सति पयोगतो।
उपसर्ग निस्सेसा भावसंन्यासभूसत्थमोक्खरासिसु ॥ ६८ ॥
गेहादेसोपमाहीन पसाद निग्गतच्चये।
दस्सनोसान निक्खन्ता घोखागेस्ववधारणे ॥ ६९ ॥
समीपे बन्धने छेकान्तोभागोपरतीसु च।
पातुभावे वियोगे च निसेधादिम्हि दिस्सति।
नी अथो नीहरणे चेवावरणदो च नी सिया ॥ ७० ॥
दन्तातिदन्तिन्दविराजितस्य तादिन्दतादी गुणमण्डितस्स।
इन्दातिइन्दिन्दमुनिस्सरस्स चक्कातिचक्किन्दवरेसु सोभे ॥ ७१ ॥
मुनिन्ददन्तावरसंभवानं नोसानतादीनमेकक्खरानं।
भेदत्थदीपो जलितो मयेवं धीरक्खि निक्खन्तु तदीपसारी ॥७२॥

तवग्गो निट्ठितो

पि वातुण्हे परमत्थे पो रोगे विसे अपायके।
पा हिरि कोपीन पंकेसु पा तु वाते च पितरि ॥ ७३ ॥
पि, पु पि भत्तरि कलत्तम्हि पु करीसम्हि निरये।
पा, पि-धातु पा तु पाना वने पत्ते पूरणे पि तु तप्पने ॥ ७४ ॥
पू-धातु कन्तुण्हतम्हि, पु धातु सोधनोनल गमने।
पे पे तु गति सोसनम्हि वुड्ढियञ्च पदिस्सति ॥ ७५ ॥
प-उपसर्ग दस्सने तप्परे संगे पसंसा गतिसुखिसु।
हिंसा पकारन्तो भागे वियोगावयवेसु पो।
भुसत्थे पभवे सुद्धे पसन्ने पत्थनासिसु ॥ ७६ ॥

फ यञ्ञसाधनवालेसु तिक्खोसे फुक्कते च फो।
फा निप्फलवचने पस्स कारिये, फा तु धातुयं ॥ ७७ ॥
फि फा फालेड्ढने, फि तु उण्णाते गमने, तथा।
फु फू तु फोटे पदिस्सति तत्थ तत्थ पयोगतो ॥ ७८ ॥
ब नाग सत्थ द्वन्दे वस्स भस्सापि कारिये घटे।
बा, ब्रू बो वा तु कारिये द्विस्स ब, ब्रूधातुम्हि व्यत्तियं ॥ ७९ ॥
भ भो भिगे छन्दगणे च सम्बोधे भा तु जुतियं।
भा, भ धातु दित्तिम्हि खायने भंतारे भि तु धातुयं ॥ ८० ॥
भि भायने भू तु धातुम्हि परो भूसत्थवड्ढने।
भू पातुभावे निप्फन्ने चाभिमद्दे तुभवे रपि ॥ ८१ ॥
म परिसा पायसिवेसु विभत्तिपच्चयेसु च।
छन्दगणे अन्धकारे निग्गहीतस्य कारिये। ८२ ॥
मकारब्यञ्जने चेव मकारो समुदीरितो।
मा मा इन्दुमास धातुसु मा मातु भिग सिरिसु ॥ ८३ ॥
मानने अब्यये चाहु पटिसेधे तदाब्ययं।
म म तु मानस्स कारिये मं अम्हजन्ति सम्मतं ॥ ८४ ॥
मि मि तु धातुविभत्तीसु पच्चये हिंसने तथा।
अन्तो पक्खिपने चेव पवत्तति यथारहं। ८५ ॥
मे अम्हजो मे सद्दो ञेय्यो विञ्ञुना नयदस्सिना।
मु मु धातुयं बन्धने च जानने समन्नने रपि।
मे-धातु मे धातु पटिदाने च आदाने च यथारहं ॥ ८६ ॥

पामोक्खधातादि नरा नरिन्द मोलिद्ध पादम्बुज जेनचक्के।
मोसानपादीन खरानमत्थ नानत्थदीपो रचितो मयेव ॥ ८७ ॥
मोहन्धकारविधसुं कविसेट्ठपेय्यं सोतूनमत्थ विपुलप्पभवं सुखीरं।
आणातिआण पटिभावकरं सुचीरं धारेथतं स्वचिरतं सहितं सुधीरा ॥

अत्थभेदं जानमेतं आणचक्खु विसोधनं।
मोहखिल पटलुद्धारिं अनुयुञ्जे सदा सतो ॥ ८९ ॥

पवग्गो निट्ठितो

पंच पंचक्खरवन्त वग्गानं दस्सितो नयो।
भेदत्थो वुच्चते साधु अवग्गानं नयो सुणा ॥ ९० ॥

य — याने यातरि वायुम्हि कित्तसद्दे च थोमने ।

पच्चये आगमे यो तु एतदन्तस्सापि कारिये ॥ ९१ ॥

सब्बनामे ब्यञ्जने च छन्दगणे यथारहं ।

या — या तु धातुम्हि नादीनं कारिये सब्बनामिको ॥ ९२ ॥

यात्राय चाहु चागे च गति पापुणनेसु च ।

यु — यु तु धातुम्हि पच्चये गतियं मिस्सनम्हि च ।

यो — विभत्तियन्तु योकारो पवत्तति यथारहं ॥ ९३ ॥

र — कामानने अग्गिम्हि रो छन्दगणे पि पच्चये ।

आगमे ब्यञ्जने चेव पदिस्सति पयोगतो ॥ ९४ ॥

रा — रा तु सोण्णे धने सद्दो आदाने धातुयं पि च

रि — रि तु गति धातुयं च पवादिकारिये भमे ॥ ९५ ॥

रु, रू — रु धातुयं गतिसद्दे रू सद्दे भयपच्चये ।

रे — रे सद्दे धातुयं लग्गो विभत्तियमुदीरितं ।

रो — रोकारो पच्चये मतो पदिस्सति पयोगतो ॥ ९६ ॥

ळ — पच्चये आगमे ळो तु निग्गहीतस्स कारिये ।

रकार दकारानं च कारिये देवराजिनि ॥ ९७ ॥

छन्दगणे ब्यञ्जने च लकार मालुतेसु च ।

ला — ला धातुयं आदाने च पवत्ते गतियं रपि ॥ ९८ ॥

लि — लि च्छन्नालिंगने नासे रञ्जना लयने लु तु ।

लु — छेदने वायने चापि पवत्ति समुदीरितो ॥ ९९ ॥

व — चित्त मालुत नागेसु पच्चये ब्यञ्जने च वो ।

कारिये ओतु दन्तानं मानमाकारिये रपि

लकारिया गमेचापि पदिस्सति पयोगतो ॥ १०० ॥

वा — वा तु धातुनिपातेसु चण्डिम्हि पस्स कारिये ।

गति गंधन समेसु आदाने पवत्ते रपि ॥ १०१ ॥

समुच्चये चोपमायं संसये पदपूरणे ।

ववत्थित विभासायं वस्सग्गो च विकप्पने ॥ १०२ ॥

वि — वि तु धातुपसग्गेसु पक्खिपक्खन्दनेसु च ।

वि-धातु — संसिब्बने विनासाय पदिस्सति पयोगतो ॥ १०३ ॥

वि उपसर्ग	विविधातिसयाभावे भूसत्थीस्सरियाच्चये।
	वियोगे कलहे पातुभावे भाले च कुच्छने ॥ १०४ ॥
	दूरानभिमुखत्थेसु मोहानवद्वितीसु च।
	पधान वक्खता खेद सहत्थादो च दिस्सति ॥ १०५।
वु	वु धातुयं भिव्वुतिम्हि संवरे व तु धातुयं।
वे	तन्तवाये व्हये कंसे पदपूरे व्ययं मतं ॥ १०६ ॥
वो	पच्चये उपयोगे च करणे संपदानिये।
	सामिस्स वचने चेव तथेव पदपूरणे।
व्हे-व्हो	वे वो तु कारिये वोस्स व्हे व्हो व्यातविभत्तियं ॥ १ ७ ।
स	सह समान पसत्थ सन्ततमानं कारिये।
	पच्चये ब्यञ्जने अत्तनिये सोत्तनि बंधवे । १०८ ॥
सा	खेत्ते च रक्खसे, सा तु सोणे सत्थरि धातुय।
	आदेश सिरि विभत्ति भरियायं पकित्तितो ॥ १०९ ॥
सा-धातु	सामत्थे तनुकरणे पाके सि तु विभतियं,
सि	पच्चये धातुयं सेवे सयबन्धन छेदने ॥ ११० ॥
सी	गतियं रूहणे सी ति सद्दे पवत्तनेरपि।
सु	सु धातुयं विभतिम्हि निपातू पसग्गेसु च । १११ ॥
सु-धातु	सवनाभिसवे पाके हिंसगब्भविमोचने।
	गतिसंदन तिन्तोपचित विस्सुत योजने । ११२ ॥
	सोत विञ्ञाण तद्वारानुसार विञ्ञाणेरपि।
	नु सहत्थे च सीघत्थे सिया सुन्दरत्थे रपि ॥ ११३ ॥
सु-उपसर्ग	सोभने च सुखे सम्मा भुस सुट्ठु समिद्धिसु।
से	से त्वागमे विभत्तिम्हि धातुयं गतिय पचे ॥ ११४ ॥
सो	सो तु पच्चये नास्मान कारिये भाग तस्सत्थे।
स	स तु हितसुखे साधुजने अरियपुग्गले । ११५ ॥
	कारिये नंस्मिनं सम्हि निब्बानेति पकित्तितो।
	सं संमोधान संखेप समन्तत्थसमिद्धिसु ॥ ११६ ॥
	सम्मा भुस सहप्पत्थाभिमुखत्थेसु संगते।
	पिधाने पभवे चेव पूजायं पुन पुन क्रियं ॥ ११७ ॥

ह — हकारो पच्चये धस्स तस्सापि कारिये भवे।
निपातमत्ते ब्यञ्जने दुम्मनेसु सिवे रपि ॥ ११८ ॥

हा — विसादे भमणे हा तु हायने चजने रपि।
निपाते धातुयं खेदे सोकदुक्खमुदेरितो ॥ ११९ ॥

हि — हि पच्चये व्यये धातु विभत्ति गति वुद्धियं।
पवत्तने पतिट्ठाय हिंसने भासने रपि ॥ १२० ॥

हि-निपात — हेत्वावधारणे पदपूरणे ब्भुतकम्मनि।
विसेसदुक्खसञ्चोसु तक्कग्गे च पकित्ततो ॥ १२१ ॥

हु — हु दाने हव्यदाने तु पहोने समत्थे रपि।
पचुरे वित्थते सत्ताया दाने धातुयं पि च।

हे, ह — हे नीचामन्तणे ह तु पच्चये समुदीरितो ॥ १२२ ।

ळ, अं — ळकारो व्यंजने धातु आदाने अं तु माधवे।
बिन्दुनाम विभत्तीसु निग्गहतीस्स कारिये ॥ १२३ ॥

इति सद्धम्मकित्तिना महाथेरेन
सक्कत-भासातो परिवत्तेत्वा विरचितं
एकक्खरकोसं नाम सद्दप्पकरणं परिसमत्तं

परिशिष्ट :

विभत्त्यत्थप्पकरणं

नमो बुद्धाय

विभज्जवादिं सम्बुद्धं धम्मं सुजनसेवितं ।
संघं च वन्दित्वा कस्सं विभत्त्यत्थं सुदुल्लभं ॥ १ ॥
विज्जमानो पि सुक्कादि यथा दीपादिके सति ।
व्यत्तिमायाति कत्तादि अत्थो एवं विभत्तिया ॥ २ ॥
पठमेकादसत्थम्हि दसम्हि दुतिया भवे
ततिया सोळसत्थम्हि चतुत्थी चुद्दसीरिता ॥ ३ ॥
पञ्चमी चुद्दसत्थम्हि छट्ठी एकादसीरिता ।
सत्तम्येकादसत्थम्हि द्विसत्तसत्तासीतियं ॥ ४ ॥

—: ० :—

प्रथमा लिङ्ग हेतु कत्तु कम्म करणे सम्पदानत्थे ।
साम्यवधि भुम्मे दिसा लपने पठमा भवे ॥ ५ ॥
बुद्धो दसबलोत्यादि लिङ्गत्थो ति ततो कमा ।
यो बोधिरुक्खं रोपेति यो च पब्बजितो नरो ॥ ६ ॥
सत्थारा देसितो धम्मो थेय्यचित्तमदिन्नञ्च ।
कारको देति चिपाको सब्बो बुद्धा तु त्यादि च ॥ ७ ॥
लोभादयो इमे धम्मा बुद्धो दूरतरो भवे ।
भगवा चित्तमिस्सरो दिसा योगेन सो तदा ॥
भो राजालपने चेव पयोगानि यथारहं ॥ ८ ॥

पठमाविभत्यत्थो समत्तो

द्वितीया कम्मयोगेन कम्मप्पवचनीयेसु करणे—
च्चन्तयोगे सम्पदाने अवधी भुम्मि साम्यत्थे ।
कालत्थे चेव एतेसु अत्थेसु दुतिया मता ॥ ९ ॥

रथं करोति पुब्बेन गामं रमणीयं हितं।
पब्बज्जं अनुपब्बज्जि सचे मं नालपिस्सति ॥ १० ॥
सत्ताहं भाजनं भुञ्जि योजनं वनराजिनि।
पटिभातु मं भगवा मनुस्स मंसं विरमं ॥ ११ ॥
अगारे अज्झावसता भिक्खुसंघं च पिट्ठितो।
पुब्बण्हसमया त्यादि पयोगानि यथारहं ॥ १२ ॥

दुतियाविभत्यत्थो समत्तो

तृतीया करण कत्तु कम्मे च क्रियापवग्गलक्खणे।
कालद्धान पच्चत्ते स्ववधी हेतु निमित्तत्थे ॥ १३ ॥
सहात्थाद्यंगसम्बन्धे विसेसणादिके भुम्मे।
ततिया वाचका होन्ति सोळसत्थादिकेस्वपि ॥ १४ ॥
रुक्खं छिन्दति खग्गेन धम्मो बुद्धेन देसितो।
तिलेहि खेत्ते वपति एकाहेनेव पापुणि। १५ ॥
कालि भिन्नेन सीसेन आपेति पटिसेवके।
कालेन धम्मसवणं योजनेनाति धावति ॥ १६ ॥
अत्तना समत्यत्तान तेन मुत्तामहे भयं
धम्मेन वसति भिक्खु नागो दन्तेन हञ्ञते ॥ १७ ॥
पुत्तेन सह तुल्यो सो काणं पस्सति चक्खुना।
सुवण्णेन अभिरूपो जातिया सत्तवस्सिको
तेन खो पन समयेन पयोगानि यथारहं। १८ ॥

ततिया विभत्यत्थो समत्तो

चतुर्थी सम्पदाने ततियत्थे योगे कम्मे च आराधे।
अनुत्तानादरत्थेसु तुं तदत्थाल सामि च।
भुम्मे च दस्सनत्थे च चुद्दस चतुत्थी मता ॥ १९ ॥
भिक्खुस्स देति यो परिक्खीणस्स अन्नं पियं।
नमो ते बुद्धवीरत्थु सग्गस्स गमनेन वा ॥ २० ॥
आराधो मे राजा होति आसुणन्ति बुद्धस्स ते।
कट्ठस्स तं अहं मञ्ञे बुद्धत्थं जीवितं चजि ॥ २१ ॥

अनुकम्पाय देसेन्तु अलम्मे रतनत्तयं।
अलम्मे तेन धनेन अत्थाय मे भवं त्विम्मो ॥ २२ ॥
तुय्हञ्चस्स आविकरो दस्सनं कामता नव।
तेसु तेसु सुत्तन्तेसु युत्ति गण्हेय्य पण्डितो ॥ २३

चतुत्थी विभत्त्यत्थो समत्तो

पञ्चमी अवधि भुम्मि सम्बन्धे कम्म हेतु ततिया च।
गुणञ्चाव विचित्तत्थे मज्झे पभवरक्खणे ॥
योगत्थे कालत्थे च चतुद्दसत्थे पञ्चमी भवे। २४ ॥
पापा चित्तं निवारये यस्मा खेमं ततो भयं।
पुरिसस्मा पादा फलि सुवण्णस्मा पटिद्दवा। २५ ॥
कस्मा हेतु न मीय्यन्ति स तस्मा बन्धो नरो।
पञ्ञाय सुगतिं यन्ति इतो चतुसु योजने ॥ २६ ॥
विविनो पापका धम्मा कोसा विज्झन्ति कुञ्जरं।
हिमवता पभवन्ति काका रक्खन्ति तण्डुला ॥ २७ ॥
कीय दूरो इतो गामो इतो एक नवुति च।
पक्खिपेत्वेत्थ अञ्ञेसं ञेञ्ञं पयोगविञ्ञुना ॥ २८ ॥

पञ्चमीविभत्यत्थो समत्तो

षष्ठी सामयत्थे हेतुयो गन्थे कत्तुकम्मे च करणे।
अवध्यानादरत्थेसु निद्धारण भुम्मे पि च ॥
तदत्थेकादसत्थम्हि छट्ठी वाचका विञ्ञेय्या ॥ २९ ॥
भिक्खुस्स चीवरं किस्स हेतु गोणनधीपति।
सो धीरो पूजितो रञ्ञो पापस्स अकरणं सुखं ॥ ३० ॥
सप्पिस्स पत्तं पूरेत्वा भीतो दुक्खस्सहं सदा।
रुदतो दारकस्स स पब्बजी बुद्धमासने ॥ ३१ ॥
पञ्चकल्याण नारीनं सामा दस्सनीयतमा।
कुसला नच्चगीतस्स सुवण्णं कुण्डलस्स च ॥ ३२ ॥

छट्ठीविभत्यत्थो समत्तो

सत्तमी भुम्मि कम्मनिमित्तत्थे करणे पठमा वधी।
चतुरत्थी योगनारद निद्धारणे पि काले च॥
भावत्थेकावसत्थम्हि सत्तमी वाचका मता॥ ३३॥
गम्भीरे ओदकन्तिके अभिवादेन्ति भिक्खुसु।
दन्तेसु हञ्ञते नागो पत्ते पिण्डाय गोचरे॥ ३४॥
सुरिये उग्गते गजे उक्खन्ति कदलीसु च।
महप्फलं संघे दिन्नं रदन्तिस्मिं च दारके॥ ३५॥
पथिकेसु च धावन्तो बालो काले पमुज्जति।
भुत्तेसु आगतो चेव सत्तमी विभत्ती मता॥ ३६॥
निट्ठितो च विभत्त्यत्थो यथा सब्बे पि पाणिनो।
तथाव सम्मा संकप्पा सीघं सिज्झन्तु पट्ठिता॥ ३७॥

सत्तमा विभत्त्यत्थो समत्तो

विभत्त्यत्थपकरणं निट्ठितं